श्रीमती शिल्पी नेहा तिर्की
माननीया मंत्री, कृषि, पशुपालन एवं
सहकारिता विभाग, झारखण्ड

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
भारत सरकार

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री,
झारखण्ड

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से आर्थिक सशक्तिकरण...

सफलता की कहानी

वर्ष : 2020-21 से 2024-25

कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग

मत्स्य निदेशालय, झारखण्ड, राँची

दूरभाष : 0651 - 2440263, | Website : www.jharkhandfishries.org, | E-mail : fisheriesjharkhand@gmail.com

झलकियाँ

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से

आर्थिक सशक्तिकरण...

सफलता की कहानी

वर्ष : 2020-21 से 2024-25

कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग

मत्स्य निदेशालय, झारखण्ड, राँची

दूरभाष : 0651 - 2440263, | Website : www.jharkhandfishries.org, | E-mail : fisheriesjharkhand@gmail.com

शिल्पी नेहा तिर्की

माननीय मंत्री

कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग

झारखण्ड सरकार

संदेश

झारखंड, जहाँ खनिज संसाधनों की प्रचुरता है, मछली पालन के क्षेत्र में भी अपार संभावनाएँ समेटे हुए है, क्योंकि यहाँ प्राकृतिक जल संसाधनों की कोई कमी नहीं है। एक ऐसा राज्य जहाँ कृषि मुख्य आजीविका है और 70% से अधिक कृषक परिवार छोटे और सीमांत किसान हैं, वहाँ केवल पारंपरिक कृषि से आजीविका बनाए रखना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है।

इस परिप्रेक्ष्य में, मछली पालन एक सशक्त और कारगर विकल्प के रूप में उभरकर सामने आया है, जो आय सृजन और आजीविका सुरक्षा के नए मार्ग खोल रहा है। राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत, झारखंड ने "ब्लू रिवोल्यूशन" (नीली क्रांति) के सपने को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन को अपनाने वाले किसान आज समृद्धि और आर्थिक आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर हैं।

समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि अनुसूचित जाति, जनजातीय समुदायों और महिलाओं को इस बढ़ते हुए क्षेत्र में और अधिक संख्या में शामिल किया जाए। उनकी सक्रिय भागीदारी एक अधिक समान और जीवंत ग्रामीण अर्थव्यवस्था के निर्माण में सहायक होगी, जिससे झारखंड एक स्वस्थ और समृद्ध राज्य के रूप में उभर सकेगा।

नई तकनीकों को बढ़ावा देने और किसान-केंद्रित योजनाओं को लागू करने में राज्य सरकार के निरंतर प्रयासों से हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि झारखंड मत्स्य निदेशालय द्वारा "सक्सेस स्टोरीज़" नामक एक पत्रिका का संकलन किया गया है, जिसमें विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित मछली पालकों की प्रेरणादायक यात्राओं को प्रस्तुत किया गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन झारखंड के कृषक समुदाय के लिए प्रेरणा का एक अमूल्य स्रोत सिद्ध होगा। इन सफलताओं से प्रेरणा लेकर हमारे किसान भाई-बहन न केवल कृषि एवं सहायक क्षेत्रों में नई ऊँचाइयों को छू सकेंगे, बल्कि अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में भी सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित कर सकेंगे।

Shilpi N. Tirkey

(शिल्पी नेहा तिर्की)

अबुबक्कर सिद्दीख पी0 (भा.प्र.से.)
सचिव
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
झारखण्ड सरकार

संदेश

झारखंड एक कृषि प्रधान राज्य है, जहाँ कृषि से जुड़ी विभिन्न गतिविधियाँ राज्य के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इन्हीं गतिविधियों में मत्स्य पालन एक तीव्र गति से उभरता हुआ क्षेत्र बनकर सामने आया है, जो ग्रामीण आजीविका को सशक्त करने की दिशा में अहम भूमिका निभा रहा है।

नीली क्रांति के इस अभियान में मत्स्य मित्रों, मत्स्य बीज उत्पादकों, मत्स्य पालकों, मत्स्य बिक्रेताओं, उद्यमियों एवं विभागीय अधिकारियों के बीच बेहतर समन्वय और सहयोग की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत आधुनिक तकनीकों को अपनाने और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए गहन मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। हम सभी इन प्रयासों के सकारात्मक परिणाम देख रहे हैं।

आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि मछली उत्पादन को बढ़ाकर न केवल झारखंड को आत्मनिर्भर बनाएंगे, बल्कि देशभर में अपनी एक विशिष्ट पहचान भी स्थापित करेंगे।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि झारखंड मत्स्य निदेशालय द्वारा "सफलता की कहानी" नामक एक पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। यह एक सराहनीय पहल है। इस पत्रिका का प्रकाशन और प्रसार हमारे किसान भाइयों-बहनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा, जो यह दिखाएगा कि हमारे ही समुदाय के किसान अपने परिश्रम और लगन से नई सफलता की कहानियाँ लिख रहे हैं।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचेगी, जहाँ के किसान इन सफलताओं से प्रेरणा लेकर स्वयं भी कृषि एवं उससे संबंधित क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

(अबुबक्कर सिद्दीख पी0)

डॉ0 एच0 एन0 द्विवेदी
निदेशक मत्स्य
झारखण्ड, राँची

संदेश

झारखंड राज्य के गठन को लगभग 25 वर्ष हो चुके हैं। इस युवा और ऊर्जावान राज्य में ग्रामीण युवा, पुरुष, महिलाएँ सभी तेज़ी से मत्स्य पालन की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जिससे वे न केवल स्वरोज़गार प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि एक स्थिर और समृद्ध भविष्य भी सुनिश्चित कर रहे हैं।

राज्य गठन के समय झारखंड में मछली उत्पादन मात्र 14,000 मीट्रिक टन था। वहीं, वित्तीय वर्ष 2024–25 में यह आंकड़ा बढ़कर 3.63 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच गया है, जो कि 25 गुना से अधिक की वृद्धि है और यह राज्य के सर्वाधिक वृद्धि दर वाले क्षेत्रों में से एक है।

झारखंड की जनसंख्या 2.69 करोड़ से बढ़कर अब 4.00 करोड़ हो गई है, जिसमें से 70% से अधिक लोग मांसाहारी हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, राज्य के लोगों को पोषणयुक्त मछली उपलब्ध कराना मत्स्य विभाग की एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी बन गई है। मत्स्य पालन अब न केवल रोज़गार सृजन का एक प्रमुख साधन है, बल्कि पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने और कुपोषण से लड़ने में भी एक अहम भूमिका निभा रहा है।

हाल के वर्षों में मात्स्यिकी के क्षेत्र में केंद्र और राज्य सरकारों दोनों से आपेक्षित सहयोग मिला है। इस क्षेत्र के लिए बजट आवंटन ₹177 करोड़ तक पहुंच चुका है। राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाएँ झारखण्ड मात्स्यिकी के विकास में अहम है, जिससे लोगों को प्रत्यक्ष लाभ मिला है।

वित्तीय वर्ष 2020–21 में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के शुभारंभ के बाद से राज्य में अनेक योजनाएं क्रियान्वित की गई हैं। इनमें केज कल्चर, बायोफ्लॉक तकनीक, पुनरावर्ती जलकृषि प्रणाली (RAS), ग्रो-आउट तालाब निर्माण, मछली आहार मिल की स्थापना, सजावटी मछली पालन इकाइयां, हैचरी, मोती पालन, आधुनिक प्रयोगशालाएं आदि शामिल हैं। इन नवाचारी और वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर झारखंड ने भारत के मत्स्य क्षेत्र में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है।

राज्य को राष्ट्रीय स्तर पर भी कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। देश के विभिन्न राज्यों से गणमान्य व्यक्ति, सरकारी अधिकारी, विश्व बैंक के प्रतिनिधि तथा अन्य राज्यों के मत्स्य पालक झारखंड आकर इस सफलता को प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं।

मत्स्य मित्रों के सहयोग से विभाग को स्थानीय संसाधनों की बेहतर जानकारी मिल रही है, वहीं शिक्षित, बेरोज़गार ग्रामीण युवाओं को मत्स्य पालन और इससे संबंधित व्यवसायों में नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

विभाग की प्रमुख पहलों में मछली पालन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, बीज उत्पादन हेतु स्पॉन वितरण, जाल, मछली आहार, नाव, पिकअप वैन, स्वच्छता युक्त मछली विक्रय कियोस्क, सघन मछली पालन हेतु केज आधारित अवसंरचना आदि शामिल हैं। इन समग्र प्रयासों के कारण राज्य के अधिक से अधिक युवा मत्स्य पालन की ओर आकर्षित हो रहे हैं, जिससे झारखंड को सामाजिक और आर्थिक दोनों ही लाभ प्राप्त हो रहे हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारा विभाग "सफलता की कहानी" नामक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। यह प्रकाशन राज्य के किसानों के लिए प्रेरणा और तकनीकी मार्गदर्शन का एक महत्वपूर्ण स्रोत बनेगा। मुझे विश्वास है कि हमारे किसान इस पत्रिका से प्रेरणा लेकर मत्स्य क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगे और दूसरों के लिए प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

(डॉ0 एच0 एन0 द्विवेदी)

अनुक्रमणिका

क्रम	जिला	विषय	योजना	पृष्ठ
1	बोकारो	सुनीता कुमारी महतो की सफलता की कहानी - सुनीता कुमारी महतो	रियरिंग तालाब	1-2
2		जल में अवसर, जीवन में बदलाव - गणेश बाउरी	बायोफ्लॉक तालाब	3-4
3	चतरा	हौसले की हैचरी - शकुन्ती देवी	कार्प हैचरी	5-6
4		सरिता की सोच, समृद्धि की राह : एक महिला उद्यमी की कहानी - सरिता देवी	मछली बिक्री केन्द्र	7-8
5	देवघर	RAS तकनीक से समृद्धि तक - अनीता सिंह	आर.ए.एस.	9-10
6		प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से मिली आत्मनिर्भरता - बबन देवी	बायोफ्लॉक टैंक	11-12
7	धनबाद	फाइंडिंग नेमो- सपनों से स्वावलंबन तक - निष्ठा सिंह	रंगीन मछली यूनिट	13-14
8		छोटा कदम, बड़ी कामयाबी - देवदास धीबर	तीन पहिया वाहन	15-16
9	दुमका	मत्स्य पालन से आत्मनिर्भरता की ओर - रितेश कुमार सिंह	बायोफ्लॉक तालाब	17-18
10		बायोफ्लॉक तकनीक से आत्मनिर्भरता की मिसाल - मालती देवी	बायोफ्लॉक टैंक	19-20
11		मत्स्य पालन से आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम - सीमा पाल	बायोफ्लॉक तालाब	21-22
12		साहस से सफलता तक - विनीता कुमारी	मछली बिक्री केन्द्र	23-24
13	पूर्वी सिंहभूम	रंगीन मछलियों से रची सफलता की कहानी - दीपाली महतो	रंगीन मछली यूनिट	25-26
14	गढ़वा	अनुदान से आत्मबल तक - अफसाना खातुन	बायोफ्लॉक टैंक	27-28
15		बी.टेक से फिशटेक तक - विवेकानंद भारती	बायोफ्लॉक टैंक	29-30
16	गिरिडीह	पिंजरे में सुनहरा सपना - मोहम्मद मुमताज़	केज कल्चर	31-32
17		स्वस्थ मछलियाँ, समृद्ध किसान – नेहा की नयी राह - नेहा कुमारी वर्मा	डायग्नोस्टिक लैब	33-34
18	गोड्डा	बदलाव की लहर, शबनम जहाँ	बायोफ्लॉक टैंक	35-36
19		आत्मनिर्भरता की मिसाल बनीं सुषमा देवी, सुषमा देवी	फीड मिल	37-38
20		सूखी ज़मीन से सुनहरी मछलियों तक, मरांगमय सोरेन	रियरिंग तालाब	39-40
21	गुमला	गांव से ग्लोरी तक: मात्स्यिकी क्षेत्र में क्रांति की कहानी - ज्योति लकड़ा	फीड मिल	41-42
22		बायोफ्लॉक तालाब से सघन मछली पालन - धर्मदासी तिग्गा	बायोफ्लॉक तालाब	43-44
23		प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना से श्री संतोष बेक का सशक्तिकरण - संतोष बेक	बायोफ्लॉक तालाब	45-46
24		अनुदान से उद्यम तक: दुलारी देवी की उन्नति - दुलारी देवी	फीड मिल	47-48
25		तालाब से तरक्की तक : सफलता की नई परिभाषा - चरकी देवी, बबीता देवी, और प्रीति कुमारी	ग्रो-आउट तालाब	49-51
26		बायोफ्लॉक से बदलाव की क्रांति - दुलारूस कूजूर	बायोफ्लॉक तालाब	52-53
27	हजारीबाग	बायोफ्लॉक से व्यवसाय तक - अजित गंझू	बायोफ्लॉक तालाब	54-55
28		जल से जीवन की ओर: एक वाहन चालक से सफल मत्स्य उद्यमी तक - पिंटू कुमार यादव	केज कल्चर	56-58
29		पिंजरे में मछली, हाथ में सम्मान - खेलोचंद महतो	केज कल्चर	59-60
30	जामताड़ा	प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना से संवरता जीवन, जैनब बीबी	केज कल्चर	61-62
31		घर से जल तक, सेरून बीबी	केज कल्चर	63-64
32	खूँटी	बेतरा वाली मछली दीदी - अनिशा सांगा	दो पहिया वाहन	65-66
33		जीवन की विपरीत धार में, मत्स्य पालन बना पतवार - पुष्पा देवी	बायोफ्लॉक तालाब	67-68
34	कोडरमा	बायोफ्लॉक तालाब से समृद्धि की मिसाल- नाजनीन खातून	बायोफ्लॉक तालाब	69-70
35		सरकारी योजना से स्वावलंबन तक - प्रकाश रविदास	केज कल्चर	71-72

क्रम	जिला	विषय	योजना	पृष्ठ
36	लातेहार	दृढ़ संकल्प से बदलाव की मिसाल बने - चित्रकेतु उराँव	मछली बिक्री केन्द्र	73-74
37		सपनों को तैरने दो: सीमा देवी की सफल गाथा - सीमा देवी	आर.ए.एस.	75-76
38	लोहरदगा	प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना से नीली क्रांति - इंदु भगत	बायोफ्लॉक तालाब	77-79
39		सीमा नहीं मंजिल की जब संकल्प हो दृढ़ - सीमा तिवारी	बायोफ्लॉक तालाब	80-81
40		हौसला और प्रशिक्षण बना आशा ज्योति का मार्गदर्शन - आशा ज्योति गिरी	बायोफ्लॉक तालाब	82-84
41		मत्स्य पालन से आत्मनिर्भरता की ओर - सरिता देवी	बायोफ्लॉक तालाब	85-86
42	पाकुड़	जलीय कृषि के माध्यम से महिला सशक्तिकरण - सुप्रिया मंडल	कार्प हैचरी	87-89
43		सपने हुए साकार: पीएमएमएसवाई ने खोले द्वारा - शर्मिला टुडु	बायोफ्लॉक टैंक	90-91
44		मत्स्य पालन द्वारा जीविकोपार्जन की पहल - आशा सरकार	बायोफ्लॉक टैंक	92-93
45		सरकारी अनुदान: मत्स्य पालन में वरदान- नमिता दास	बायोफ्लॉक टैंक	94-95
46		घर की चौखट से, उद्यमीता के अवसर तक - काबेरी बालादासी	बायोफ्लॉक तालाब	96-97
47	पलामू	RAS तकनीक से बदली बिनिता की किस्मत - बिनिता पाण्डेय	आर.ए.एस.	98-99
48		बायोफ्लॉक से बदली तकदीर - शेषा देवी	बायोफ्लॉक तालाब	100-101
49		बायोफ्लॉक तकनीक द्वारा आत्मनिर्भरता का सफर - इन्देश प्रसाद	बायोफ्लॉक तालाब	102-103
50	रामगढ़	आत्मनिर्भरता की ओर सफल सफर -चाँदनी कुमारी	बायोफ्लॉक टैंक	104-105
51		केज कल्चर: सीमित संसाधन, अधिक उत्पादन - राजेश कुमार	केज कल्चर	106-107
52	राँची	फीड से फिश फार्मिंग तक, आयुष खेमका	आर.ए.एस.	108-109
53		माटी से जुड़े, तकनीक से बढ़े, निशांत कुमार	बायोफ्लॉक टैंक	110-112
54		जल में जीवंत होती रंगीन उम्मीदें- गोइंदी उरईन	रंगीन मछली यूनिट	113-114
55		मछली से मुनाफा और बीज वितरण से बदलाव तक की सफल यात्रा -विनोद तिगगा	तीन पहिया वाहन	115-117
56		केज कल्चर से बदलाव की क्रांति - कलेश नायक	केज कल्चर	118-120
57		एक सफर: संघर्ष से सफलता तक - प्रकाश लोहरा	केज कल्चर	121-123
58		मीरा की चाह: स्वरोजगार की राह- मीरा बोहरा	बायोफ्लॉक तालाब	124-125
59		विस्थापन से अवसर तक, रवींद्र नायक	केज कल्चर	126-127
60	सरायकेला	केज कल्चर संस्कृति में एक कदम आगे - रूपाली कैबर्त	केज कल्चर	128-130
61		संघर्ष से सफलता तक – एक मछुआरे की प्रेरणादायक उड़ान - गोपाल सिंह मुंडा	केज कल्चर	131-132
62	साहेबगंज	बायोफ्लॉक तकनीक द्वारा आधुनिक मत्स्य पालन की पहल - लीली हाँसदा	बायोफ्लॉक टैंक	133-135
63		हैचरी से आत्मनिर्भरता तक - गीता राय	कार्प हैचरी	136-137
64	सिमडेगा	बायोफ्लॉक तालाब. पारंपारिकता में आधुनिकता की ओर एक कदम - बिरजिनीया कीड़ो	बायोफ्लॉक तालाब	138-140
65		बायोफ्लॉक तकनीक : तालाब के बिना मछली पालन- सुशीला सोरेंग	बायोफ्लॉक टैंक	141-143
66	प. सिंहभूम	बीज से बदलाव तक -सुदर्शन बिरूआ	कार्प हैचरी	144-146
67		कम ज़मीन, बड़ा सपना: बायोफ्लॉक तकनीक से मिली नई पहचान - प्रधान मुंडा	बायोफ्लॉक टैंक	147-148
68		PMMSY की शक्ति से, शिशिर की सफलता- शिशिर सिंकु	आर.ए.एस.	149-150
69		मछली पालन में नवाचार : महिला बनी मिसाल- चन्द्रावति सिजुइ	केज कल्चर	151-152
70		मत्स्य पालन में उद्यमिता का उदय- संजय गागराई	बायोफ्लॉक टैंक	153-154

सुनीता कुमारी महतो की सफलता की कहानी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सुनीता कुमारी महतो
मोबाईल	9431178107
जिला	बोकारो
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Non- matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023 -24
अवयव	Grow-out Pond
कुल परियोजना लागत	7.00 लाख
अनुदान राशि	4.20 लाख

परिचय

यह कहानी श्रीमती सुनीता कुमारी महतो की है, जो झारखंड के बोकारो जिले के कसमार प्रखंड के बागदा गांव की रहने वाली हैं। सुनीता जी एक मेहनती और दृढ़ संकल्प वाली महिला हैं। उन्होंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की है। उनका परिवार कृषि पर निर्भर है, और वे हमेशा से अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए उत्सुक थीं।

परियोजना से पहले:

योजना का लाभ मिलने से पहले, सुनीता जी छोटे नर्सरी तालाबों में मछली पालन करती थीं। उनके पास सीमित संसाधन थे, और उत्पादन बहुत कम था। वे मछली पालन के पारंपरिक तरीकों का इस्तेमाल करती थीं, जिनमें अधिक मेहनत लगती थी और लाभ कम होता था। परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करना उनके लिए बहुत मुश्किल था। उन्हें अक्सर अपने बच्चों की शिक्षा और परिवार के स्वास्थ्य संबंधी खर्चों को पूरा करने में कठिनाई होती थी।

योजना का लाभ:

सुनीता जी ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) 2023-24 योजना के तहत लाभ प्राप्त किया। यह योजना मछली पालन को बढ़ावा देने और मत्स्य किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्हें "ग्रो-आउट-तालाब" घटक के तहत 4,20,000 रुपये की सब्सिडी मिली। इस परियोजना की कुल लागत 7,00,000 रुपये थी, जिसमें सुनीता जी का योगदान 2,80,000 रुपये था। उन्होंने इस योजना के बारे में स्थानीय कृषि विभाग के अधिकारियों से जाना और तुरंत आवेदन किया।

परियोजना के बाद:

विभाग से उचित प्रशिक्षण मिलने के बाद, सुनीता जी ने मछली पालन के वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करना शुरू किया। उन्होंने मछली पालन की नई तकनीकों, जैसे कि तालाब प्रबंधन, बीज चयन, और चारा प्रबंधन के बारे में सीखा। इससे वार्षिक उत्पादन में वृद्धि हुई। उन्होंने गुणवत्ता वाले बीज और तैयार मछली फीड का उपयोग किया। अब, वे न केवल अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं, बल्कि उन्होंने अपनी आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि की है।

परियोजना का परिणाम:

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, मछली उत्पादन 4 टन/वर्ष तक पहुंच गया। सुनीता जी का परिवार अब अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। उन्होंने एक स्थिर आय अर्जित की है और अपने जीवन स्तर में सुधार किया है। इस परियोजना से 2 लोगों को रोजगार मिला है, और इलाके में ताज़ी मछली की उपलब्धता बढ़ी है। सुनीता जी अब अपने समुदाय में एक सम्मानित व्यक्ति हैं और अन्य किसानों को भी मछली पालन में नवीनतम तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

सामाजिक-आर्थिक लाभ:

सुनीता जी ने अपने बच्चों को बेहतर स्कूलों में भेजना शुरू कर दिया है और उनके भविष्य के लिए बचत कर रही हैं। उनके बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं और शिक्षा के लिए प्रेरित हैं। परिवार के सदस्यों में स्वास्थ्य चेतना बढ़ी है। सुनीता जी पड़ोसी परिवारों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गई हैं। वह अब एक आत्मनिर्भर महिला हैं जो अपने परिवार और समुदाय के लिए एक सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। उनकी सफलता की कहानी दूसरों को भी अपने सपनों को पूरा करने और बेहतर जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, भारतीय मेजर कार्प
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	2.90 लाख
वार्षिक आय	-	4.80 लाख
शुद्ध आय	-	1.90 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	4 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

जल में अवसर, जीवन में बदलाव

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	गणेश बाउरी
मोबाईल	7033525720
जिला	बोकारो
राज्य	झारखंड
कोटि	SC
योग्यता	
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	Biofloc pond
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

झारखंड के बोकारो जिले के रहने वाले श्री गणेश बाऊरी पारंपरिक रूप से एक किसान थे और कृषि ही उनके परिवार की आजीविका का प्रमुख साधन थी। सीमित संसाधनों और अस्थिर आय के कारण आर्थिक स्थिति में असुरक्षा बनी रहती थी। इसी बीच उन्हें जिला मतसयुया कार्यालय, बोकारो के सहयोग से मत्स्य प्रशिक्षण केंद्र, राँची में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी।

परियोजना की शुरुआत

प्रशिक्षण के बाद श्री गणेश बाऊरी ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत "बायोफ्लॉक तालाब" निर्माण के लिए आवेदन किया। वर्ष 2023-24 में अनुसूचित कोटि के लाभुक अंतर्गत उनका चयन हुआ और उनके घर के पास ही बायोफ्लॉक तकनीक पर आधारित तालाब का निर्माण किया गया। बायोफलॉक तालाब की कुल परियोजना लागत 14.00 लाख रुपए थी, जिसमें उन्हें अनुदान स्वरूप 8.40 लाख रुपए की अनुदान राशि का लाभ मत्स्य विभाग की ओर से प्राप्त हुआ। अब वे इस तालाब में पंगेशियस मछली का पालन कर रहे हैं। घर के पास तालाब होने से परिवार के अन्य सदस्य भी कार्य में हाथ बँटा रहे हैं और योजना का संचालन सामूहिक रूप से हो रहा है। समय पर फीडिंग, देखभाल और निगरानी के कारण उत्पादन भी बेहतर हो रहा है।

आर्थिक लाभ

बायोफ्लॉक मत्स्य पालन तकनीक के उपयोग से श्री गणेश बाऊरी को अतिरिक्त आमदनी का साधन प्राप्त हुआ है। पारंपरिक कृषि की तुलना में अब उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हुई है। इस आय से वह अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पारिवारिक जरूरतों की पूर्ति आसानी से कर पा रहे हैं। साथ ही, सफल उत्पादन से उनके आत्मविश्वास

में भी वृद्धि हुई है, और आज वे अपने निर्णयों को लेकर अधिक आश्वस्त हैं।

अपनी कड़ी मेहनत ओर लगन से श्री गणेश बाऊरी ने पहले ही वर्ष में 4-5 टन मछली उत्पादन किया, जिससे उन्हें कुल आय 5.00 लाख की प्राप्ति हुई है। इस दौरान उनका संचालन व्यय 3.00 लाख रहा, जिससे उन्हें 2.00 लाख की शुद्ध आय प्राप्त हुई। यह लाभ उन्हें उनके नियमित कार्य के साथ-साथ अतिरिक्त आय के रूप में प्राप्त हुआ, जिससे उनके पारिवारिक जीवन में आर्थिक स्थिरता आई।

सामाजिक प्रभाव

बायोफ्लॉक तालाब का निर्माण और सफल संचालन श्री गणेश बाऊरी के लिए ही नहीं, बल्कि आसपास के ग्रामीणों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोतबन गया है। उन्होंने यह साबित किया कि सीमित संसाधनों के बावजूद यदि इच्छाशक्ति और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग किया जाए, तोसशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता संभव है। उनकी कहानी ने गाँव के अन्य युवाओं को मत्स्य पालन की ओर प्रेरित किया है, जिससे अब गाँव में मत्स्य पालन को लेकर जागरूकता बढ़ी है।

निष्कर्ष

श्री गणेश बाऊरी की सफलता इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि यदि सरकारी योजनाओं का सही उपयोग हो, तकनीकी प्रशिक्षण मिले और स्वयं में विश्वास हो, तो ग्रामीण जीवन में भी बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है। उनकी कहानी "कृषि से परे, मत्स्य पालन के ज़रिए आत्मनिर्भरता की ओर" एक प्रेरक मिसाल है, जिसे देश के अन्य हिस्सों में भी अपनाया जा सकता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	3 लाख
वार्षिक आय	-	5 लाख
शुद्ध आय	-	2 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	4-5 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

हौसले की हैचरी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	शकुन्ती देवी
मोबाईल	9470505174
जिला	चतरा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	नन-मैट्रिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	कार्प हैचरी का निर्माण
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

परिचय

श्रीमती शकुन्ती देवी, पति श्री प्रहलाद चैधरी, प्रखण्ड हण्टरगंज, जिला चतरा के एक पारम्परिक मछुआरा परिवार की नन मैट्रिक महिला है। वैसे तो इनका पूरा परिवार मत्स्य कार्यों के गतिविधियों में शामिल है, परन्तु इनकी खुद की पहचान नहीं थी, परन्तु मछुआ परिवार मे जन्मीं शकुन्ती देवी मत्स्य व्यवसाय/मात्स्यिकी गतिविधि से परिचीत थी।

इसी क्रम में उन्होने विभाग द्वारा चलायी जा रही PMMSY के बारे में जानकारी प्राप्त कर जिला मत्स्य कार्यालय,चतरा में कार्प हैचरी निर्माण योजना के लिये आवेदन किया, और विभाग की मदद से नए व्यवसाय को शुरू किया तथा कार्प हैचरी निर्माण पूरा कर खुद की हैचरी से मत्स्य स्पॉन तैयार कर, बीज की कमी को क्षेत्र में पूरा कर खुद की पहचान बनायी।

कार्प हैचरी का निर्माण की पहल

श्रीमती शकुन्ती देवी मछुआरा परिवार से ताल्लुक रखने के कारण वर्ष 2020-21 में जिला मत्स्य कार्यालय, चतरा में कार्प हैचरी निर्माण के लिये आवेदन किया जिसकी कुल ईकाई लागत मो0 25,00,000/- रू0 थी। उन्हे महिला कोटि से चयन किया गया, जिसके तहत् उन्हें अनुदान स्वरूप 60 प्रतिशत राशि अर्थात् 15,00,000/- रू0 की सहायता मिली। उन्होंने इसके लिये लीज पर जमीन खरीदी, तथा विभागीय पदाधिकरियों की देख रेख में कॉर्प हैचरी निर्माण प्रारम्भ किया तथा निर्माण कार्य पूरा कर निजी क्षेत्र में स्पॉन उत्पादन के लिय पहला कदम बढाया।

आर्थिक लाभ

श्रीमती शकुन्ती देवी "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना'' की एक लाभर्थी हैं। मत्स्य स्पॉन उत्पादन के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति में बदलाव ला चुकी है। शकुन्ती देवी

ने प्रति वर्ष 15-20 करोड़ मत्स्य स्पान तैयार कर लगभग 4 से 5 लाख रू0 सलाना आमदनी प्राप्त की है। इस क्रम में उन्होंने अन्य लोगो को रोजगार भी दिया। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

समाजिक प्रभाव

श्रीमती शकुन्ती देवी का यह उदाहरण बताता है कि सही योजना और मेहनत के साथ न केवल व्यक्तिगत आमदनी बढायी जा सकती है। बल्कि समाज में भी रोजगार के अवसर सृजित किये जा सकते हैं। उनकी सफलता की कहानी दिखाती है कि PMMSY जैसे अवसर महिलाओं को सशक्त बनाने और आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम है।

निशकर्ष

श्रीमती शकुन्ती देवी की सफलता यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन एवं प्रयासों से कोई भी महिला अपने जीवन को नई दिशा दे सकती है। PMMSY के तहत् कार्प हैचरी स्थापित करके शकुन्ती देवी ने न केवल अपनी आय में वृद्धि की, बल्कि स्थानीय समाज मे रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किये है। इस योजना से उन्होंने न केवल अपनी आमदनी बढ़ाकर अपनी अर्थिक स्थिति को सृढ़ढ किया बल्कि समाज में महिलाओं के लिये प्रेरणा बनकर उदाहरण प्रस्तुत किया। शकुन्ती देवी समाज में अपना नाम किया, जिससे वे बहेद खुश है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प
शुद्ध आय	-	4-5 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	15-20 करोड़ मत्स्य स्पान	
रोज़गार	5 व्यक्ति	

सरिता की सोच, समृद्धि की राह: एक महिला उद्यमी की कहानी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सरिता देवी
मोबाईल	8789926624
जिला	चतरा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	मैट्रिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	जिन्दा मछली बिक्री केन्द्र
कुल परियोजना लागत	20.00 लाख
अनुदान राशि	12.00 लाख

परिचय

श्रीमती सरिता देवी पति: श्री भरत साव, प्रखण्ड ईटखोरी, जिला चतरा एक मध्यम परिवार की महिला, मैट्रिक उत्तीर्ण कर घर गृहस्थी संभालते हुए किसी तरह अपनी जीविका चला रही थी। उनके परिवार के खर्चे और भविष्य की जरूरतों के हिसाव से बहुत मुश्किल से अपना घर चला रही थी।

जीवन के इस मोड़ पर उन्हें एक नई उम्मीद मिली, जब उन्हें ईटखोरी प्रखण्ड के मत्स्य मित्र श्री रंजीत रविदास के माध्यम से जिला मत्स्य कार्यालय, चतरा द्वारा संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अन्तर्गत विभिन्न योजनाओं की जानकारी मिली। जिला मत्स्य कार्यालय के माध्यम से राँची जाकर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण में भाग लेकर मत्स्य पालन और संबंधित कार्यों के बारे में गहरी समझ मिली। प्रशिक्षण उपरांत उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय, चतरा की मदद से जिन्दा मछली बिक्री केन्द्र योजना का लाभ लिया एवं नए व्यवसाय की शुरूआत की। यह योजना उनके जीवन में एक नया मोड़ लेकर आई, जिसमें उन्हें यह विश्वास हुआ कि अगर मेहनत और लगन से किसी काम को करने से मंजिल तक पहुँचते देर नहीं लगती। उन्हें यह विश्वास हो गया कि सरकार ने जीवन यापन तथा रोजगार के लिये, अनेकों अवसर दिये है, जरूरत है बस उन्हे लगन एवं समय पर धरातल में लाने के लिये मेहनतकश प्रयास की। आज श्रीमती सरिता देवी ना केवल अपने जरूरतों को सहजता से पूरा करती है, बल्कि दूसरों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बन गयी है।

जिन्दा मछली बिक्री केन्द्र की स्थापना

श्रीमती सरिता देवी ने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना अन्तर्गत जिन्दा मछली बिक्री केन्द्र के लिये वर्ष 2021-22 में जिला मत्स्य कार्यालय, चतरा में आवेदन दिया, जिसकी

कुल परियोजना लागत मो0 20.00 लाख रू0 थी। उन्हे महिला कोटि में चयनित किया गया, जिसके तहत उन्हे 60 प्रतिशत अनुदान के रूप में मो0 12.00 लाख रू0 की सहायता राशि प्राप्त हुई। श्रीमती सरिता देवी को जिला मत्स्य कार्यालय, हजारीबाग द्वारा निर्मित जिन्दा मछली बिक्री केन्द्र में भम्रण कराया गया ताकि उन्हे तकनीकी रूप से कुशल बनाया जा सके। तत्पश्चात मत्स्य विभाग, झारखण्ड तथा जिला मत्स्य कार्यालय, चतरा से मिले सहयोग से उन्होंने अपने कार्य की शुरूआत की और नए व्यवसाय की ओर कदम बढ़ाया।

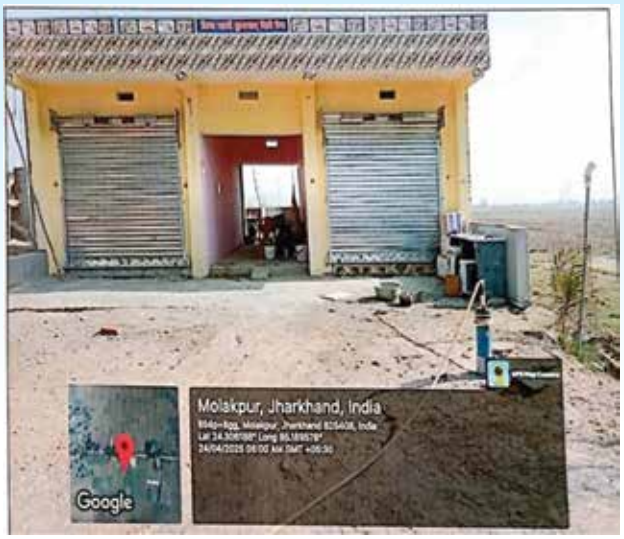

आर्थिक लाभ

श्रीमती सरिता देवी, प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) की एक लाभार्थी मछली बिक्री के माध्यम से अपने आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव ला चुकी हैं। श्रीमती सरिता देवी प्रतिमाह 20 क्विंटल मछली बिक्री कर लगभग 25-30 हजार रू0 प्रतिमाह की आमदनी हो रही है। इस व्यवसाय से उनकी वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित हो गयी है। इस व्यवसाय के माध्यम से श्रीमती सरिता देवी के परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि समुदाय में भी रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

समाजिक प्रभाव

श्रीमती सरिता देवी का यह उदाहरण साबित करता है कि सही योजना और मेहनत के साथ न केवल व्यक्तिगत आय में वृद्धि हो सकती है, बल्कि समाज में भी रोजगार के नए अवसर पैदा किये जा सकते है। इनकी यह सफलता की कहानी दिखाती है कि PMSSY जैसे अवसर महिलाओं को सशक्त् बनाने और आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम है।

निष्कर्ष

श्रीमती सरिता देवी की सफलता यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन और प्रयास से कोई भी महिला अपने जीवन को नया दिशा दे सकती है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत जिन्दा मछली बिक्री केन्द्र स्थापित करके सरिता ने न केवल अपनी आय में वृद्धि की, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किये हैं। इस योजना के माध्यम से उन्होंने न केवल अपने परिवार को आर्थिक रूप से मजबूत किया बल्कि समाज में भी महिलाओं के लिये प्रेरणा का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। उनकी यह सफलता साबित करती है कि अगर इच्छाशक्ति और मेहनत मजबूत हो तो, कोई भी चुनौती बड़ा नहीं होती।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प, तिलपिया, पंगास एवं अन्य
मासिक आय	-	25-30 हजार रू0
परियोजना आउटपुट		
मासिक बिक्री	20 क्विंटल	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

RAS तकनीक से समृद्धि तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	अनीता सिंह
मोबाईल	9939351741
जिला	देवघर
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Large RAS
कुल परियोजना लागत	50.00 लाख
अनुदान राशि	30.00 लाख

परिचय

झारखंड राज्य के देवघर जिले के गिधनी गांव की रहने वाली श्रीमती अनिता सिंह ने यह साबित कर दिया है कि अगर इरादे मजबूत हों और मेहनत में कोई कमी न हो, तो महिलाएं भी ग्रामीण परिवेश से निकलकर आत्मनिर्भरता की मिसाल बन सकती हैं। एक सामान्य ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाली अनिता सिंह आज मत्स्य पालन के क्षेत्र में अपनी मेहनत और लगन से एक प्रेरणास्रोत बन चुकी हैं।

परियोजना की शुरुआत

वर्ष 2020 में अनिता जी ने पारंपरिक तरीके से अपने तालाब में मछली पालन की शुरुआत की थी। उस समय उनकी वार्षिक आय केवल 40 से 50 हज़ार रुपए के बीच थी। लेकिन कुछ नया और बड़ा करने की चाह ने उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) से जोड़ दिया। इंटरनेट के माध्यम से जब उन्हें इस योजना के बारे में जानकारी मिली, तो उन्होंने RAS (Recirculatory Aquaculture System) पद्धति में पाँच दिन का प्रशिक्षण लिया और 2021 में मत्स्य विभाग से औपचारिक रूप से जुड़ गईं।

वित्तीय वर्ष 2020-21 में अनिता सिंह को PMMSY के तहत 'Large RAS योजना' का लाभ मिला। महिला कोटि अंतर्गत 60% अनुदान के रूप में उन्हें 30.00 लाख रुपए की सरकारी सब्सिडी प्रदान की गई, जबकि कुल परियोजना लागत 50 लाख रुपए थी। इस योजना के अंतर्गत उन्हें 9 मीटर व्यास और 1.5 मीटर ऊँचाई वाले 8 आधुनिक टैंक मिले। इसके साथ ही जिला मत्स्य कार्यालय, देवघर से उन्हें 25,000 पंगास मत्स्य अंगुलिकाएं और 2,000 किलो फैक्ट्री फॉर्म्युलेटेड फीड भी उपलब्ध कराया गया।

आर्थिक लाभ

अब अनिता जी साल में दो चक्र में मछली उत्पादन करती हैं और उनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 32 टन तक पहुँच चुकी है। परियोजना से जुड़ने के बाद उनकी कुल वार्षिक आय 23 लाख रुपए हो गई है, जबकि लागत लगभग 14-15 लाख रुपए है। इस प्रकार उन्हें 7-8 लाख रुपए की शुद्ध वार्षिक आमदनी हो रही है।

सामाजिक प्रभाव

इस सफलता के साथ-साथ अनिता जी ने अपने गांव में 6 लोगों को स्थायी रोजगार भी प्रदान किया है, जिससे उनके सामाजिक योगदान में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि महिलाएं न केवल स्वयं की पहचान बना सकती हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव भी ला सकती हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती अनिता सिंह की सफलता न केवल ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा है, बल्कि यह दर्शाती है कि सरकारी योजनाओं का सही उपयोग और तकनीकी ज्ञान के साथ मेहनत की जाए तो कोई भी अपने जीवन में आर्थिक और सामाजिक बदलाव ला सकता है। आज अनिता जी झारखंड की उन अग्रणी महिलाओं में शामिल हैं, जिन्होंने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में ठोस कदम बढ़ाया है।

"सपने देखना जरूरी है, लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत और सही मार्गदर्शन सबसे अहम होता है - यही है अनिता सिंह की सफलता की असली कुंजी।"

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	14-15 लाख
वार्षिक आय	-	23 लाख
शुद्ध आय	-	7-8 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	32 टन	
रोज़गार	7 व्यक्ति	

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से मिली आत्मनिर्भरता

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	बबन देवी
मोबाईल	8227009145
जिला	देवघर
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	7 टैंक बायोफलॉक
कुल परियोजना लागत	7.5 लाख
अनुदान राशि	4.5 लाख

परिचय

झारखंड राज्य के देवघर जिले के डाबरग्राम गांव की रहने वाली श्रीमती बबन देवी, जो एक सामान्य ग्रामीण परिवार से आती हैं, प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) का लाभ मिलने से पूर्व एक साधारण गृहिणी थीं। परंतु उन्होंने यह साबित कर दिखाया कि यदि इच्छाशक्ति और परिश्रम हो, तो कोई भी महिला आत्मनिर्भर बन सकती है और समाज में प्रेरणा का स्रोत बन सकती है।

परियोजना की शुरुआत

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत, श्रीमती बबन देवी ने महिला कोटि में वित्तीय वर्ष 2021-22 में 7 टैंक बायोफ्लॉक योजना की शुरुआत की, जिसकी कुल परियोजना लागत 7.50 लाख रुपए थी, जिसमें उन्हे अनुदान राशि के रूप में 4.50 लाख केंद्र तथा राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई। इस परियोजना को जिला मत्स्य पदाधिकारी, देवघर कार्यालय के तकनीकी सहयोग से लागू किया गया। इसके साथ ही उन्हें तकनीकी रूप सेव दक्ष बनाने के लिए उन्हे राँची भेजकर मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र से 5 दिवसीय विशेष बायोफलॉक तकनीक से मत्स्य पालन का प्रशिक्षण भी दिया गया।

आर्थिक लाभ

शुरुआत में उन्हें बायोफलॉक के तकनीकी पहलुओं को समझने में कठिनाई अवश्य हुई, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। मत्स्य विभाग के मार्गदर्शन और प्रशिक्षणों का उन्होंने पूरा लाभ उठाया। वैज्ञानिक तरीकों को अपनाते हुए उन्होंने बायोफलॉक में पंगास, एवं मोनोसेक्स तिलापिया जैसी उन्नत प्रजातियों का पालन शुरू किया। पहले ही वर्ष में उन्हें लगभग 1 लाख रुपए का शुद्ध लाभ हुआ, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ गया।

आज, नियमित अनुभव और परिपक्व तकनीकी समझ के साथ, श्रीमती बबन देवी की वार्षिक उत्पादन क्षमता 8000 किलोग्राम हो गई है, जिसमें वे साल में दो चक्रों में मछली उत्पादन करती हैं। श्रीमती बबन देवी हर वर्ष 7.50 लाख रुपए की कुल आय अर्जित कर रहे हैं, जिसमें से उनका शुद्ध मुनाफा 2.50 लाख रुपए तक पहुंच गया है। इस निरंतर आय ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि उन्हें और अधिक विस्तार एवं नवाचार की दिशा में प्रेरित किया है। इसके साथ ही उन्होंने 3 लोगों को स्थायी रोजगार भी प्रदान किया है, जिससे उनका उद्यम न केवल उनके परिवार बल्कि अन्य लोगों के जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन ला रहा है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती बबन देवी की इस सफलता ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया, बल्कि वे अब अपने गांव और आसपास के क्षेत्रों में प्रेरणादायक महिला उद्यमी के रूप में जानी जाती हैं।

- उनकी सफलता से अन्य ग्रामीण महिलाओं और किसानों में बायोफ्लॉक तकनीक को लेकर जागरूकता बढ़ी है।
- वे अब तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन प्रदान कर रही हैं, जिससे अन्य लोग भी इस व्यवसाय से जुड़कर लाभान्वित हो रहे हैं।
- उनकी कहानी ने यह सिद्ध किया है कि महिलाएं भी कृषि और मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा सकती हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती बबन देवी की यह सफलता इस बात का उदाहरण है कि यदि सरकारी योजनाओं का सही दिशा में क्रियान्वयन हो और लाभार्थी की मेहनत एवं निष्ठा भी साथ हो, तो सपने साकार हो सकते हैं।

उनकी कहानी से यह प्रेरणा मिलती है कि ग्रामीण महिलाएं भी आत्मनिर्भर बन सकती हैं, और वे अपने साथ-साथ पूरे समाज को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकती हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	5.00 लाख
वार्षिक आय	-	7.50 लाख
शुद्ध आय	-	2.50 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	7-8 टन	
रोज़गार	3 व्यक्ति	

फाइंडिंग नेमो- सपनों से स्वावलंबन तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	निष्ठा कुमारी सिंह
मोबाईल	7480959058
जिला	धनबाद
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Integrated Ornamental fish unit (breeding and rearing for fresh water fish)
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

झारखंड राज्य के धनबाद जिले की रहने वाली सुश्री निष्ठा सिंह कभी एक सामान्य लड़की थीं, जिनकी दुनिया सिर्फ पढ़ाई, किताबों और पारंपरिक सपनों तक सीमित थी। लेकिन किसे पता था कि एक दिन वही लड़की रंगीन मछलियों की दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाएगी।

निष्ठा बचपन से ही अपने भाई शुभम सिंह को रंगीन (सजावटी) मछलियों का पालन करते हुए देखती थीं। धीरे-धीरे उनके भीतर भी इन अलंकारी मछलियों के प्रति गहरी रूचि जागने लगी। उनकी यह दिलचस्पी देखकर शुभम सिंह ने उन्हें राँची में आयोजित 5 दिवसीय रंगीन मछली पालन प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

इस प्रशिक्षण ने निष्ठा की सोच को नई दिशा दी। वहीं उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत सजावटी मछली पालन एवं प्रजनन योजना की जानकारी मिली। इस योजना ने निष्ठा को एक नई राह दिखाई और उन्हें अपने सपनों को साकार करने का अवसर प्रदान किया।

मत्स्य विभाग के सहयोग से सुश्री निष्ठा सिंह ने वित्तीय वर्ष 2020-21 में एकीकृत सजावटी मछली इकाई (ताजे पानी की प्रजातियों के लिए) की योजना का लाभ उठाया। महिला लाभार्थी के रूप में उन्हें ₹25.00 लाख की कुल परियोजना लागत पर 60% (₹15-00 लाख) की अनुदान सहायता प्राप्त हुई।

इस योजना के अंतर्गत उन्होंने धनबाद जिले के बाघमारा प्रखंड में सजावटी मछली पालन एवं प्रजनन इकाई की स्थापना की, जिसे आज सभी लोग "फाइंडिंग नेमो" के नाम से जानते हैं। यह इकाई अब क्षेत्र की एक पहचान बन चुकी है।

निष्ठा आज विभिन्न Local & Exotic प्रजातियों की अलंकारी मछलियों का पालन और प्रजनन कर रही हैं। जिन प्रमुख प्रजातियों में शामिल हैं: गप्पी, मौली, सोर्ड टेल, प्लैटी, कोई कार्प, गोल्ड फिश, ऑस्कर, सोलर पैरट, ग्रीन टेरर, रेड ज्वेल, टेक्सास आदि।

इन सभी प्रजातियाँ न केवल बाजार में मांग में हैं, बल्कि इनका पालन तकनीकी ज्ञान और सतत देखभाल की भी जरूरत है, जिसमें निष्ठा ने खुद को पूरी तरह से इस काम के लिए प्रशिक्षित किया है।

आज निष्ठा की यूनिट में हर वर्ष करीब 3.5 लाख सजावटी मछलियों का उत्पादन तथा विक्रय किया जा रहा है। उनके इस कार्य से उन्हें प्रति वर्ष लगभग 2 से 3 लाख रुपये तक का शुद्ध लाभ हो रहा है। इसके अलावा, उन्होंने अपनी इकाई में दो स्थानीय युवाओं को रोजगार भी दिया है, जिससे वे अन्य के जीवन को भी सशक्त बना रही हैं।

उनका यह प्रयास केवल एक उद्यम नहीं, बल्कि "महिला सशक्तिकरण", और "स्थानीय रोजगार सृजन" के सतत उपयोग" का जीता-जागता उदाहरण है।

सुश्री निष्ठा सिंह की यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि अगर इच्छा प्रबल हो, मार्गदर्शन सही मिले और योजनाओं का लाभ समय पर लिया जाए, तो कोई भी साधारण व्यक्ति असाधारण ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है। आज उनकी पहचान केवल एक मछली पालक की नहीं, बल्कि एक प्रेरणा स्रोत महिला उद्यमी की बन चुकी है। "फाइंडिंग नेमो" के रूप में उनकी इकाई धनबाद जिले में सजावटी मछली पालन की पहचान बन चुकी है। इसने अन्य संभावित मत्स्य पालकों को इस क्षेत्र में आने की प्रेरणा दी है और राज्य में सजावटी मत्स्य पालन के विकास को गति दी है। भारत सरकार के मात्स्यिकी, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री से सीधे विडियो कॉफ्रेंस पर अपनी उपलब्धियों के बारे में बताया है।

परियोजना विवरण:	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	सभी मीठा जल अलंकारी मछलियाँ
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	
परिचालन लागत	-	1.50-2.00 लाख
वार्षिक आय	-	4-4.5 लाख
शुद्ध आय	-	2-3 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	3.5 लाख	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

छोटा कदम, बड़ी कामयाबी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	देवदास धीबर
मोबाईल	9142607328
जिला	धनबाद
राज्य	झारखंड
कोटि	General
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	Three-wheeler with Ice Box
कुल परियोजना लागत	3.00 लाख
अनुदान राशि	1.20 लाख

परिचय:

श्री देवदास धीबर, झारखंड राज्य के धनबाद जिले के बाघमारा गाँव के निवासी हैं। पहले उनके जीवन में आर्थिक स्थिति बहुत बेहतर नहीं थी। मत्स्य पालन का कार्य पारंपरिक तरीके से करते थे जिससे आय सीमित थी।

योजना की शुरुआत:

वित्तीय वर्ष 2021-22 में देवदास ने **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के अंतर्गत "आइस बॉक्स युक्त थ्री-व्हीलर वाहन" योजना का लाभ लिया। उन्हें स,अन्य कोटिके अंतर्गत 40% अनुदान के रूप में 1.20 लाख की सब्सिडी प्राप्त हुई जिसकी कुल परियोजना लागत 3 लाख रुपए थी।

इस योजना के अंतर्गत उन्होंने IMC (Indian Major Carps) के साथ-साथ कैट फिश और Exotic Chinese carp जैसी मछलियों की बिक्री का कार्य शुरू किया।

आर्थिक लाभ:

इस योजना से पहले देवदास की सालाना आय बहुत काम थी, जो परिवार के भरण पोषण के लिए पर्याप्त नहीं था। योजना के बाद उनकी सालाना आय बढ़कर 1-2 लाख रुपए हो गई है।

सामाजिक प्रभाव:

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का लाभ उठाने के बाद श्री देवदास धीबर के जीवन में न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक स्तर पर भी कई सकारात्मक बदलाव आए हैं। उनकी बढ़ी हुई आय ने परिवार की जीवनशैली में सुधार लाया है: उनकी आर्थिक स्थिति सुधरने के बाद अब उनके बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं और बेहतर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अब देवदास जी और उनका परिवार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो चुका है, जिससे उन्हें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। क्षेत्र में उनकी पहचान एक मेहनती और सफल मत्स्यपालक के रूप में बनी है, जिससे समाज में उनका सम्मान बढ़ा है।

इस प्रकार यह योजना केवल एक व्यवसायिक सहायता नहीं रही, बल्कि देवदास जी और उनके परिवार के लिए एक **समग्र सामाजिक बदलाव** का माध्यम बनी है।

निष्कर्ष:

श्री देवदास **धीबर**, की कहानी यह दर्शाती है कि यदि सरकारी योजनाओं का सही उपयोग किया जाए और आधुनिक तकनीकों को अपनाया जाए, तो कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को आर्थिक और सामाजिक रूप से बदल सकता है। आज वे न केवल खुद सफल हैं, बल्कि अन्य ग्रामीणों के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुके हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प, कैटफिश, चाइनीज कार्प
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	
परिचालन लागत	-	
वार्षिक आय	-	1-2 लाख
शुद्ध आय	-	
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक बिक्री	180 टन	
रोज़गार	स्वरोजगार	

मत्स्य पालन से आत्मनिर्भरता की ओर

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	रितेश कुमार सिंह
मोबाईल	8709938436
जिला	दुमका
राज्य	झारखंड
कोटि	General
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	बायोफलॉक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	5.60 लाख

दुमका जिला निवासी **श्री रितेश कुमार सिंह** की कहानी प्रेरणा से भरपूर है। मत्स्य पालन में कदम रखने से पहले वे एक गैर-सरकारी संगठन में **तेजस्वी परियोजना** से जुड़े हुए थे, जहाँ से उन्हें केवल जीवन यापन योग्य आमदनी हो पाती थी। लेकिन एक नई दिशा की तलाश उन्हें एक ऐसे रास्ते पर ले गई जहाँ मेहनत, तकनीकी ज्ञान और सरकारी सहायता ने मिलकर उनकी जिंदगी बदल दी।

वर्ष **2020** में श्री रितेश कुमार सिंह की मत्स्य पालन में रुचि जागी। उन्होंने इस क्षेत्र में संभावनाओं को देखते हुए **जिला मत्स्य कार्यालय, दुमका** से संपर्क किया। एक दिन यूट्यूब पर उन्हें **प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** की जानकारी मिली। योजना की विशेषताओं और लाभों को समझते ही उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय से संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त की। वहां उन्हें योजना के अंतर्गत संचालित **47 उप-योजनाओं** के बारे में बताया गया।

वित्तीय वर्ष **2021-22** में श्री रितेश को **सामान्य कोटि के लाभार्थी** के रूप में PMMSY के अंतर्गत **बायोफ्लॉक तकनीक आधारित मत्स्य पालन योजना** का लाभ मिला। इस योजना की **कुल लागत ₹14.00 लाख** थी, जिसमें उन्हें **40% (₹5.61 लाख)** की राशि अनुदान के रूप में प्राप्त हुई। **6000 तिलपिया मछली की अंगुलिकाएं** का संचयन प्रथम वर्ष किया और उन्हें अच्छी सफलता मिली और लगभग 2 टन मछली का उत्पादन किया।

तकनीकी दक्षता को बढ़ावा देने के लिए जिला मत्स्य कार्यालय, दुमका के अनुशंसा के आधार पर उन्हें मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, राँची में उन्हें **5 दिवसीय सामान्य मत्स्य पालन प्रशिक्षण, 5 दिवसीय विशेष बायोफलॉक तकनीकी प्रशिक्षण** प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला।

इन प्रशिक्षणों से उन्हें **जल गुणवत्ता प्रबंधन, मछलियों के आहार, रोग प्रबंधन**, और **मत्स्य पालन की वैज्ञानिक**

तकनीकों की गहन जानकारी प्राप्त हुई, जिससे उनका आत्मविश्वास और तकनीकी समझ दोनों ही मजबूत हुए।

आज श्री रितेश कुमार सिंह बायोफलॉक तकनीक की मदद से प्रतिवर्ष लगभग 3 टन मछली का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे उन्हें 3 से 4 लाख रुपये की वार्षिक आय प्राप्त हो रही है। उन्होंने अपने उद्यम के माध्यम से दो बेरोजगार युवाओं को रोजगार प्रदान किया है, जिससे उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

उनकी सफलता ने आसपास के गाँवों में रहने वाले युवाओं को स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित किया है। कई लोग अब मत्स्य पालन या अन्य कृषि आधारित उद्यमों के बारे में जानकारी लेने लगे हैं। बायोफलॉक तकनीक का सफल प्रयोग स्थानीय किसानों को नई तकनीकों को अपनाने की प्रेरणा दे रहा है, जिससे परंपरागत कृषि कार्यों में नवाचार देखने को मिल रहा है। उनके मत्स्य पालन से न केवल उनकी आय में वृद्धि हुई है, बल्कि क्षेत्रीय बाजार में ताजी मछलियों की उपलब्धता भी बढ़ी है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ मिल रहा है।

श्री रितेश कुमार सिंह की सफलता इस बात का प्रमाण है कि यदि सही मार्गदर्शन, सरकारी योजना और मेहनत तीनों मिल जाएं, तो कोई भी व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सकता है। उनकी यह यात्रा आज दुमका जिला और आसपास के युवाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	2.0 लाख
वार्षिक आय	-	3.60 लाख
शुद्ध आय	-	2 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	3 टन	
रोजगार	2 व्यक्ति	

बायोफ्लॉक तकनीक से आत्मनिर्भरता की मिसाल

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	मालती देवी
मोबाईल	7004484047
जिला	दुमका
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Non-Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	बायोफलॉक 25 टैंक
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

झारखंड राज्य के **दुमका जिले** की रहने वाली **श्रीमती मालती देवी** एक समय केवल खेती के माध्यम से गुजारा कर रही थीं। कृषि कार्यों से हटकर उनके भीतर कुछ नया करने का जज़्बा था। वर्ष **2012-13** से उन्होंने पारंपरिक मछली पालन में रुचि ली, परंतु संसाधनों और तकनीकी जानकारी के अभाव में वे इसे एक व्यवसाय के रूप में विकसित नहीं कर सकीं।

वर्ष **2021** में जब उन्हें **जिला मत्स्य कार्यालय, दुमका** से **प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना** (PMMSY) के बारे में जानकारी मिली, तो उन्होंने इसे जीवन बदलने वाले अवसर के रूप में लिया। योजना के विभिन्न लाभों को समझकर उन्होंने **बायोफ्लॉक तकनीक आधारित मछली पालन** को अपनाने का निश्चय किया।

वित्तीय वर्ष **2021-22** में **प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के अंतर्गत उन्हें **बायोफलॉक 25 टैंक की परियोजना** स्वीकृति मिली और आर्थिक सहायता के रूप में उन्हे **महिला कोटि अंतर्गत 60%** अनुदान पर 15.00 लाख रुपए की राशि का लाभ दिया गया जिसकी **कुल परियोजना लागत** 25.00 लाख रुपए थी, जिससे उन्होंने अपने मत्स्य पालन उद्यम की नींव मजबूत की।

अपने उद्यम को सफलतापूर्वक संचालित करने हेतु मत्स्य विभाग की ओर से उन्हे तकनीकी रूप से दक्ष करने हेतु मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र द्वारा **5 दिवसीय सामान्य मत्स्य पालन प्रशिक्षण** तथा **3 दिवसीय बीज उत्पादक प्रशिक्षण** भी दिया गया। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से उन्होंने **जल गुणवत्ता प्रबंधन, मछली आहार प्रबंधन, रोग नियंत्रण,** और **बायोफ्लॉक तकनीक** की विस्तृत जानकारी प्राप्त की, जिससे उनकी तकनीकी दक्षता में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

सरकारी सहयोग और स्वयं की मेहनत के बल पर श्रीमती मालती देवी आज बायोफ्लॉक तकनीक के माध्यम से प्रति वर्ष 4-5 टन मछली का उत्पादन कर रही हैं। इससे उन्हें

वार्षिक 6-7 लाख रुपए की आय हो रही है। साथ ही, उन्होंने 2 स्थानीय लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार भी प्रदान किया है, जो उनके साथ दैनिक मजदूरी पर कार्यरत हैं।

मालती देवी की सफलता ग्रामीण महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है कि किस प्रकार वे भी आत्मनिर्भर बन सकती हैं। उनके उद्यम से दो लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिला है, जिससे स्थानीय परिवारों की आय में सुधार हुआ है। बायोफ्लॉक जैसी आधुनिक तकनीक का प्रयोग क्षेत्र में मत्स्य पालन के वैज्ञानिक और लाभकारी मॉडल को स्थापित कर रहा है। उनकी यह सफलता से प्रेरित होकर क्षेत्र के अन्य युवा और महिलाएं भी मत्स्य पालन को एक व्यवसायिक विकल्प के रूप में अपना रहे हैं।

श्रीमती मालती देवी की यह सफलता की कहानी यह दर्शाती है कि जब इच्छाशक्ति, प्रशिक्षण और सरकारी सहायता एक साथ मिलती हैं, तो कोई भी व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति बदल सकता है। आज वे न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, बल्कि अपने क्षेत्र में **मत्स्य पालन की रोल मॉडल** बन चुकी हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास एवं मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	3.0 लाख
वार्षिक आय	-	6-7 लाख
शुद्ध आय	-	3-4 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	4-5 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

मत्स्य पालन से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सीमा पाल
मोबाईल	7091657278
जिला	दुमका
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021–22
अवयव	बायोफलॉक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

दुमका जिला निवासी श्रीमती सीमा पाल की कहानी प्रेरणा से भरपूर है। मत्स्य पालन में कदम रखने से पहले, वे एक आम घरेलु महिला थीं। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) से मिले सहयोग ओर उनके आत्मविश्वास ने उन्हें एक ऐसे रास्ते पर ला खड़ा किया जहाँ उनकी मेहनत, तकनीकी ज्ञान और सरकारी सहायता ने उनकी जीवनशैली को बदल दिया है।

वर्ष 2020 में, श्रीमती सीमा पाल ने मत्स्य पालन में अपनी रुचि विकसित की। इस क्षेत्र की क्षमता को पहचानते हुए, उन्होंने दुमका में जिला मत्स्य कार्यालय से संपर्क किया। वहां, उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के बारे में पता चला। योजना के लाभों को समझने के बाद, उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय से विस्तृत जानकारी प्राप्त की, और उन्हें योजना के तहत उपलब्ध विभिन्न उप-योजनाओं के बारे में बताया गया।

वित्तीय वर्ष 2021-22 में, श्रीमती सीमा पाल को एक महिला कोटि की लाभार्थी के रूप में PMMSY के तहत बायोफ्लॉक तालाब आधारित मछली पालन परियोजना से लाभान्वित किया गया। इस परियोजना की कुल लागत ₹14.00 लाख थी, जिसमें उन्हें ₹8.40 लाख अनुदान राशि की सहायता मिली।

अपने तकनीकी कौशल को बढ़ाने के लिए, सीमा पाल ने जिला मत्स्य कार्यालय, दुमका के सहयोग से मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, रांची में सामान्य मछली पालन और विशेष बायोफ्लॉक तकनीक में प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। इन प्रशिक्षणों ने उन्हें जल गुणवत्ता प्रबंधन, मछली पोषण, रोग की रोकथाम और उन्नत मछली पालन तकनीकों में व्यापक ज्ञान प्रदान किया, जिससे उनका आत्मविश्वास और तकनीकी विशेषज्ञता दोनों में वृद्धि हुई।

आज, सीमा पाल बायोफ्लॉक तकनीक का उपयोग करके सालाना लगभग 20 क्विंटल मछली का उत्पादन करती है, जिससे उनकी वार्षिक आय ₹2 से ₹3 लाख तक है। उन्होंने अपने व्यवसाय में दो व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया है, जिससे उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

उनकी सफलता ने आसपास के गांवों के युवाओं को स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित किया है। कई लोग अब मछली पालन और अन्य कृषि-आधारित व्यवसायों के बारे में जानकारी मांग रहे हैं। बायोफ्लॉक तकनीक का सफल कार्यान्वयन स्थानीय किसानों को नवीन तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, जिससे पारंपरिक कृषि पद्धतियों में प्रगति हो रही है। मछली पालन उद्यम ने न केवल उनकी आय में वृद्धि की है, बल्कि स्थानीय बाजार में ताजी मछली की उपलब्धता में भी सुधार किया है, जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला है।

श्रीमती सीमा पाल की यात्रा इस बात का एक शक्तिशाली उदाहरण है कि कैसे सही मार्गदर्शन, सरकारी सहायता और समर्पण एक साधारण महिला को आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में सक्षम बना सकते हैं। उनकी कहानी दुमका जिले और आसपास के क्षेत्र में कई लोगों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण के रूप में कार्य करती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, तिलपिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	1-2 लाख
वार्षिक आय	-	3-4 लाख
शुद्ध आय	-	2-3 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	2 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

साहस से सफलता तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	विनीता कुमारी
मोबाईल	9110147701
जिला	दुमका
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	**2022-23**
अवयव	Construction of fish kiosks including kiosks of aquarium/ ornamental fish
कुल परियोजना लागत	**10.00 लाख**
अनुदान राशि	**06.00 लाख**

परिचय

झारखंड के दुमका जिले के टिन बाजार की रहने वाली श्रीमती विनीता कुमारी ने विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और मछली पालन के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई। एक शिक्षित और साहसी महिला के रूप में विनीता ने अपने जीवन में आई कठिनाइयों को अवसरों में बदलते हुए न केवल अपने परिवार को संभाला, बल्कि समाज में भी एक नई मिसाल कायम की।

परियोजना की शुरुआत

विनीता कुमारी का जन्म एक पारंपरिक मछली व्यवसायी परिवार में हुआ था, लेकिन बिहार राज्य में विवाह के बाद यह संपर्क टूट गया। वर्ष 2021 में जब उनके पति का निधन कोरोना महामारी के दौरान हो गया, तो उन पर अपनी मां और दो छोटे बच्चों की जिम्मेदारी आ गई। आर्थिक तंगी और सामाजिक चुनौतियों के बीच विनीता ने हार नहीं मानी। उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय, दुमका से संपर्क किया, जहाँ प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत उन्हें एक **मछली किओस्क** प्रदान किया गया। यह उनके व्यवसाय को पुनः आरंभ करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बना।

आर्थिक परिवर्तन

PMMSY योजना से जुड़ने से पूर्व विनीता की वार्षिक आय लगभग 1.2 लाख रुपए थी। लेकिन किओस्क के माध्यम से व्यवसाय शुरू करने के बाद उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और यह बढ़कर 6 लाख वार्षिक हो गई। उन्हें कुल 2.5 लाख का शुद्ध लाभ हुआ, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में स्थायित्व आया। आज वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के साथ-साथ एक आत्मनिर्भर जीवन जी रही हैं।

सामाजिक प्रभाव

विनीता कुमारी ने अपने व्यवसाय में स्थानीय लोगों को भी शामिल किया है, जिससे कई परिवारों को रोज़गार मिला है। उन्होंने दुमका के सभी दस प्रखंडों में मछली की आपूर्ति आरंभ

कर दी है, जिससे न केवल उनकी पहुंच बढ़ी है बल्कि स्थानीय बाजार और मछली पालन से जुड़ी अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली है। उनका कार्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है, जो यह दिखाता है कि आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण साथ-साथ चल सकते हैं।

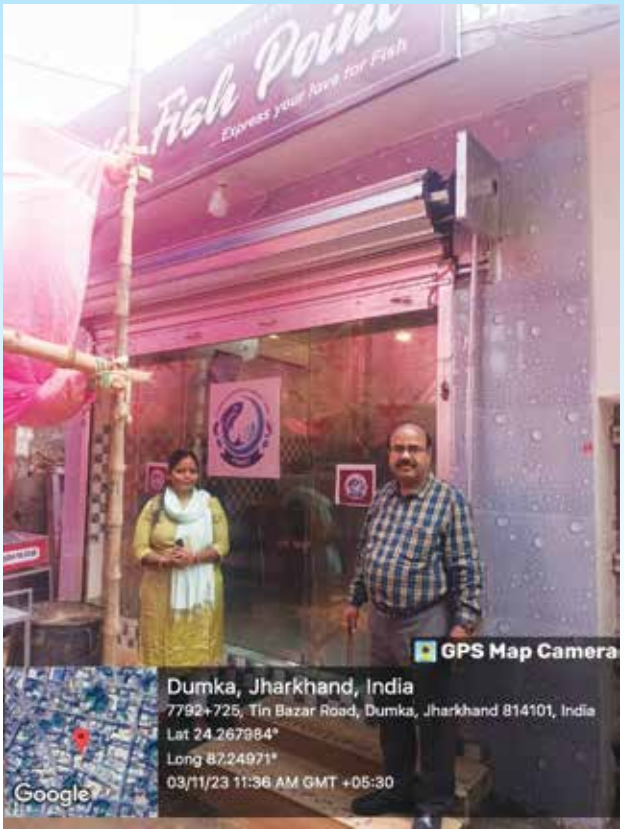

निष्कर्ष

विनीता कुमारी की सफलता की कहानी इस बात का प्रमाण है कि संकट चाहे जितना भी बड़ा हो, अगर आत्मविश्वास और मार्गदर्शन सही हो तो कोई भी महिला अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए परिवर्तन की धुरी बन सकती है। PMMSY जैसी योजनाओं का प्रभावी उपयोग कर विनीता ने अपने संघर्ष को एक सुनहरी सफलता में बदला, जिससे आज अनेक महिलाएं प्रेरणा ले रही हैं।

उनकी कहानी "नारी शक्ति" और "आत्मनिर्भर भारत" की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	विभिन्न प्रकार की मछलियों की बिक्री, Ready to Eat etc.
वार्षिक आय	-	6.00 लाख
शुद्ध आय	-	2.50 लाख
परियोजना आउटपुट		
रोज़गार	2 व्यक्ति	

रंगीन मछलियों से रची सफलता की कहानी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	दीपाली महतो
मोबाईल	7979867477
जिला	पूर्वी सिंहभूम
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Backyard Ornamental fish Rearing unit
कुल परियोजना लागत	3.00 लाख
अनुदान राशि	1.80 लाख

परिचय

झारखंड राज्य के पूर्वी सिंहभूम जिले की निवासी श्रीमती दीपाली महतो एक समय केवल घरेलू महिला थीं, जिनका जीवन घर-परिवार की जिम्मेदारियों में ही बीतता था। लेकिन उनके अंदर कुछ अलग करने की ललक थी - एक ऐसा सपना, जिसने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। उन्हें सजावटी मछलियों (Ornamental Fish) के प्रति हमेशा से ही रुचि थी, लेकिन यह केवल एक शौक तक सीमित था।

योजना की शुरुआत

2018 में उन्होंने पहली बार मत्स्य विभाग, झारखंड द्वारा आयोजित एक सजावटी मछली पालन शिविर में भाग लिया। इस शिविर ने उनकी सोच को एक नया आयाम दिया। उन्होंने ICAR-CIFA (ICAR-Central Institute of Freshwater Aquaculture) और ICAR-CIFRI (ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से सजावटी मछली पालन एवं प्रजनन का प्रशिक्षण लेना शुरू किया। उनकी इसी बढ़ती रुचि और जानकारी ने उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) से जोड़ दिया। इस योजना के तहत उन्हें वर्ष 2022-23 में **Backyard Ornamental Fish Rearing Unit** स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

आर्थिक लाभ

श्रीमती दीपाली को इस परियोजना के लिए 3.00 लाख की कुल लागत पर 60% अर्थात 1.08 लाख का अनुदान प्राप्त हुआ। उन्होंने इस इकाई के माध्यम से **गप्पी, मौली, सोर्ड टेल, प्लैटी, कोई कार्प, गोल्ड फिश** जैसी कई **स्थानीय और विदेशी प्रजातियों** का पालन शुरू किया।

आज उनकी इकाई से हर साल लगभग **10,000 से 20,000 मछलियों** का उत्पादन और विक्रय किया जा रहा है। इस कार्य से उन्हें हर वर्ष करीब **1.00 से 1.50 लाख** तक का **शुद्ध लाभ** प्राप्त हो रहा है। यह न केवल एक महिला के लिए आत्मनिर्भर बनने की दिशा में बड़ा कदम है, बल्कि ग्रामीण उद्यमिता का भी उत्कृष्ट उदाहरण है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती दीपाली अब अपने क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की प्रतीक बन चुकी हैं। उनके कार्य ने न सिर्फ उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारी, बल्कि अन्य महिलाओं को भी प्रेरित किया है कि वे भी स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ाएं। वे अब केवल एक मछली पालक नहीं, बल्कि एक प्रशिक्षित महिला उद्यमी के रूप में जानी जाती हैं, जो समय-समय पर अन्य महिलाओं को मार्गदर्शन भी देती हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती दीपाली महतो की कहानी यह सिद्ध करती है कि यदि जुनून हो, सही मार्गदर्शन मिले और सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ उठाया जाए, तो कोई भी साधारण महिला असाधारण उपलब्धियां हासिल कर सकती है। उनकी सफलता यह संदेश देती है कि **सपने देखना और उन्हें पूरा करना हर किसी के लिए संभव है**, बस जरूरत है आत्मविश्वास, लगन और सही समय पर उठाए गए कदमों की।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	सभी प्रकार की अलंकारी मछलियाँ
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	
परिचालन लागत	-	3 लाख
वार्षिक आय	-	1-1.5 लाख
शुद्ध आय	-	1-1.5 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	10,000-20,000 अलंकारी मछलियाँ	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

अनुदान से आत्मबल तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	अफसाना खातून
मोबाईल	7762930344
जिला	गढ़वा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	B.A
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Biofloc -7 tanks
कुल परियोजना लागत	7.50 लाख
अनुदान राशि	4.50 लाख

झारखंड के गढ़वा जिले की रहने वाली श्रीमती अफसाना खातून आज अपने क्षेत्र में एक प्रेरणास्रोत बन चुकी हैं। शिक्षा में स्नातक और डी.एल. एड. की डिग्री हासिल करने के बाद भी, अफसाना ने पारंपरिक नौकरी की तलाश में भटकने की बजाय, कुछ अलग और आत्मनिर्भर बनने की ठानी। उनकी यह सोच उन्हें मत्स्य पालन के क्षेत्र में ले आई, जहाँ उन्होंने न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधारी बल्कि दूसरों के लिए भी एक मिसाल कायम की।

अफसाना को मत्स्य पालन के बारे में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में जिला मत्स्य कार्यालय, गढ़वा से जानकारी मिली। इस योजना के बारे में जानने के बाद, उन्हें इस क्षेत्र में संभावनाएँ दिखाई दीं। वर्ष 2020-21 में, उन्होंने बायोफ्लॉक तकनीक पर आधारित 7 टैंकों के साथ अपना मत्स्य पालन उद्यम शुरू किया। इस परियोजना के लिए उन्हें सरकार से 4.50 लाख रुपये की सब्सिडी भी प्राप्त हुई, जिससे उन्हें शुरुआती लागत को कम करने में काफी मदद मिली।

परियोजना शुरू करने से पहले, अफसाना केवल पढ़ाई करती थीं और उनकी कोई नियमित आय नहीं थी। लेकिन बायोफ्लॉक तकनीक अपनाने के बाद, उनकी किस्मत बदल गई। आज, वह सालाना लगभग 21 क्विंटल मछली का उत्पादन करती हैं । इस उद्यम से उन्हें सालाना 3 लाख 36 हजार रुपये की शुद्ध आय होती है, जो पहले शून्य थी। आर्थिक रूप से सशक्त होने के साथ-साथ, अफसाना ने दो लोगों को रोजगार भी प्रदान किया है।

मत्स्य पालन ने न केवल अफसाना की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि उनके सामाजिक जीवन पर भी

सकारात्मक प्रभाव डाला है। उनके बच्चे अब नियमित रूप से स्कूल जाते हैं और उनका परिवार आर्थिक रूप से स्वतंत्र महसूस करता है। समुदाय में उनकी पहचान एक सफल उद्यमी के रूप में हुई है और अब वह अन्य लोगों को भी इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। उन्होंने 2 अन्य सामुदायिक सदस्यों के साथ साझेदारी भी की है, जिससे सामूहिक विकास को बढ़ावा मिला है।

अफसाना खातून की कहानी यह साबित करती है कि सही दिशा में प्रयास और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर महिलाएं भी आत्मनिर्भर बन सकती हैं और अपने सपनों को साकार कर सकती हैं। उनकी सफलता न केवल उनके परिवार के लिए बल्कि पूरे समुदाय के लिए एक उज्जवल भविष्य का संकेत है। बायोफ्लॉक तकनीक को अपनाकर और मत्स्य पालन में सफलता हासिल करके, अफसाना ने दिखाया है कि दृढ़ संकल्प और मेहनत से हर मुश्किल को आसान बनाया जा सकता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	2.46 लाख
वार्षिक आय	-	3.36 लाख
शुद्ध आय	-	0.90 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	2 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

बी.टेक से फिश टेक तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	विवेकानंद भारती
मोबाईल	7979969010
जिला	गढ़वा
राज्य	झारखंड
कोटि	SC
योग्यता	B.Tech
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	Biofloc -7 tanks
कुल परियोजना लागत	7.50 लाख
अनुदान राशि	4.50 लाख

परिचय

झारखंड राज्य के गढ़वा जिले के खाला गांव के रहने वाले श्री विवेकानंद भारती एक शिक्षित युवा हैं, जिन्होंने बी.टेक (सिविल इंजीनियरिंग) की पढ़ाई पूरी की है। वे पहले से ही एक पेशेवर के रूप में कार्यरत हैं, लेकिन उनका झुकाव हमेशा से मत्स्य पालन की ओर रहा है। अपने इस शौक को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने मछली पालन को एक अंशकालिक व्यवसाय के रूप में अपनाने का निश्चय किया।

परियोजना की शुरुआत

मत्स्य पालन में रुचि रखने के कारण विवेकानंद भारती ने जिला मत्स्य कार्यालय गढ़वा से संपर्क किया और मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, राँची में आयोजित एक प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया, जहां उन्होंने बायोफ्लॉक तकनीक और मत्स्य पालन से संबंधित नवीनतम तकनीकों की जानकारी प्राप्त की। इसी दौरान उन्हें केंद्र सरकार की "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" के बारे में जानकारी मिली, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने इस योजना का लाभ लेने का निर्णय लिया।

योजना क्रियान्वयन

वित्तीय वर्ष 2023-24 में उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति वर्ग के लाभार्थी के रूप में 7 टैंक बायोफ्लॉक यूनिट की स्थापना की। परियोजना की कुल लागत 7.50 लाख रही, जिसमें से 4.50 लाख की सब्सिडी सरकार द्वारा प्रदान की गई। इस परियोजना के अंतर्गत उन्हें 7 बायोफ्लॉक टैंक, शेड, बोरवेल एवं पंप, जनरेटर और एरेटर जैसी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं।

आर्थिक लाभ

अपनी कड़ी मेहनत और लगन से विवेकानंद भारती ने प्रतिवर्ष दो बार उत्पादन चक्र पूरा किया। एक वर्ष में उन्होंने लगभग 2100 किलोग्राम मछली उत्पादन किया, जिससे उनकी कुल वार्षिक आय 3.20 लाख हुई। इस दौरान उनका संचालन व्यय 1.60 लाख रहा, जिससे उन्हें 1.60 लाख की शुद्ध आय प्राप्त हुई। यह लाभ उन्हें उनके नियमित कार्य के साथ-साथ अतिरिक्त आय के रूप में प्राप्त हुआ, जिससे उनके पारिवारिक जीवन में आर्थिक स्थिरता आई।

सामाजिक प्रभाव

इस योजना के माध्यम से न केवल श्री विवेकानंद भारती की आय में वृद्धि हुई, बल्कि उन्होंने अपने गांव में अन्य युवाओं को भी इस कार्य हेतु प्रेरित किया। वर्तमान में उनके साथ 2 अन्य लोग अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं, जो मत्स्य पालन की प्रक्रिया में सहायता करते हैं। उनका परिवार अब और बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठा रहा है। मछली पालन के साथ-साथ बकरी पालन प्रारंभ कर दिया है।

निष्कर्ष

श्री विवेकानंद भारती की यह सफलता यह दर्शाती है कि अगर युवा सही मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएं, तो मत्स्य पालन जैसे क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता और समृद्धि प्राप्त की जा सकती है। बायोफ्लॉक तकनीक के माध्यम से उन्होंने पर्यावरण-अनुकूल तरीके से मत्स्य पालन को न केवल अपने सपनों की पूर्ति का माध्यम बनाया, बल्कि गांव में एक प्रेरणा-स्त्रोत के रूप में भी अपनी पहचान बनाई। यह कहानी हर उस युवा के लिए प्रेरणा है जो नवाचार और परिश्रम के साथ आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देना चाहता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	1.60 लाख
वार्षिक आय	-	3.20 लाख
शुद्ध आय	-	1.60 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	2 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

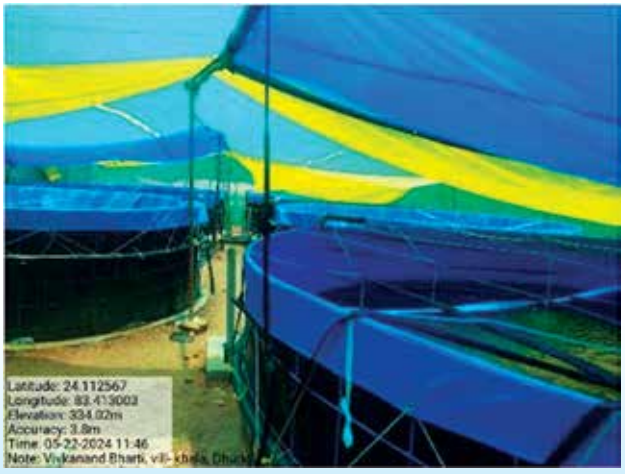

पिंजरे में सुनहरा सपना

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	मोहम्मद मुमताज़
मोबाईल	9631971352
जिला	गिरीडीह
राज्य	झारखंड
कोटि	सामान्य
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Installation of Cages in Reservoirs
कुल परियोजना लागत	15.00 लाख
अनुदान राशि	6.00 लाख

परिचय

मोहम्मद मुमताज़ झारखंड में गिरीडीह के रहने वाले हैं, और उनकी शैक्षणिक योग्यता 7वीं कक्षा तक है। उनकी सफलता की कहानी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और सरकार द्वारा प्रदान किए गए समर्थन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह कहानी दिखाती है कि कैसे एक व्यक्ति, सीमित शिक्षा के बावजूद, सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर और मछली पालन में नवीन तकनीकों को अपनाकर अपने जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है।

परियोजना की शुरुआत

मुमताज़ जी के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत सरकार से सहायता प्राप्त की। PMMSY भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक व्यापक योजना है जिसका उद्देश्य देश में मत्स्य पालन क्षेत्र का विकास करना है। इस योजना के तहत, मछली किसानों को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और बुनियादी ढांचा सहायता प्रदान की जाती है।

2020-21 में, मुमताज़ जी को जलाशयों में पिंजरे स्थापित करने के लिए 6.00 लाख रुपये की सब्सिडी मिली। पिंजरे में मछली पालन एक आधुनिक तकनीक है जिसमें मछलियों को जाल के पिंजरों में पाला जाता है जो पानी में डूबे रहते हैं। यह तकनीक मछली किसानों को कई लाभ प्रदान करती है, जिसमें बेहतर उत्पादन, आसान प्रबंधन और कम लागत शामिल है।

तकनीकी प्रगति और आय में वृद्धि

सब्सिडी से प्राप्त धन के साथ, मुमताज़ जी ने अपने मछली पालन कार्यों को आधुनिक बनाने में सक्षम थे। उन्होंने पिंजरे स्थापित किए, जिससे मछली पालन की उनकी क्षमता में काफी वृद्धि हुई। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर, उन्होंने पिंजरे में मछली पालन की नवीनतम तकनीकों और सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में भी ज्ञान प्राप्त किया।

तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप, मुमताज़ जी की मछली उत्पादन क्षमता में काफी वृद्धि हुई। योजना से पहले, वह प्रति कक्ष 1500 किलो मछली का उत्पादन कर रहे थे। हालाँकि, योजना के बाद, उनका वार्षिक मछली उत्पादन बढ़कर 7500 किलो हो गया। इस वृद्धि ने उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि की और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया।

सामाजिक प्रभाव

मुमताज़ की सफलता का उनके परिवार और समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उनके बच्चे, जो पहले शायद नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते थे, अब शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उनके परिवार ने वित्तीय स्थिरता हासिल कर ली है, जिससे उन्हें बेहतर जीवन स्तर मिला है।

इसके अलावा, मुमताज़ की सफलता ने अन्य समुदाय के सदस्यों को मछली पालन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया है। यह सकारात्मक प्रभाव कई गुना बढ़ रहा है, क्योंकि अधिक लोग इस लाभदायक गतिविधि में भाग लेते हैं, जिससे पूरे समुदाय का विकास होता है। मुमताज़ एक सहकारी समिति के सदस्य के रूप में भी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जो उनके समुदाय के विकास और कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

निष्कर्ष

मोहम्मद मुमताज़ की कहानी एक प्रेरणादायक उदाहरण है कि कैसे सरकारी योजनाएं, जब प्रभावी ढंग से लागू की जाती हैं, तो व्यक्तियों और समुदायों को गरीबी से बाहर निकाल सकती हैं और उन्हें आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकती हैं। यह कहानी उद्यमिता की भावना, नवीन तकनीकों को अपनाने और सरकार द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का लाभ उठाने के महत्व पर प्रकाश डालती है। मुमताज़ की सफलता न केवल उनके व्यक्तिगत विकास का प्रमाण है बल्कि ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन में मत्स्य पालन क्षेत्र की क्षमता का भी प्रमाण है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	4.60 लाख
वार्षिक आय	-	6.50 लाख
शुद्ध आय	-	1,90,000
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	7.50 क्विंटल	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

स्वस्थ मछलियाँ, समृद्ध किसान – नेहा की नयी राह

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	नेहा कुमारी वर्मा
मोबाईल	7979726130
जिला	गिरीडीह
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	Establishment of Disease diagnostic and quality testing labs
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

परिचय

गिरिडीह जिले के एक छोटे से कस्बे से आने वाली श्रीमती नेहा कुमारी वर्मा, अपने दृढ़ संकल्प, वैज्ञानिक सोच और समाज के प्रति समर्पण की मिसाल हैं। विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपने ज्ञान का उपयोग पारंपरिक मत्स्य पालन को एक नई दिशा देने में किया। नेहा जी ने महसूस किया कि क्षेत्र में मत्स्य पालकों को मछलियों की बीमारियों की पहचान, जांच और उपचार के लिए न तो वैज्ञानिक संसाधन उपलब्ध थे और न ही आवश्यक जानकारी। इस आवश्यकता को समझते हुए उन्होंने **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** (PMMSY) के अंतर्गत एक ऐसी पहल शुरू की, जो पूरे क्षेत्र के लिए वरदान साबित हो रही है।

परियोजना की शुरुआत

श्रीमती नेहा को यह विचार तब आया जब उन्होंने देखा कि मछली पालकों को अकसर मछलियों की अचानक मृत्यु, बीमारियों के फैलाव और उत्पादन में कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, परंतु उनके पास इसका कोई स्थायी समाधान नहीं होता। इस समस्या का समाधान विज्ञान और तकनीक के माध्यम से निकालने की सोच के साथ नेहा ने वर्ष 2023-24 में **"रोग निदान एवं गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशाला"** की स्थापना की योजना बनाई।

इस परियोजना की कुल लागत 25.00 लाख रुपए थी, जिसमें महिला कोटिलाभुक अंतर्गत नह को **15.00 लाख रुपए की राशि सरकार द्वारा अनुदान के रूप में प्रदान की गई**। शेष राशि उन्होंने अपने संसाधनों से जुटाई। प्रयोगशाला के लिए आधुनिक उपकरण, जांच किट्स, माइक्रोस्कोप और अन्य जरूरी सामग्री उपलब्ध कराई गई, जिससे मछलियों के विभिन्न रोगों का निदान और जल की गुणवत्ता का परीक्षण वैज्ञानिक विधि से किया जा सके।

इस प्रयोगशाला की स्थापना से मछलियों की बीमारियों

का वैज्ञानिक परीक्षण, शीघ्र निदान और उनके उपचार की प्रक्रिया अब स्थानीय स्तर पर ही संभव हो पाई है। यह पहल न केवल मछली पालकों को समय पर समाधान प्रदान कर रही है, बल्कि उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार ला रही है।

आर्थिक लाभ

योजना से पहले नेहा जी के पास कोई आय का स्रोत नहीं था, लेकिन इस परियोजना के कार्यान्वयन के बाद, अब उनकी **वार्षिक आय 1,50,000 रुपए तक पहुँच चुकी है**, जिसमें 70,000 से 80,000 रुपए तक का **शुद्ध लाभ** है। **ऑपरेशनल लागत 50,000 से 70,000** रुपए के बीच आती है, जो इस बात का प्रमाण है कि यह परियोजना आर्थिक दृष्टि से भी बेहद लाभकारी और टिकाऊ है। यह एक उदाहरण है कि सही दिशा में सरकारी सहायता मिलने पर किस तरह से आत्मनिर्भरता को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती नेहा की प्रयोगशाला ने गिरिडीह और आसपास के क्षेत्रों के अनेक मत्स्य पालकों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की है। उनकी सेवाओं के माध्यम से मछलियों की समय पर बीमारी की पहचान की जा रही है, जिससे:

- उत्पादन हानि में कमी आई है
- मछलियों की मृत्यु दर में भारी गिरावट आई है
- जल गुणवत्ता की निगरानी नियमित रूप से की जा रही है

9 किसानों को बीमारियों के लक्षण, रोकथाम और उपचार के बारे में प्रशिक्षण भी दिया गया है

नेहा ने क्षेत्रीय स्तर पर प्रशिक्षण सत्र और कार्यशालाओं का आयोजन कर किसानों को जैव सुरक्षा उपाय, जल परीक्षण तकनीक, और पोषण से संबंधित जानकारी भी प्रदान की है। इससे किसानों की जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस प्रयोगशाला में **सेरोलॉजिकल स्क्रीनिंग, स्वास्थ्य मूल्यांकन** और **बीमारी के कारण होने वाले आर्थिक नुकसान की रोकथाम** जैसे कार्य नियमित रूप से किए जा रहे हैं। इससे संपूर्ण मत्स्य उत्पादन चक्र अधिक सुरक्षित, टिकाऊ और लाभकारी बना है।

निष्कर्ष

श्रीमती नेहा कुमारी वर्मा की यह यात्रा एक उज्ज्वल उदाहरण है कि जब नारी प्रयास, सरकारी योजना और विज्ञान एक साथ मिलते हैं, तो समाज में चमत्कारिक परिवर्तन संभव है। उनकी लैब ने न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाया है, बल्कि आस-पास के गाँवों के मत्स्य पालकों को भी नया जीवन और विश्वास दिया है। मछलियों की समय रहते बीमारी की पहचान, उपचार और रोकथाम के कारण न केवल आर्थिक नुकसान रुका है, बल्कि मत्स्य पालन की उत्पादकता भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है।

"जहाँ विज्ञान, संकल्प और सेवा भाव एक साथ हों, वहाँ सफलता निश्चित होती है।"

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
परिचालन लागत	-	50,000 से 70,000 रुपए
वार्षिक आय	-	1,50,000 रुपए
शुद्ध आय	-	70,000 से 80,000 रुपए

बदलाव की लहर

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	शबनम जहाँ
मोबाईल	8789782016
जिला	गोड्डा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Biofloc -7 tanks
कुल परियोजना लागत	7.5 लाख
अनुदान राशि	4.5 लाख

परिचय:

श्रीमती शबनम जहाँ, गोड्डा जिला अंतर्गत ठाकुरगंगटी प्रखंड के देवनचक गाँव की रहने वाली एक ओबीसी वर्ग की महिला हैं। इन्होंने इन्टर तक शिक्षा प्राप्त की है और मछली पालन की शुरुआत वर्ष 2020 में की थी। पहले इनकी कोई निश्चित आय नहीं थी, लेकिन प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत इन्हें 2020-21 में "7 टैंक बायोफ्लॉक" परियोजना का लाभ मिला।

परियोजना की शुरुआत:

श्रीमती शबनम को इस योजना की जानकारी एक व्यक्ति के माध्यम से प्राप्त हुई, जिसके बाद उन्होंने बायोफ्लॉक तकनीक पर 5 दिन का प्रशिक्षण लिया। उन्हें योजना के अंतर्गत पंगासियस मछली के बीज, फैक्टरी में तैयार की गई फीड, दवाइयाँ, शेड नेट, बोरवेल, जनरेटर, एयरेटर आदि संसाधन उपलब्ध कराए गए। योजना के तहत उन्हें 4.50 लाख रुपए की सब्सिडी भी प्राप्त हुई, जिससे कुल 7.50 लाख रुपए की लागत वाली परियोजना शुरू की गई।

आर्थिक लाभ:

इस योजना के तहत श्रीमती शबनम साल में दो बार फसल ले रही हैं और लगभग 7000 किलोग्राम मछली का उत्पादन कर रही हैं। उनके प्रोजेक्ट की सालाना आय 3.36 लाख तक पहुँच गई है, जिसमें 2.46 लाख का संचालन खर्च है और शुद्ध लाभ 0.90 लाख है। इस परियोजना ने उनके परिवार की आय में लगभग 70% की वृद्धि की है, जिससे अब उनका परिवार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गया है।

सामाजिक प्रभाव:

श्रीमती शबनम की इस सफलता से अन्य किसानों को भी बायोफ्लॉक तकनीक अपनाने के लिए प्रेरणा मिली है।

वे अब दो लोगों को रोजगार दे रही हैं और स्वयं अन्य ग्रामीणों को मछली पालन का तकनीकी प्रशिक्षण भी दे रही हैं। इससे न केवल उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है, बल्कि समाज में महिला सशक्तिकरण का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत हुआ है।

निष्कर्ष:

शबनम जहाँ की सफलता यह सिद्ध करती है कि यदि सही मार्गदर्शन, संसाधन और योजनाओं का लाभ मिले, तो ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ भी आत्मनिर्भर बन सकती हैं। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना ने उन्हें न केवल एक सफल उद्यमी बनाया, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए प्रेरणा स्रोत भी बना दिया है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास, सिंघी
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	2.46 लाख
वार्षिक आय	-	3.36 लाख
शुद्ध आय	-	0.90 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	7 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

आत्मनिर्भरता की मिसाल बनीं सुषमा देवी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सुषमा देवी
मोबाईल	7488794787
जिला	गोड्डा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Mini Mills of production Capacity of 2 ton /Day
कुल परियोजना लागत	30.00लाख
अनुदान राशि	18.00 लाख

परिचय

झारखंड राज्य के गोड्डा जिले के कौरिबहियार गाँव की श्रीमती सुषमा देवी आज ग्रामीण महिला उद्यमिता की मिसाल बन चुकी हैं। सीमित शैक्षिक पृष्ठभूमि के बावजूद उन्होंने साहस, परिश्रम और दूरदृष्टि के साथ एक नया रास्ता चुना और प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के तहत मिनी फिश फीड मिल की स्थापना कर न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया, बल्कि अपने क्षेत्र के अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के नए अवसर उत्पन्न किए।

परियोजना की शुरुआत

श्रीमती सुषमा देवी ने वर्ष 2020-21 में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना का लाभ उठाकर मिनी फिश फीड मिल की स्थापना की। इस परियोजना के अंतर्गत उन्हें अत्याधुनिक मशीनें जैसे एक्सट्रूडर मशीन, ग्राइंडर, मिक्सर, स्क्रू कन्वेयर, स्टीम बॉयलर, रोटरी ड्रायर, कूलिंग टॉवर, बोरवेल और जनरेटर प्रदान किए गए। इसके साथ ही, मिल शेड और कच्चे माल की व्यवस्था भी की गई। कुल 30 लाख की लागत वाली इस परियोजना में सुषमा देवी को 18 लाख की सब्सिडी प्राप्त हुई, जिससे उन्हें एक ठोस शुरुआत मिल सकी।

आर्थिक परिवर्तन

इस परियोजना से पहले सुषमा देवी के पास कोई स्थायी आय का स्रोत नहीं था। लेकिन फिश फीड मिल शुरू होने के बाद उनकी प्रतिदिन उत्पादन क्षमता 1.5 से 2 टन तक पहुँच गई। उनकी मिल में मैश फ़ीड, 2 मिमी और 4 मिमी फ्लोटिंग फीड का उत्पादन किया जाता है, जो मछली पालन के लिए अत्यंत उपयोगी है। 10 टन फीड के उत्पादन पर

लगभग 4 लाख का खर्च आता है, जबकि उनकी मासिक आय 5 लाख के करीब पहुँच चुकी है। इस तरह सुषमा देवी को प्रतिमाह 1 लाख से अधिक की शुद्ध आय होने लगी है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती सुषमा देवी की यह सफलता सिर्फ उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह उनके गाँव और आस-पास के क्षेत्रों के लिए भी परिवर्तन का वाहक बनी है। उन्होंने अपनी मिल में 4 स्थानीय लोगों को स्थायी रोजगार दिया है, जिससे उनके परिवारों को भी आजीविका का नया स्रोत मिला है। उनकी फीड मिल से अब गोड्डा (झारखंड) और बांका (बिहार) जैसे क्षेत्रों तक फीड की आपूर्ति हो रही है, जिससे सैकड़ों मछली पालकों को गुणवत्तापूर्ण और सुलभ फीड उपलब्ध हो रही है।

निष्कर्ष

श्रीमती सुषमा देवी की यह प्रेरणादायक यात्रा यह साबित करती है कि अगर इच्छाशक्ति हो और सही मार्गदर्शन मिले, तो सीमित संसाधनों के बावजूद बड़ी उपलब्धियाँ संभव हैं। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना का सही उपयोग कर उन्होंने जो मुकाम हासिल किया है, वह देशभर की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देता है। श्रीमती सुषमा देवी आज ग्रामीण उद्यमिता, महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर भारत की जीती-जागती मिसाल बन चुकी हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
परिचालन लागत	-	4 लाख
मासिक आय	-	5 लाख
शुद्ध आय	-	1 लाख
परियोजना आउटपुट		
मासिक उत्पादन	10 टन	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

सूखी ज़मीन से सुनहरी मछलियों तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	मरांगमय सोरेन
मोबाईल	8295352583
जिला	गोड्डा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	New Rearing ponds
कुल परियोजना लागत	2.8 लाख
अनुदान राशि	1.68 लाख

परिचय :

झारखंड राज्य के गोड्डा जिले के छोटे से गाँव छोटा चटमपुर की निवासी **श्रीमती मरांगमय सोरेन**, जो एक अनुसूचित जनजाति वर्ग से हैं और औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाईं, ने अपने परिश्रम और सरकारी सहायता से एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। कभी बंजर ज़मीन पर खड़े होकर सपने देखने वाली मरांगमय आज सफल मत्स्य पालक हैं और कई अन्य ग्रामीणों के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं।

परियोजना की शुरुआत:

वर्ष 2020-21 में उन्हें **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के अंतर्गत **1.00 एकड़ में नया रियरिंग तालाब** बनाने की मंजूरी मिली। योजना के तहत उन्हें 1.68 लाख की सब्सिडी प्रदान की गई और परियोजना की कुल लागत 2.80 लाख रही। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया और आधुनिक तकनीकों, जैसे उत्तम गुणवत्ता के IMC बीज और फैक्टरी-निर्मित मछली चारा, का प्रयोग करना शुरू किया।

आर्थिक लाभ:

उन्होंने अपने कौशल को प्रशिक्षण और अनुभव से निखारा और अब बेहतर प्रबंधन द्वारा लागत को कम कर मुनाफा बढ़ा रही हैं।

सामाजिक प्रभाव:

श्रीमती मरांगमय सोरेन की पहल ने सिर्फ उनकी आर्थिक स्थिति को नहीं बदला, बल्कि उनके गाँव में भी सकारात्मक बदलाव लाया:

- तालाब से अब **खरीफ और रबी दोनों मौसमों में सिंचाई** की सुविधा संभव हो पाई है, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ी है।
- तालाब का उपयोग **गाँव के पशुओं के पानी पीने** और **गांव वालों के स्नान** के लिए भी हो रहा है।
- उनके कार्यों को देखकर गाँव के अन्य किसान भी मत्स्य पालन की ओर आकर्षित हुए हैं और आयवर्धन के लिए इस दिशा में सोचने लगे हैं।
- वे अब **तकनीकी सलाहकार** के रूप में भी जाने जाने लगी हैं और अन्य ग्रामीणों को मछली पालन सिखा रही हैं।
- उन्होंने भविष्य के लिए तालाब के किनारे **फलदार पेड़ लगाने की योजना** बनाई है, जिससे एक अतिरिक्त आय का स्रोत विकसित होगा।

निष्कर्ष:

श्रीमती मरांगमय सोरेन की कहानी इस बात का प्रमाण है कि अगर किसी को सही समय पर मार्गदर्शन और सहायता मिले, तो कोई भी बाधा उनकी प्रगति को नहीं रोक सकती। बंजर ज़मीन को उत्पादकता का केंद्र बना कर उन्होंने न सिर्फ अपनी जिंदगी बदली, बल्कि अपने पूरे समुदाय के लिए आशा की किरण बन गईं। उनकी यह सफलता कथा 'आत्मनिर्भर भारत' की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	1.3 लाख
वार्षिक आय	-	2.4 लाख
शुद्ध आय	-	1.1 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	1.2 टन	

गांव से ग्लोरी तक: मात्स्यिकी क्षेत्र में क्रांति की कहानी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	ज्योति लकड़ा
मोबाईल	7667029874
जिला	गुमला
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	M.A
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Mini Mills of production Capacity of 2 ton /Day
कुल परियोजना लागत	30.00 लाख
अनुदान राशि	18.00 लाख

परिचय:

झारखंड राज्य के गुमला जिले के बसिया प्रखंड के निवासी श्री ज्योति लकड़ा आज मत्स्य पालन के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध और प्रेरणादायक नाम बन चुके हैं। स्नातकोत्तर (एम.ए.) शिक्षित ज्योति जी ने न केवल अपनी शिक्षा का लाभ उठाया, बल्कि अपने साहस, परिश्रम और दूरदृष्टि के साथ एक नया मार्ग चुना। उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के तहत मिनी फिश फीड मिल की स्थापना कर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया और "ग्लोरी एग्रो इंटरप्राइजेज" नामक समूह का गठन कर 12 लोगों को इससे जोड़ा। उनके इस प्रयास से 12 परिवारों का सतत भरण-पोषण संभव हो सका है। आज वे न केवल आत्मनिर्भर बने हैं, बल्कि अपने क्षेत्र में रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम भी बन चुके हैं।

परियोजना की शुरुआत:

श्री लकड़ा ने वर्ष 2004 में तालाब लीज़ पर लेकर मछली पालन की शुरुआत की थी। वर्ष 2009 में जब वे जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला से जुड़े, तो उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिससे उनका व्यवसाय व्यवस्थित और संगठित रूप लेने लगा। वर्ष 2022-23 में उन्होंने PMMSY योजना के तहत मिनी फिश फीड मिल की स्थापना की।

इस परियोजना के अंतर्गत उन्हें अत्याधुनिक मशीनरी जैसे: एक्सट्रूडर मशीन, ग्राइंडर, मिक्सर, स्क्रू कन्वेयर, स्टीम बॉयलर, रोटरी ड्रायर, कूलिंग टॉवर, बोरवेल और जनरेटर प्रदान किए गए। साथ ही मिल शेड और कच्चे माल की व्यवस्था भी की गई। कुल 30.00 लाख रुपये लागत वाली इस परियोजना में उन्हें 18.00 लाख रुपये की सब्सिडी मिली, जिससे उन्हें एक सशक्त और स्थायी शुरुआत करने में सहायता मिली।

आर्थिक परिवर्तन:

परियोजना से पूर्व श्री लकड़ा की वार्षिक आय 2-3 लाख रुपये के बीच थी। मिल की स्थापना के बाद प्रतिदिन 1.5 से 2 टन उत्पादन होता है। अब फीड मिल में मैश फ़ीड, 2 मिमी और 4 मिमी फ्लोटिंग फीड का उत्पादन होता है, जो मछली पालन के लिए अत्यंत उपयोगी है। मासिक उत्पादन अब लगभग 10 टन तक पहुंच चुका है, जिससे उन्हें हर महीने 60,000 से 70,000 तक का शुद्ध लाभ होने लगा है। यह परिवर्तन न केवल उनकी आय में गुणात्मक वृद्धि का प्रतीक है, बल्कि ग्रामीण उद्यमिता की शक्ति को भी दर्शाता है।

सामाजिक प्रभाव:

"ग्लोरी एग्रो इंटरप्राइजेज" ने समेकित कृषि मॉडल के तहत ग्रामीण आजीविका और सतत विकास को सशक्त बनाया है। इस समूह में 12 सक्रिय सदस्य कार्यरत हैं, जिन्होंने क्लस्टर मॉडल में एक ही स्थान पर 16 तालाबों का निर्माण कर मत्स्य पालन के साथ-साथ अन्य पशुपालन गतिविधियों को भी अपनाया है। इससे क्षेत्र में समेकित मत्स्य पालन को बढ़ावा मिला है।

इसके अतिरिक्त, श्री लकड़ा ने अपनी मिल में 4 स्थानीय व्यक्तियों को स्थायी रोजगार प्रदान किया है, जिससे उनके परिवारों को आर्थिक स्थिरता मिली है। आज उनकी फीड मिल से गुमला और सिमडेगा जैसे आस-पास के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण फिश फीड की आपूर्ति हो रही है, जिससे सैकड़ों मछली पालकों को लाभ मिल रहा है।

भविष्य की योजना:

"ग्लोरी एग्रो इंटरप्राइजेज" की अगली योजना है:

- बायोफ्लॉक तालाब का निर्माण
- आरएएस (Recirculatory Aquaculture System) की स्थापना
- हैचरी यूनिट का विकास तथा एक प्रशिक्षण भवन की स्थापना

इन पहलुओं का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को मत्स्य पालन में प्रशिक्षित कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना और शहरी पलायन को रोकना है।

निष्कर्ष:

श्री ज्योति लकड़ा और "ग्लोरी एग्रो इंटरप्राइजेज" की यह यात्रा इस बात का जीवंत प्रमाण है कि यदि इच्छाशक्ति, मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग हो, तो ग्रामीण भारत में भी सशक्त, आत्मनिर्भर और उद्यमशील समाज की कल्पना को साकार किया जा सकता है। उनका यह प्रयास न केवल मत्स्य पालन के क्षेत्र में क्रांति ला रहा है, बल्कि सामूहिक विकास का एक आदर्श उदाहरण भी बन चुका है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
परिचालन लागत	-	1.3 लाख
मासिक आय	-	2 लाख
शुद्ध आय	-	60-70 हज़ार
परियोजना आउटपुट		
मासिक उत्पादन	10 टन	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

बायोफ्लॉक तालाब से सघन मछली पालन

लाभुक की विवरणी	
लाभुक का नाम	धर्मदासी तिग्गा
मोबाईल	9399672824
जिला	गुमला
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Non-Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	बायोफ्लॉक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

श्रीमती धर्मदासी तिग्गा, जो गुमला जिले के जारी प्रखण्ड की निवासी हैं, ने अपनी मेहनत और नयी सोच से एक प्रेरणादायक सफलता की कहानी लिखी है। गाँव में उनका घर 2 तालाबों से घिरा हुआ है, और मत्स्य पालन में उनकी शुरू से ही गहरी रुचि थी। इसी रुचि के चलते, श्रीमती धर्मदासी ने रांची जाकर 3 बार मत्स्य पालन संबंधित पाँच दिवसीय प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के दौरान, उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी मिली, जो उनके जीवन का turning point साबित हुई। PMMSY की 47 योजनाओं ने एक साधारण गृहिणी को एक उद्यमी महिला बनने का सपना दिखाया। इस योजना की जानकारी मिलने के बाद, श्रीमती धर्मदासी ने विस्तार से PMMSY योजनाओं के बारे में जानकारी हासिल की और इसे अपने जीवन में लागू करने का संकल्प लिया।

श्रीमती धर्मदासी ने प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, अपने पति श्री दीपक तिग्गा से इस योजना के बारे में चर्चा की और दोनों ने मिलकर जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला से संपर्क किया एवं बायोफ्लॉक तालाब का लाभ लेकर काम करने का निश्चय किया। उन्होंने सारी प्रक्रियाएं पूरी कर, PMMSY के लाभार्थियों की सूची में अपना नाम दर्ज कराया। अब श्रीमती धर्मदासी तिग्गा, PMMSY योजना का लाभ उठाकर नीली क्रांति की दिशा में कदम बढ़ा चुकी हैं।

बायोफ्लॉक तालाब के निर्माण की पहल

श्रीमती धर्मदासी तिग्गा को वित्तीय वर्ष 2023–24 के अंतर्गत, ST कोटी में 60% अनुदान पर 8.40 लाख रुपए की सहायता प्राप्त हुई, जबकि उनकी कुल परियोजना लागत 14.00 लाख रुपए थी। यह कदम उनके लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

इस सहायता के साथ ही धर्मदासी जी ने अपनी योजना को धरातल पर उतारने के लिए कदम बढ़ाया एवं फरवरी 2024 तक गुमला जिले के जारी प्रखण्ड के कितम गाँव में तालाब का निर्माण करवा लिया। इस तालाब में 5000 तिलापिया प्रजाति की मत्स्य अंगुलिकाओं का संचयन कर, कार्य की शुरुआत की। उनके द्वारा किए गए इस कदम ने न केवल उनके लिए एक नया व्यवसाय खोला, बल्कि इलाके में मत्स्य पालन को भी एक नई दिशा दी।

आर्थिक लाभ

श्रीमती धर्मदासी तिग्गा ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत प्राप्त वित्तीय और तकनीकी सहायता का सही उपयोग करते हुए अपने व्यवसाय को सफलता की ओर अग्रसर किया। मत्स्य विभाग, झारखंड एवं जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला से मिले मार्गदर्शन के बाद, श्रीमती धर्मदासी ने 2024 तक अपने मत्स्य पालन व्यवसाय से लगभग 6 टन मछली का वार्षिक उत्पादन किया।

इस उत्पादन से उन्हें 3 लाख रुपए की आय प्राप्त हुई, जो उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लेकर आई। इस सफलता ने न केवल उनके व्यवसाय को मजबूत किया, बल्कि उन्हें स्थिर और लाभकारी आय का स्रोत प्रदान किया है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती धर्मदासी तिग्गा की सफलता ने न केवल उनके परिवार की जीवनशैली में सुधार किया, बल्कि उनके गाँव और समुदाय पर भी एक गहरा सामाजिक प्रभाव डाला है कि ग्रामीण महिलाएं केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं रहतीं, वे अपने मेहनत और संघर्ष से समाज में बदलाव ला सकती हैं। पहले एक सामान्य गृहिणी थी, अब एक सफल उद्यमी महिला। श्रीमती धर्मदासी ने यह साबित कर दिया कि सही अवसर और मार्गदर्शन से कोई भी महिला अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकती है। उनकी पहल ने गाँव में महिलाओं को यह आत्मविश्वास दिया कि वे भी खुद को सक्षम बना सकती हैं और अपने परिवार के लिए आर्थिक समर्थन जुटा सकती हैं।

उनके इस प्रयास ने स्थानीय समुदाय को प्रेरित किया और नीली क्रांति की दिशा में एक नया कदम बढ़ाया।

निष्कर्ष

श्रीमती धर्मदासी तिग्गा के सफलता की ओर बढ़ते कदम ने, उनके परिवार, गाँव और सम्पूर्ण समुदाय को एक सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव के प्रति अग्रसर किया है। उनके द्वारा उठाए गए कदमों ने न केवल एक उद्यमी महिला की छवि को सशक्त किया, बल्कि उनके गाँव में मत्स्य पालन के क्षेत्र में भी सामाजिक और आर्थिक विकास को नया आयाम दिया है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	1.00 लाख
वार्षिक आय	-	4.00 लाख
शुद्ध आय	-	3.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6 टन	
रोजगार	2 व्यक्ति	

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना से श्री संतोष बेक का सशक्तिकरण

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	संतोष बेक
मोबाईल	7260868092
जिला	गुमला
राज्य	झारखंड
कोटि	अनुसूचित जनजाति
योग्यता	matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	बॉयोफ्लॉक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय:

श्री संतोष बेक, पिता स्व० मुलाकी बेक, गुमला जिले के सिसई प्रखंड के निवासी हैं। वह एक साधारण, मध्यम वर्गीय परिवार से ताल्लुक रखते हैं और उनकी शैक्षिक योग्यता केवल मैट्रिक (10वीं कक्षा) तक ही है। परिवार का पालन-पोषण वह किसी तरह अपनी मेहनत से करते थे, लेकिन आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि उनके लिए भविष्य को लेकर कोई खास आशा नहीं थी। अपने जीवन के इस कठिन दौर में श्री संतोष को एक नई दिशा मिली, जब उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी मिली।

योजना का आरंभ:

श्री संतोष को इस योजना के बारे में सिसई प्रखंड के मत्स्य मित्र श्री दिलीप महली के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई। इसके बाद उन्हें जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला, जहां उन्होंने मत्स्य पालन और संबंधित तकनीकी जानकारी प्राप्त की। यह प्रशिक्षण उनके जीवन में एक नया मोड़ लेकर आया। प्रशिक्षण के बाद श्री संतोष ने जिला मत्स्य कार्यालय से सहायता प्राप्त की और प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत बॉयोफ्लॉक तालाब के लिए आवेदन किया। इस योजना के तहत उन्हें 14 लाख रुपये की कुल परियोजना लागत में से 60 प्रतिशत यानी 8.40 लाख रुपये का अनुदान तथा राज्य सरकार से 3.50 लाख रुपये स्टेट टॉप अप की अतिरिक्त सहायता मिली।

आर्थिक लाभ:

श्री संतोष बेक ने बॉयोफ्लॉक तालाब में मछली पालन की शुरुआत की और जल्द ही यह व्यवसाय उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बना गया। वह प्रतिमाह लगभग 6 क्विंटल मछली की बिक्री करते हैं, जिससे उनकी मासिक आय लगभग 7.2 लाख रुपये तक पहुँच गई है। इस व्यवसाय ने न केवल उनकी

वित्तीय स्थिति को मजबूत किया, बल्कि उनके परिवार के लिए एक स्थिर और निरंतर आय का स्रोत भी बना। अब वह अपने परिवार की आवश्यकताओं को आसानी से पूरा कर पा रहे हैं और आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो चुके हैं।

सामाजिक प्रभाव:

श्री संतोष की सफलता न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन लेकर आई, बल्कि उनके आसपास के समुदाय में भी एक सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस व्यवसाय के माध्यम से उन्होंने न केवल अपने परिवार को बेहतर जीवन दिया, बल्कि उनके व्यवसाय से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी सृजित हुए हैं। अब कई लोग मछली पालन के व्यवसाय में रुचि लेने लगे हैं और श्री संतोष उनके लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गए हैं। उनका यह उदाहरण समाज में यह संदेश देता है कि सही मार्गदर्शन और मेहनत से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को बदल सकता है और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

निष्कर्ष:

श्री संतोष बेक की सफलता यह सिद्ध करती है कि सही दिशा और मार्गदर्शन से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को संवार सकता है, चाहे वह किसी भी समुदाय से ताल्लुक रखता हो। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत बॉयोफ्लॉक तालाब स्थापित करके उन्होंने न केवल अपनी आय में वृद्धि की, बल्कि अपने समुदाय को भी सशक्त किया। उनकी यह कहानी दिखाती है कि यदि इरादे मजबूत हों और मेहनत में विश्वास हो, तो किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है। आज श्री संतोष न केवल अपने परिवार के लिए एक आदर्श बन चुके हैं, बल्कि उन्होंने आदिवासी समाज में भी एक प्रेरणा का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	4.50 लाख
वार्षिक आय	-	7.20 लाख
शुद्ध आय	-	2.50 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

अनुदान से उद्यम तक: दुलारी देवी की उन्नति

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	दुलारी देवी
मोबाईल	7260868092
जिला	गुमला
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	Mini Mills of production Capacity of 2 ton /Day
कुल परियोजना लागत	30.00 लाख
अनुदान राशि	18.00 लाख

परिचय

झारखंड के गुमला जिले के बसिया प्रखंड में रहने वाली **श्रीमती दुलारी देवी** की जिंदगी कभी साधारण थी—एक मध्यमवर्गीय परिवार, सीमित आय और जिम्मेदारियों से भरा जीवन। इंटरमीडिएट तक पढ़ाई करने के बाद वे अपने पति श्री प्रकाश पाइक के साथ मिलकर घर-परिवार की जिम्मेदारियाँ निभा रही थीं। जीवन की छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए भी उन्हें कई बार संघर्ष करना पड़ता था। लेकिन समय ने करवट ली और इस कठिन दौर में **प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना** (PMMSY) उनके जीवन में उम्मीद की एक किरण बनकर आई।

योजना की शुरुआत

वर्ष 2022-23 में, दुलारी देवी को अपने ही प्रखंड के एक लाभार्थी, श्री ज्योति लकड़ा से इस योजना की जानकारी मिली। यह जानकारी मात्र एक सूचना नहीं थी, बल्कि एक अवसर था- अपने सपनों को आकार देने का। उन्होंने तुरंत जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला से संपर्क साधा और योजना की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। राँची जाकर उन्होंने **मत्स्य पालन और फिश फीड निर्माण** से जुड़ी तकनीकी प्रशिक्षण में हिस्सा लिया। प्रशिक्षण ने उन्हें न केवल तकनीकी जानकारी दी, बल्कि आत्मविश्वास से भी भर दिया। अब वे तैयार थीं एक नए सफर पर निकलने के लिए।

वर्ष 2023-24 में दुलारी देवी ने **फिश फीड मिल (2 टन प्रतिदिन)** की स्थापना हेतु आवेदन किया। इस परियोजना की कुल लागत 30.00 लाख थी, जिसमें उन्हें **18 लाख की अनुदान राशि** और **7.50 लाख राज्य स्तरीय टॉप-अप** के रूप में सहायता प्राप्त हुई। दुलारी देवी को पहले से स्थापित एक फिश फीड मिल का भ्रमण कराया गया, जिससे उन्हें व्यावहारिक समझ विकसित करने में मदद मिली। इसके बाद, उन्होंने पूरी लगन और मेहनत से अपना व्यवसाय शुरू किया - एक ऐसा व्यवसाय जिसने न

केवल उनके जीवन की दिशा बदली, बल्कि पूरे समुदाय को एक नई सोच दी।

आर्थिक लाभ

आज दुलारी देवी हर महीने **लगभग 40 टन फिश फीड** का उत्पादन और बिक्री कर रही हैं। इससे उन्हें हर माह **1 लाख से 1.50 लाख तक की आय** हो रही है। अब वे एक **स्थिर आमदनी वाली सफल महिला उद्यमी** बन चुकी हैं। उनकी आर्थिक स्थिति पहले से कहीं अधिक मजबूत है, और वे अपने परिवार की जरूरतों को अब आत्मविश्वास से पूरा कर पा रही हैं। इतना ही नहीं, वे अब अपने व्यवसाय के विस्तार की योजना भी बना रही हैं।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती दुलारी देवी की यह यात्रा सिर्फ एक व्यक्तिगत सफलता नहीं है, बल्कि यह समाज के लिए एक **मजबूत संदेश** है—**जब कोई महिला आगे बढ़ती है, तो समाज भी उसके साथ आगे बढ़ता है।**

उनकी फिश फीड मिल से आसपास के लोगों को भी रोजगार मिला है। कई महिलाएं, जो कभी असमंजस में थीं, अब स्वरोजगार की राह पर चलने के लिए प्रेरित हो रही हैं। दुलारी देवी अब अपने गांव की महिलाओं के लिए **प्रेरणा स्रोत** बन चुकी हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती दुलारी देवी की सफलता की कहानी इस बात का प्रमाण है कि **सही मार्गदर्शन, सरकारी सहयोग और व्यक्तिगत मेहनत** से कोई भी अपने जीवन को नई दिशा दे सकती है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत मिली सहायता से उन्होंने **स्वरोजगार, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक प्रभाव** तीनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है।

उनकी यह यात्रा यह भी दर्शाती है कि योजनाएं तभी सफल होती हैं जब जमीनी स्तर पर उन्हें अपनाकर कार्यान्वित किया जाए। आज दुलारी देवी न सिर्फ एक सफल उद्यमी हैं, बल्कि **महिला सशक्तिकरण की सजीव मिसाल** भी हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
परिचालन लागत	-	70-80,000
मासिक आय	-	1-1.5 लाख
शुद्ध आय	-	0-50 -0.60 लाख
परियोजना आउटपुट		
मासिक उत्पादन	40 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

तालाब से तरक्की तक : सफलता की नई परिभाषा

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	श्रीमती चरकी देवी, बबीता देवी, और प्रीति कुमारी
मोबाईल	9308650492 6284881478 9110044193
जिला	गुमला
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला एवं ST
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	Construction of New Grow-out
कुल परियोजना लागत	7.00 लाख
अनुदान राशि	4.20 लाख

परिचय

गुमला जिले के बसिया प्रखंड की तीन साधारण गृहिणियां **श्रीमती चरकी देवी, बबीता देवी, और प्रीति कुमारी,** कभी अपने परिवार की जीविका के लिए केवल पारंपरिक खेती पर निर्भर थीं। सीमित संसाधनों और आय के चलते वे आर्थिक रूप से कमजोर थीं और आत्मनिर्भरता केवल एक सपना भर लगती थी। लेकिन एक दिन एक समाचार पत्र में छपी एक खबर ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के बारे में पढ़ा और इससे जुड़ी विस्तृत जानकारी के लिए जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला से संपर्क किया। वहां उन्हें बताया गया कि इस योजना के तहत देशभर में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए 47 उप-योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन महिलाओं ने समझा कि यह योजना न सिर्फ रोजगार का साधन बन सकती है, बल्कि गांव से शहर की ओर हो रहे पलायन को भी रोक सकती है।

योजना की शुरुआत

तीनों महिलाओं ने मिलकर **क्लस्टर मॉडल** के तहत एक ही स्थान पर तालाब निर्माण करने का निर्णय लिया, जिससे बड़े पैमाने पर मत्स्य उत्पादन हो ओर थोक में बाजार मे बिक्री कियाजा सके । जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला की मदद से महिला लाभार्थी के रूप में उनका चयन हुआ और प्रत्येक महिला को 7 लाख की कुल लागत पर 60% सरकारी अनुदान प्राप्त हुआ। यह उनके लिए एक नई शुरुआत थी - आत्मनिर्भर बनने की ओर पहला कदम।

आर्थिक लाभ

तालाब निर्माण के पश्चात उन्होंने मत्स्य पालन का कार्य आरंभ किया। आज, एक तालाब से प्रति वर्ष 6 टन मछली का उत्पादन कर रही हैं और इस व्यवसाय से उन्हें सालाना प्रति तालाब से 4 से 5 लाख रुपये तक का शुद्ध लाभ हो रहा

है। पहले जहां घर का खर्च चलाना मुश्किल होता था, अब वे न केवल खुद आत्मनिर्भर हुई हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार देने की स्थिति में आ गई हैं।

सामाजिक प्रभाव

इन तीनों महिलाओं की सफलता ने पूरे गांव में एक नई ऊर्जा और विश्वास का संचार किया है। अब गांव की अन्य महिलाएं भी इनसे प्रेरणा लेकर मत्स्य पालन, बकरी पालन और अन्य स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ा रही हैं। गांव में रोजगार के अवसर बढ़े हैं और शहरी पलायन में भी कमी आई है।

भविष्य की योजना: विकास की नई दिशा की ओर

श्रीमती प्रीति कुमारी, चरकी देवी और बबीता देवी अब केवल मछली पालन तक सीमित नहीं रहना चाहतीं। उनकी सफलता ने उन्हें आगे बढ़ने और अपने व्यवसाय को विस्तार देने की नई प्रेरणा दी है। आने वाले समय में इनकी योजनाएं कुछ इस प्रकार हैं:

1. मत्स्य पालन का विस्तार

वे अपने वर्तमान तालाबों की क्षमता बढ़ाकर अतिरिक्त तालाबों का निर्माण करना चाहती हैं, ताकि उत्पादन को 5 से 6 टन प्रतिवर्ष तक ले जाया जा सके। इसके लिए वे आधुनिक तकनीकों जैसे बायोफ्लॉक और रिसर्क्युलेटिंग एक्वाकल्चर सिस्टम (RAS) को अपनाने की योजना बना रही हैं।

2. मत्स्य बीज उत्पादन

अब ये महिलाएं अपने गांव में ही नर्सरी तालाब का निर्माण कर मत्स्य बीज उत्पादन करने की योजना बना रही हैं, जिससे बीज के लिए बाहरी निर्भरता कम होगी और अन्य ग्रामीणों को भी लाभ मिलेगा।

3. प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन इकाई

वे मछलियों के प्रसंस्करण, पैकिंग और ब्रांडिंग के लिए एक छोटी यूनिट शुरू करना चाहती हैं, जिससे मछलियों की बिक्री केवल थोक में नहीं, बल्कि बाजार में खुदरा मूल्य पर ब्रांड के रूप में की जा सके।

4. महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) का गठन

वे गांव की **अन्य महिलाओं को जोड़कर एक सशक्त महिला स्वयं सहायता समूह** बनाना चाहती हैं, जिससे सामूहिक रूप से अन्य महिलाओं को भी रोजगार के अवसर मिलें और वे आत्मनिर्भर बन सकें।

निष्कर्ष:

इन महिलाओं की भविष्य की योजनाएं दर्शाती हैं कि वे न केवल अपने व्यवसाय को आगे ले जाना चाहती हैं, बल्कि पूरे समाज को साथ लेकर चलने में विश्वास रखती हैं। उनका सपना है कि उनका गांव आत्मनिर्भर बने और हर महिला सशक्त होकर अपनी पहचान खुद बना सके। श्रीमती प्रीति, चरकी और बबीता देवी की यह यात्रा केवल एक व्यवसायिक सफलता नहीं, बल्कि नारी सशक्तिकरण, ग्राम विकास और आत्मनिर्भर भारत की सजीव मिसाल है। यह कहानी साबित करती है कि यदि सही जानकारी, मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं का साथ मिले, तो कोई भी महिला अपने सपनों को साकार कर सकती है। आज ये महिलाएं न केवल अपने घर की रीढ़ हैं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प, तिलपिया, चाइनीज कार्प
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	3.0 लाख प्रति तालाब
वार्षिक आय	-	6 लाख प्रति तालाब
शुद्ध आय	-	4-5 लाख प्रति तालाब
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6.00 टन प्रति तालाब	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

बायोफ्लॉक से बदलाव की क्रांति

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	दुलारूस कूजूर
मोबाईल	9693051872
जिला	गुमला
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	बायोफलॉक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

गुमला जिले के एक सुदूरवर्ती गाँव में रहने वाले श्री **दुलारूस कुजूर**, एक साधारण किसान परिवार से ताल्लुक रखते हैं। पारंपरिक कृषि पर निर्भर रहते हुए वे अपने परिवार की सीमित आमदनी से जूझ रहे थे। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती थी – एक स्थायी और सम्मानजनक आजीविका का निर्माण, जो न केवल उनकी जिंदगी में बदलाव लाए, बल्कि समुदाय को भी लाभ पहुँचा सके।

वर्ष **2023** में, श्री दुलारूस को **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के बारे में जानकारी मिली, जो मछली पालन को बढ़ावा देने और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम है। अनुसूचित जनजाति वर्ग से होने के कारण उन्हें इस योजना के तहत विशेष प्रोत्साहन मिला।

वित्तीय वर्ष **2023-24** में **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** अंतर्गत श्री कुजूर ने बायोफ्लॉक तकनीक पर आधारित बायोफलॉक तालाब स्थापित करने का निर्णय लिया। उन्हे इस कार्य के लिए मत्स्य विभाग द्वारा अनुसूचित जनजाति कोटिके तहत 60% अनुदान पर बायोफलॉक तालाब योजना का लाभ दिया गया। उन्हे आर्थिक समर्थन के तौर पर 8.40 लाख रुपए अनुदान राशि का लाभ दिया गया जिसकी कुल परियोजना लागत 14 लाख रुपए थी। यह तकनीक सीमित स्थान में अधिक उत्पादन की क्षमता रखती है।

जिला मत्स्य कार्यालय, गुमला द्वारा श्री दुलारूस को **बायोफ्लॉक तकनीक, जल गुणवत्ता प्रबंधन, और मछली स्वास्थ्य देखरेख** पर व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस वैज्ञानिक प्रशिक्षण ने उन्हें पारंपरिक खेती से एक आधुनिक मत्स्य व्यवसायी में रूपांतरित कर दिया।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास एवं तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	1 लाख
वार्षिक आय	-	3 लाख
शुद्ध आय	-	2 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	1 टन	
रोज़गार	1 व्यक्ति	

वर्तमान में श्री दुलारूस कुजूर बायोफ्लॉक प्रणाली से **प्रति वर्ष लगभग 10 क्विंटल मछली** का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे उन्हें **₹2 लाख से अधिक की वार्षिक आय** हो रही है। उनका उद्यम:

- आर्थिक आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुका है
- गाँव में स्थानीय रोजगार के अवसर उत्पन्न कर रहा है
- युवाओं को **मत्स्य पालन व्यवसाय** अपनाने की प्रेरणा दे रहा है

श्री कुजूर की सफलता से पूरे गाँव में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ है। अब अनेक युवा और किसान मत्स्य पालन के प्रति रुचि दिखा रहे हैं

PMMSY और अन्य सरकारी योजनाओं के बारे में सक्रिय रूप से जानकारी ले रहे हैं

प्रशिक्षण लेने और स्वयं का उद्यम शुरू करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं

दुलारूस कुजूर की कहानी यह सिद्ध करती है कि सरकारी योजनाओं का सही उपयोग, समर्पण और प्रशिक्षण के साथ मिलकर ग्रामीण भारत में आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। वे अब सिर्फ एक सफल मत्स्य पालक नहीं, बल्कि गुमला जिले में आशा, प्रेरणा और नवाचार के प्रतीक बन चुके हैं। उनकी कहानी उन हजारों ग्रामीण युवाओं के लिए एक सबक है – **"यदि अवसर मिले और संकल्प हो, तो कोई भी बदलाव संभव है।"**

बायोफ्लॉक से व्यवसाय तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	अजीत गंझू
मोबाईल	7856863925
जिला	हजारीबाग
राज्य	झारखंड
कोटि	SC
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	BIOFLOC POND
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले के रहने वाले श्री अजीत गंझू, एक मेहनती और दूरदर्शी किसान हैं। समाज के अनुसूचित जाति वर्ग से आने वाले अजीत जी ने केवल 10वीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की थी, लेकिन उन्होंने अपने जीवन में कुछ बड़ा करने का सपना देखा था। पहले उनकी आय का कोई सुनिश्चित साधन नहीं था, और आजीविका चलाना एक बड़ी चुनौती थी।

परियोजना की शुरुआत

वित्तीय वर्ष 2020-21 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत उन्हें "बायोफ्लॉक तालाब" परियोजना के लिएअनुसूचित जाति कोटिके अंतर्गत चुना गया। इस योजना के अंतर्गत 14.00 लाख रुपए की लागत वाली परियोजना पर 8.40 लाख रुपए (60%) की सब्सिडी प्रदान की गई। इस सहायता से उन्होंने बायोफ्लॉक प्रणाली पर आधारित तालाब की स्थापना की, जिसमें मोनोसेक्स तिलापिया और पंगास जैसी मछलियों का पालन शुरू किया गया।

आर्थिक लाभ

इससे पहले अजीत जी की कोई स्थायी आय नहीं थी। इस परियोजना के माध्यम से अब वे प्रति वर्ष एक बार मछली की निकासी कर पा रहे हैं। वर्तमान में उनके मत्स्य पालन

का परिचालन व्यय लगभग 5 लाख है, और इससे उन्हें 7 लाख की वार्षिक आय होता है। परियोजना से शुद्ध लाभ 3 लाख प्रति वर्ष है। यह उनके जीवन में एक बड़ा आर्थिक परिवर्तन है।

सामाजिक प्रभाव

इस परियोजना से न केवल अजीत जी की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, बल्कि उनके आत्मविश्वास और सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि हुई है। उन्होंने अपने गांव के अन्य लोगों के लिए भी एक प्रेरणा का कार्य किया है। अब वह अन्य ग्रामीणों को भी बायोफ्लॉक प्रणाली और मत्स्य पालन के प्रति जागरूक कर रहे हैं।

निष्कर्ष

श्री अजीत गंझू की यह सफलता दर्शाती है कि यदि इच्छाशक्ति हो और सरकार की योजनाओं का सही उपयोग किया जाए, तो सीमित संसाधनों के बावजूद भी व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सकता है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना ने उन्हें एक नया जीवन दिया है और आज वह अपने परिवार के साथ एक सम्मानजनक और सुरक्षित जीवन जी रहे हैं। यह कहानी ग्रामीण भारत में परिवर्तन की एक मिसाल है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	5 लाख
वार्षिक आय	-	7 लाख
शुद्ध आय	-	2 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	5-6 टन	
रोज़गार	1 व्यक्ति	

जल से जीवन की ओर : एक वाहन चालक से सफल मत्स्य उद्यमी तक

लाभुक की विवरणी	
लाभुक का नाम	पिंटू कुमार यादव
मोबाईल	9798807075
जिला	हजारीबाग
राज्य	झारखंड
कोटि	General
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	जलाशयों में केज कल्चर
कुल परियोजना लागत	24.00 लाख
अनुदान राशि	9.60 लाख

परिचय

श्री पिंटू कुमार यादव, हजारीबाग जिले के एक मेहनती और कर्मठ निवासी, पहले एक सामान्य वाहन चालक के रूप में कार्य करते थे तथा अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे। हालांकि, वे हमेशा कुछ नया करने की चाह और जीवन में आगे बढ़ने की ललक रखते थे। यही जज्बा उन्हें वर्ष 2018 में मत्स्य विभाग से जोड़ लाया और उन्होंने मत्स्य पालन के क्षेत्र में कदम रखा।

उनकी मेहनत और सीखने की इच्छाशक्ति रंग लाई जब वर्ष 2021–22 में उन्हें मत्स्य विभाग द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) की जानकारी दी गई। यह योजना उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ लेकर आई। तिलैया जलाशय के विस्थापित लाभार्थी होने के कारण उन्हें इस योजना के अंतर्गत जलाशयों में केज कल्चर का लाभ प्रदान किया गया।

इस सहायता के माध्यम से श्री यादव ने मत्स्य पालन के क्षेत्र में व्यावसायिक रूप से कार्य करना शुरू किया और अपनी आजीविका को एक नई दिशा दी। केज कल्चर तकनीक अपनाकर उन्होंने अपनी आमदनी में वृद्धि की और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया।

आज श्री पिंटू कुमार यादव एक सफल मत्स्य उद्यमी हैं, जो अपने प्रयासों से न केवल स्वयं का बल्कि अपने जैसे कई अन्य युवाओं के लिए भी प्रेरणा बन चुके हैं। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना ने उनके सपनों को नई उड़ान दी है और उन्हें आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर किया है।

जलाशयों में केजों के निर्माण कि पहल

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2021–22 में श्री पिंटू कुमार यादव ने मत्स्य पालन के क्षेत्र में एक नई पहल करते हुए जलाशयों में केज कल्चर (Cage Culture) योजना का लाभ उठाया। सामान्य वर्ग के अंतर्गत उन्हें 40% अनुदान पर 7'*5'*5' मी0 आकार के कुल 08 केजों का लाभ मिला जिसकी कुल परियोजना लागत ₹24.00 लाख थी, जिसमें से श्री यादव को ₹9.60 लाख की अनुदान राशि प्राप्त हुई।

उन्होंने हजारीबाग के बुंडू गांवा के तिलैया जलाशय में केज आधारित मत्स्य पालन की सफल शुरुआत की। विभाग द्वारा उन्हे प्रोत्साहन के रूप मे केज के साथ-साथ 20,000 अंगुलिकाएं (तिलपिया एवं पंगास) उपलब्ध कराई गईं तथा मछलियों के पोषण हेतु 500 किलोग्राम प्री–स्टार्टर, स्टार्टर तथा ग्रोअर फॉर्मूलेटेड फीड भी प्रदान की गई।

इस योजना के माध्यम से श्री पिंटू कुमार यादव को न केवल एक सशक्त आजीविका का माध्यम मिला, बल्कि उन्होंने आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में भी एक सशक्त कदम बढ़ाया। उनकी यह सफलता यह सिद्ध करती है कि सरकार की योजनाएं, यदि सही दिशा में लागू की जाएं, तो यह ग्रामीण युवाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं।

आर्थिक लाभ

श्री पिंटू ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि अवसर और सही मार्गदर्शन मिले तो कोई भी व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सकता है। उन्हें विभाग की योजना के अंतर्गत प्रारंभिक आर्थिक सहायता प्रदान की गई, जिससे उनके उद्यम की नींव मजबूत हुई।

तकनीकी क्षमता के विकास के लिए विभाग ने उन्हें **मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, रांची** भेजा, जहाँ उन्होंने **पाँच दिवसीय विशेष केज कल्चर प्रशिक्षण** निःशुल्क प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण ने उनके ज्ञान और कौशल को नई दिशा दी।

प्रशिक्षण के उपरांत श्री पिंटू ने मछली पालन को एक व्यवसायिक अवसर के रूप में अपनाया और पूरी निष्ठा के साथ कार्य प्रारंभ किया। आज वे प्रतिवर्ष लगभग 18 से 20 टन पंगेशियस और तिलापिया मछलियों का उत्पादन कर रहे हैं।

उनकी यह मेहनत रंग लाई और अब उन्हें इस व्यवसाय से लगभग ₹8 लाख की वार्षिक आय हो रही है। यह न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर रहा है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार की प्रेरणादायक मिसाल भी बन गया है।

सामाजिक प्रभाव

श्री पिंटू कुमार यादव की सफलता केवल व्यक्तिगत या आर्थिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका व्यापक सामाजिक प्रभाव भी देखने को मिला है। श्री यादव की सफलता ने अनेक युवाओं को पारंपरिक रोजगारों से हटकर आत्मनिर्भरता की ओर सोचने के लिए प्रेरित किया है। अब उनके गाँव और आस–पास के क्षेत्रों के कई युवा मत्स्य पालन में रुचि ले रहे हैं और योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने हेतु कार्यालय का रुख कर रहे हैं।

उनकी पहल ने यह स्पष्ट किया है कि सरकार की योजनाएं यदि जमीन पर प्रभावी ढंग से लागू की जाएं, तो वे ग्रामीण क्षेत्र में स्वरोजगार के नए अवसर उत्पन्न कर सकती हैं।

श्री यादव की वार्षिक आय में वृद्धि के साथ–साथ उनके मछली पालन व्यवसाय से स्थानीय बाजार को भी लाभ हो रहा है। मछलियों की बिक्री से न केवल व्यापारी बल्कि खाद, बीज, परिवहन और उपकरण आपूर्तिकर्ता जैसे अन्य सहायक व्यवसायों को भी लाभ मिल रहा है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिला है।

तिलैया जलाशय के विस्थापित लाभार्थी होने के बावजूद श्री यादव ने अपने लिए नई राह बनाई, जो अन्य विस्थापित या सीमित संसाधनों वाले परिवारों के लिए आशा और संभावनाओं का प्रतीक बन चुकी है।

ठंड के दिनों में मछलियों को फीड के साथ महुआ की शराब मिला कर दिया जो मछलियों की मोरटालिटि से बचाने का नया स्वदेशी नवाचार ईजाद किया।

निष्कर्ष

श्री पिंटू कुमार यादव की यह यात्रा केवल एक व्यक्ति की आर्थिक प्रगति नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण विकास, तकनीकी सशक्तिकरण और सामुदायिक जागरूकता का एक जीवंत उदाहरण है। उनकी सफलता इस बात का प्रमाण है कि सही नीति, प्रशिक्षण और इच्छाशक्ति के मेल से सामाजिक बदलाव संभव है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	10.00 लाख
वार्षिक आय	-	18.00 लाख
शुद्ध आय	-	8.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	18-20 टन	
रोजगार	2 व्यक्ति	

पिंजरे में मछली, हाथ में सम्मान

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	खेलोचंद महतो
मोबाईल	9110117447
जिला	हजारीबाग
राज्य	झारखंड
कोटि	General
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	CAGE CULTURE
कुल परियोजना लागत	24.00 लाख
अनुदान राशि	9.6 लाख

परिचय :

श्री खेलोचंद महतो एक साधारण ग्रामीण परिवेश से ताल्लुक रखते हैं। सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन करते हुए, वे कभी छोटे-मोटे व्यवसायों से अपनी आजीविका चलाने का प्रयास करते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर थी, और 10वीं कक्षा पास करने के बावजूद उन्हें किसी स्थायी रोजगार का अवसर नहीं मिल सका। जीवन में स्थायित्व और आर्थिक सुरक्षा की तलाश उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता थी।

इसी दौरान उन्हें "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)" के बारे में जानकारी मिली। संयोगवश, कोनार जलाशय में उनकी भूमि जलमग्न हो चुकी थी, जिससे उन्हें इस योजना के अंतर्गत जलाशयों में केज (पिंजरे) कल्चर की योजना आसानी से मिल गई।

केज स्थापना की पहल:

श्री महतो ने हजारीबाग जिला मत्स्य कार्यालय से संपर्क किया, जहाँ मत्स्य विभाग के मार्गदर्शन और सहयोग से उन्हें **"मछुवारा विकास मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड, जरिया महतोईया"** का सदस्य बनाया गया। इसके माध्यम से उन्हें वर्ष 2021-22 में 7'x5'x5' आकार के 8 केज स्थापित करने के लिए 24 लाख रुपये की परियोजना लागत में 40% (9.6 लाख रुपये) का अनुदान प्राप्त हुआ। केज कल्चर के सफल संचालन हेतु विभाग द्वारा उन्हें 60,000 पंगेसियस और 60,000 मोनोसेक्स तिलापिया मछलियों के फिंगरलिंग्स प्रदान किए गए।

खेलोचंद महतो को मत्स्य विभाग की ओर से "मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार (रांची)" में पाँच दिवसीय विशेष केज कल्चर प्रशिक्षण भी निशुल्क दिया गया, जिससे

उन्हें आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों की जानकारी और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

आर्थिक लाभ:

इस योजना और प्रशिक्षण की मदद से श्री महतो अब हर वर्ष लगभग 8 से 10 टन मछलियों का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे उनकी वार्षिक आय 4-5 लाख रुपये तक पहुँच गई है। बीते कुछ वर्षों में उन्होंने करीब 4 लाख रुपये सालाना की स्थायी आय अर्जित की है, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

सामाजिक प्रभाव :

आजीविका में स्थायित्व और आत्मनिर्भरता:

पहले जहां श्री महतो छोटे-मोटे व्यवसायों पर निर्भर थे, अब वे एक सफल मत्स्य किसान बन चुके हैं। इससे उनकी आजीविका स्थिर हुई है और उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिला है।

स्थानीय रोजगार सृजन:

केज कल्चर जैसी परियोजनाएं न केवल एक व्यक्ति को रोजगार देती हैं, बल्कि उसके संचालन और रखरखाव के लिए अन्य लोगों की भी आवश्यकता होती है, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

सामाजिक सम्मान और पहचान में वृद्धि:

श्री महतो की उपलब्धियों ने उन्हें उनके गाँव और आस-पास के क्षेत्र में एक सम्मानजनक स्थान दिलाया है। वे अब एक रोल मॉडल के रूप में देखे जाते हैं, जो सामाजिक पहचान और आत्म-सम्मान को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष:

श्री खेलोचंद महतो की यह कहानी दर्शाती है कि यदि सही मार्गदर्शन, संसाधन और सरकारी योजनाओं का लाभ समय पर मिले, तो कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में मोड़ सकता है। श्री खेलोचंद महतो की कहानी न केवल एक व्यक्ति की आर्थिक उन्नति की मिसाल है, बल्कि यह ग्रामीण भारत में सरकार की योजनाओं के सकारात्मक सामाजिक प्रभाव का भी प्रतीक है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत प्राप्त सहायता और मार्गदर्शन ने न केवल श्री महतो के जीवन में बदलाव लाया, बल्कि उनके समुदाय और आस-पास के लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बना।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	6 लाख
वार्षिक आय	-	10 लाख
शुद्ध आय	-	4 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	8-10 टन	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना से संवरता जीवन

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	जैनब बीबी
मोबाईल	6201813089
जिला	जामताड़ा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Non- matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Installation of Cages in Reservoirs
कुल परियोजना लागत	3.00 लाख
अनुदान राशि	1.80 लाख

परिचय

श्रीमती जैनब बीबी, झारखंड राज्य के जामताड़ा जिले के श्यामपुर गांव की निवासी हैं। एक समय था जब वे एक साधारण घरेलू महिला थीं और उनके परिवार की कोई निश्चित आय नहीं थी। आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद, उन्होंने वर्ष 2018 में मत्स्य पालन की दिशा में कदम बढ़ाया। हालांकि प्रारंभिक संसाधनों की कमी और तकनीकी जानकारी के अभाव के कारण उन्हें वांछित सफलता नहीं मिल पाई।

परियोजना की शुरुआत

वर्ष 2021 में जैनब बीबी ने जिला मत्स्य कार्यालय, जामताड़ा से संपर्क किया, जहाँ उन्हें केंद्र सरकार द्वारा संचालित "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना" (PMMSY) की जानकारी मिली। इस योजना ने उनके जीवन में उम्मीद की एक नई किरण जगाई। वित्तीय वर्ष 2020-21 में, इस योजना के अंतर्गत उन्हें जलाशयों में केज कल्चर परियोजना के लिए महिला वर्ग में 60% अनुदान पर केज की स्थापना की गई है।

इस परियोजना की कुल लागत 3.00 लाख रुपए थी, जिसमें से जैनब बीबी को 1.80 लाख रुपए की सब्सिडी प्राप्त हुई। झारखंड के जामताड़ा जिले के जलाशय में मत्स्य विभाग द्वारा यह केज स्थापित किया गया।

तकनीकी सहयोग और प्रशिक्षण

जैनब बीबी को केवल वित्तीय सहायता ही नहीं, बल्कि मत्स्य विभाग की ओर से "मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, रांची" में पांच दिवसीय विशेष केज कल्चर प्रशिक्षण भी दिया गया। इस प्रशिक्षण से उन्हें उन्नत मछली पालन तकनीकों की जानकारी मिली, जैसे कि गुणवत्तापूर्ण

बीज और चारे का उपयोग, नियमित जल परीक्षण, और जाल की सफाई आदि।

आर्थिक लाभ

योजना का लाभ मिलने के बाद श्रीमती जैनब बीबी ने केज में पंगेशियस मछली पालन शुरू किया और अब वह हर वर्ष लगभग **2 क्विंटल मछलियों का उत्पादन** कर रही हैं। इससे उन्हें **2 से 2.5 लाख रुपये तक की वार्षिक आय** होने लगी है, जिसमें लगभग **1 लाख रुपये शुद्ध लाभ** के रूप में मिल रहा है। यह आमदनी उनके परिवार के लिए आर्थिक स्थिरता और सुरक्षा का स्रोत बन गई है।

सामाजिक प्रभाव

आर्थिक मजबूती के बाद, जैनब बीबी के बच्चे अब **कॉन्वेंट स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं**। उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है और वे अब अपने गांव की अन्य महिलाओं के लिए **एक प्रेरणास्रोत** बन गई हैं। जैनब बीबी ने यह साबित कर दिया है कि यदि सही दिशा और संसाधन मिलें, तो महिलाएं भी आत्मनिर्भरता की मिसाल बन सकती हैं।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत मिली सहायता ने श्रीमती जैनब बीबी के जीवन को एक नई दिशा दी। वह आज एक सफल महिला उद्यमी हैं और समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जी रही हैं। यह सफलता कहानी इस बात का प्रमाण है कि सरकारी योजनाएं यदि ज़मीन पर सही ढंग से लागू की जाएँ, तो वे ग्रामीण भारत में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती हैं।

"जहाँ चाह, वहाँ राह - और जैनब बीबी की यह राह अब कई महिलाओं को रोशन कर रही है।"

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	1.5 लाख
वार्षिक आय	-	2.50 लाख
शुद्ध आय	-	1 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	2 क्विंटल	
रोज़गार	स्वरोजगार	

घर से जल तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सेरून बीबी
मोबाईल	8252816138
जिला	जामताड़ा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Non- matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Installation of Cages in Reservoirs
कुल परियोजना लागत	3.00 लाख
अनुदान राशि	1.80 लाख

परिचय

श्रीमती सेरून बीबी, झारखंड राज्य के जामताड़ा जिले के श्यामपुर गांव की रहने वाली एक साधारण महिला हैं, जो पहले घरेलू कार्यों तक ही सीमित थीं। सीमित संसाधनों और आमदनी के अभाव में जीवन कठिनाइयों से भरा था। लेकिन उनमें आत्मनिर्भर बनने की चाह थी, और उन्होंने अपने जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में प्रयास करना शुरू किया।

परियोजना की शुरुआत

वर्ष 2020-21 में सेरून बीबी को केंद्र सरकार द्वारा संचालित "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना" (PMMSY) के तहत Cage Culture परियोजना के लाभार्थी के रूप में चुना गया। इस योजना के अंतर्गत महिला कोटि में उन्हें Cage Culture के लिए 3 लाख रुपये की परियोजना लागत पर 1.80 लाख रुपए की सब्सिडी प्रदान की गई। इस सहायता से उन्होंने जलाशय में 7'x5'x5' आकार के केज का निर्माण कराया और पंगासियस प्रजाति की मछलियों का पालन शुरू किया। झारखंड के जामताड़ा जिले के जलाशय में मत्स्य विभाग द्वारा यह केज स्थापित किया गया।

तकनीकी सहयोग और सुधार

मत्स्य विभाग की सहायता से सेरून बीबी को केवल वित्तीय सहायता नहीं बल्कि बेहतर केज प्रबंधन तकनीकों की जानकारी देने हेतु मत्स्य विभाग की ओर से "मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, रांची" में पांच दिवसीय विशेष केज कल्चर प्रशिक्षण भी दिया गया। इस प्रशिक्षण से उन्हें उन्नत मछली पालन तकनीकों की जानकारी मिली, जैसे कि गुणवत्तापूर्ण बीज और चारे का उपयोग, नियमित जल परीक्षण, और जाल की सफाई आदि। उन्होंने जल की गुणवत्ता की नियमित जांच, जाल की सफाई और मत्स्य

आहार प्रबंधन के जरिए अपनी उत्पादन क्षमता को बेहतर किया। यह सुधार बेहतर उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ।

आर्थिक लाभ

अब सेरून बीबी हर साल दो बार मछली उत्पादन करती हैं, जिससे उन्हें लगभग 2.73 लाख रुपए की वार्षिक आय होती है। इस प्रक्रिया में उनका खर्च 1.80 लाख रुपए रहता है, जिससे उनकी शुद्ध आय 1.5 लाख प्रति वर्ष हो गई है। यह आय पहले की तुलना में एक महत्वपूर्ण सुधार है और उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में मददगार रही है।

सामाजिक प्रभाव

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना से प्राप्त सहयोग ने न केवल श्रीमती सेरून बीबी की आर्थिक स्थिति में सुधार किया, बल्कि उनके सामाजिक जीवन में भी सकारात्मक बदलाव लाया है। पहले जहां उनका जीवन घरेलू सीमाओं तक सिमटा हुआ था, अब वे गांव की एक सशक्त और आत्मनिर्भर महिला के रूप में पहचानी जाती हैं। उनकी सफलता ने न सिर्फ उनके परिवार को वित्तीय रूप से स्वतंत्र बनाया, बल्कि उनके बच्चों को बेहतर शिक्षा का अवसर भी दिलाया। अब उनके बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं और एक कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं, जो कि उनकी आर्थिक प्रगति का एक स्पष्ट संकेत है। वह अन्य महिलाओं को भी स्वावलंबी बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत प्राप्त सहयोग से सेरून बीबी का जीवन पूरी तरह से बदल गया है। वे अब एक सफल महिला उद्यमी हैं और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभा रही हैं। यह सफलता कहानी इस बात की मिसाल है कि अगर इच्छाशक्ति हो और सही समय पर सहायता मिल जाए, तो ग्रामीण महिलाएं भी आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बन सकती हैं।

"सेरून बीबी की कहानी दिखाती है कि पानी में केवल मछलियाँ ही नहीं, सपने भी पलते हैं।"

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	2.00 लाख
वार्षिक आय	-	3.50 लाख
शुद्ध आय	-	1.50 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	3 टन	
रोज़गार	-	

सफलता की कहानी सं.-32

बेतरा वाली मछली दीदी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	अनीशा सांगा
मोबाईल	8102815198
जिला	खूंटी
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	मोटर साइकिल
कुल परियोजना लागत	0.75 लाख
अनुदान राशि	0.45 लाख

श्रीमती अनिसा सांगा, झारखंड के खूंटी जिले की एक साधारण महिला किसान थीं। वे अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कृषि कार्य में संलग्न थीं और मौसमी सब्जियों को स्थानीय हाटों में बेचती थीं। इस सीमित आमदनी से भी परिवार का भरण-पोषण करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण था। कभी-कभार वे जलाशय से मछलियाँ पकड़कर बेचती थीं, लेकिन यह आय भी अपर्याप्त थी।

श्रीमती संगा का जीवन तब बदला जब उनका संपर्क मत्स्य विभाग, खूंटी के अधिकारियों से हुआ। यहाँ से उन्हें मत्स्य पालन के बारे में पहली बार जानकारी प्राप्त हुई। इसके बाद उन्होंने मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, धुर्वा, रांची से पाँच दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी दौरान उन्हें "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)" की जानकारी मिली, जिससे उनके जीवन को नई दिशा मिली।

वर्ष 2022-23 में उन्होंने केज आधारित मत्स्य पालन की शुरुआत की। मत्स्य पालन के प्रति रुचि बढ़ने पर उन्होंने रंगीन मछली पालन का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया और विभाग के सहयोग से एक रियरिंग यूनिट की स्थापना की। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत उन्हें एक आइस बॉक्स सहित दोपहिया वाहन भी प्रदान किया गया, जिससे मछलियों के विपणन में सहूलियत हुई।

वर्तमान में श्रीमती संगा डुमरगढ़ी जलाशय मछुआ सहयोग समिति लि०, कर्रा, खूंटी की अध्यक्ष हैं। वे फीड बेस्ड फिशरीज तकनीक का प्रयोग कर मत्स्य पालन को निरंतर आगे बढ़ा रही हैं। वे अपने छोटे बच्चे को गोद में लेकर नाव चलाना, चारा डालना, मछली पकड़ना और विपणन जैसे सारे कार्य खुद करती हैं। उनकी मेहनत और समर्पण ने उन्हें स्थानीय महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत बना दिया है।

श्रीमती संगा अब प्रतिवर्ष लगभग 1.5 लाख रुपये की आमदनी कर रही हैं और अपने परिवार को आर्थिक रूप से सक्षम बना चुकी हैं। आज खूंटी जिले में उन्हें लोग "महिला मत्स्य पालक" और "बेतरा वाली मछली दीदी" के नाम से जानते हैं।

एक सशक्त महिला नेता के रूप में, श्रीमती संगा ने विभाग से अनुरोध किया है कि उनके समिति के अधिक से अधिक सदस्यों को भी केज योजना का लाभ मिले ताकि कोई भी सदस्य वंचित न रहे। उन्होंने लैंडिंग साइट की सुविधा, महिलाओं के लिए मोटर बोट संचालन प्रशिक्षण, और फीड बेस्ड फिशरीज योजना के विस्तार की मांग रखी है, ताकि मत्स्य पालन के साथ-साथ पर्यटन की संभावनाओं को भी बढ़ाया जा सके।

श्रीमती अनिसा संगा की कहानी इस बात का प्रमाण है कि यदि सही मार्गदर्शन, सरकारी योजना का सहयोग और व्यक्तिगत समर्पण हो, तो कोई भी महिला किसी भी परिस्थिति को पार कर अपने और समाज के लिए बदलाव ला सकती है। उनकी यात्रा आज खूंटी जिला की महिलाओं के लिए एक उज्ज्वल प्रेरणा बन गई है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	-
परिचालन लागत	-	0.30 लाख
वार्षिक आय	-	1.5 लाख
शुद्ध आय	-	1.20 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	-	
रोज़गार	-	

जीवन की विपरीत धार में, मत्स्य पालन बना पतवार

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	पुष्पा देवी
मोबाईल	8809009868
जिला	खूंटी
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Biofloc Pond
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

झारखंड राज्य के खूंटी ज़िले के मुरहू प्रखण्ड निवासी श्रीमती पुष्पा देवी आज मत्स्य पालन के क्षेत्र में एक जीवंत मिसाल बन चुकी हैं। एक समय था जब उनका जीवन चुनौतियों से भरा हुआ था—पति की असमय मृत्यु के बाद वे गहरे संकटों में घिर गईं। परिवार के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी और भविष्य की अनिश्चितताएँ उन्हें हर दिन एक नई चुनौती देती थीं। लेकिन उन्होंने परिस्थितियों से हार मानने के बजाय, हौसलों की नाव पर सवार होकर आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला साहसी कदम उठाया।

वर्ष 2022 में, एक रिश्तेदार से उन्हें मत्स्य पालन की "बायोफ्लॉक तकनीक" के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। इस नई तकनीक की संभावनाओं को पहचानते हुए, उन्होंने बिना किसी सरकारी सहायता के, अपने निजी संसाधनों से 10 डिसमिल भूमि पर बायोफ्लॉक तालाब का निर्माण कराया और मछली पालन की शुरुआत की। यह निर्णय उनके लिए केवल एक आजीविका का साधन नहीं था, बल्कि आत्मबल और आत्मनिर्भरता की ओर उठाया गया एक निर्णायक कदम था।

कुछ समय बाद, जब उन्हें समाचार पत्रों और मत्स्य मित्रों के माध्यम से यह जानकारी मिली कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत महिला लाभुकों को बायोफ्लॉक तालाब निर्माण पर 60% तक का सरकारी अनुदान प्रदान किया जाता है, तो उन्होंने इस अवसर को और सशक्त बनाने का निश्चय किया। वे तत्क्षण जिला मत्स्य कार्यालय, खूँटी पहुँचीं और योजना की समग्र जानकारी प्राप्त की।

स्वास्थ्य कारणों से प्रशिक्षण में स्वयं सम्मिलित न हो पाने के कारण, उनके पुत्र श्री अंकेश ने परिवार की आशाओं को संभालते हुए मत्स्य किसान प्रशिक्षण केन्द्र, धुर्वा,

राँची से पाँच दिवसीय बायोफ्लॉक मत्स्य पालन प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह प्रशिक्षण उनके प्रयासों को एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी मजबूती देने वाला साबित हुआ।

योजना की पहल

वित्तीय वर्ष 2022-23 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत उन्हें महिला कोटि में बायोफ्लॉक तालाब निर्माण का लाभ प्राप्त हुआ। महिला कोटी के अंतर्गत उन्हे 8.40 लाख रुपए की अनुदान राशि का लाभ मिल जबकि कुल परियोजना लगे 14.00 लाख रुपए थी । इस तालाब में तिलापिया मछली का सफलतापूर्वक संचयन किया गया।

आर्थिक लाभ

प्रथम चक में श्रीमती पुष्पा देवी द्वारा लगभग 3.5 टन (3500 किलोग्राम) मछली का उत्पादन किया गया, जिससे उन्हें लगभग 6.50 लाख रुपए की आमदनी हुई। परिचालन लागत घटाने के बाद उन्हें 3.30 लाख रुपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

सामाजिक प्रभाव

मत्स्य पालन को आजीविका के रूप में अपनाकर उन्होंने न केवल अपने परिवार का भरण-पोषण सुदृढ़ किया, बल्कि आत्मविश्वास और सम्मान के साथ जीवन जीने का मार्ग भी पाया। उनके इस प्रयास से आसपास के ग्रामीणों को भी इस कार्य में रुचि लेने की प्रेरणा मिली है।

श्रीमती पुष्पा देवी भविष्य में मत्स्य पालन को और विस्तार देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे निजी 10 डिसमिल तथा अनुदानित 25 डिसमिल बायोफ्लॉक तालाब का पूरा उपयोग कर मत्स्य उत्पादन को जारी रखेंगी। साथ ही उन्होंने तालाब के समीप 1 एकड़ निजी भूमि पर कृषि कार्य करने की योजना बनाई है, जिसमें बायोफ्लॉक तालाब के उपयोग किए गए जल से सिंचाई की जाएगी।

निष्कर्ष

श्रीमती पुष्पा देवी ने इस सफलता का श्रेय मत्स्य विभाग, खूँटी को देते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और योजना का लाभ उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहायक सिद्ध हुआ।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	3.20 लाख
वार्षिक आय	-	6.50 लाख
शुद्ध आय	-	3.30 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	3.5 टन	
रोज़गार	-	

बायोफ्लॉक तालाब से समृद्धि की मिसाल

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	नाजनीन खातून
मोबाईल	9113420452
जिला	कोडरमा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Biofloc ponds
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

झारखंड के कोडरमा जिले के जयनगर प्रखंड के गरचांच गाँव की श्रीमती नाजनीन खातून ने यह दिखा दिया है कि अगर मन में कुछ कर गुजरने की चाह हो और सही मार्गदर्शन मिल जाए, तो कोई भी महिला आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम उठा सकती है। स्नातक शिक्षित श्रीमती नाजनीन ने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) का लाभ उठाकर मछली पालन को अपनी आय का जरिया बनाया। श्रीमती नाजनीन ने मछली पालन की शुरुआत कर न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाया, बल्कि क्षेत्र की अनेक महिलाओं के लिए उम्मीद की किरण बन चुकी हैं।

परियोजना की शुरुआत

श्रीमती नाजनीन का हमेशा से सपना था कि वह कुछ अपना व्यवसाय शुरू करें जिसमे कम लागत , कम समय में , अधिक आमदनी मिले । जब उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत बायोफ्लॉक तकनीक से मछली पालन की जानकारी मिली, तो उन्होंने इसे अवसर के रूप में देखा। योजना के तहत 14.00 लाख रुपये की परियोजना लागत में से उन्हें 8.40 लाख रुपये की सरकारी सब्सिडी प्राप्त हुई। इससे उन्होंने अपने गाँव में ही बायोफ्लॉक तालाब का निर्माण कर मछली पालन की शुरुआत की।

आर्थिक लाभ

योजना से पहले नाजनीन की कोई नियमित आय नहीं थी। लेकिन बायोफ्लॉक तकनीक अपनाने के बाद उन्होंने तिलापिया और पंगासियस मछलियों का पालन शुरू किया। अब वे वर्ष में दो बार मछली उत्पादन करती हैं, जिससे उन्हें सालाना लगभग 9.00 लाख रुपये की आय होती है। खर्चों को घटाकर उन्हें हर साल करीब 6.00 लाख रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त होता है। उन्होंने गुणवत्ता युक्त बीज और फ़ीड का इस्तेमाल किया, जल की गुणवत्ता पर ध्यान दिया और सौर पंपों के उपयोग से लागत को नियंत्रित किया। उनकी कुछ कर गुजरने के जज्बे

ओर निरंतर प्रयासों ने उन्हे आज उन्हे एक सक्षम उद्यमी महिला के रूप मे जाना जाने लगा है ।

\सामाजिक प्रभाव

नाजनीन जी की इस सफलता ने उनके परिवार और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। उनके बच्चे अब एक अच्छे प्राइवेट स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और परिवार आर्थिक रूप से पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया है। उनकी कहानी सुनकर गाँव के कई अन्य लोग भी इस क्षेत्र में कदम रखने के लिए प्रेरित हो रहे हैं, विशेषकर महिलाएं जो अब खुद को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सोचने लगी हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती नाजनीन खातून की सफलता की कहानी इस बात का प्रमाण है कि सरकारी योजनाएं यदि सही व्यक्ति तक पहुँचें और उन्हें सही मार्गदर्शन मिले, तो ग्रामीण भारत में भी उद्यमिता की अपार संभावनाएं हैं। नजनीन ने अपने मेहनत, समर्पण और आत्मविश्वास से यह दिखा दिया कि महिलाएं हर क्षेत्र में सफल हो सकती हैं। उनकी यह यात्रा न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि एक दिशा-निर्देश भी है उन सभी के लिए, जो अपने सपनों को साकार करना चाहते हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	3 लाख
वार्षिक आय	-	9 लाख
शुद्ध आय	-	6 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6-7 टन	
रोज़गार	3 व्यक्ति	

सरकारी योजना से स्वावलंबन तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	प्रकाश रविदास
मोबाईल	8809261470
जिला	कोडरमा
राज्य	झारखंड
कोटि	SC
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Installation of Cages in Reservoirs
कुल परियोजना लागत	12.00 लाख
अनुदान राशि	7.20 लाख

परिचय

श्री प्रकाश रविदास, झारखंड के कोडरमा जिले के एक मेहनती युवक हैं, जिन्होंने इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई की है। वर्ष 2012-13 में उन्होंने मछली पालन के क्षेत्र में कदम रखा। इससे पहले वे एक NGO में कार्यरत थे और सीमित आय में जीवन यापन कर रहे थे। लेकिन उनके जीवन में असली बदलाव तब आया जब उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी प्राप्त की।

योजना की शुरुआत

प्रकाश जी तिलैया जलाशय के विस्थापितों मे से थे एवं "हिमांशु विस्थापित मतसयाजीवी सहयोग समिति" से जुड़े हुए थे। समिति के अध्यक्ष द्वारा उन्हे प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने तुरंत राँची जाकर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया जिससे उन्हे आधुनिक मछली पालन की तकनीक, केज प्रबंधन और जलाशयों में मत्स्य आहार का सही उपयोग की जानकारी दी गई। तकनीकी जानकारी लेने के उपरांत उनहोने जिला मत्स्य कार्यालय, कोडरमा के सहयोग से प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना अंतर्गत अनुसूचित जाती के लाभुक 40 % अनुदान पर 4 केजों का लाभ लिया तथा तिलैया जलाशय में केजो का निर्माण करवा कार्य शुरू किया। योजना के तहत उन्हें 20,000 मछली बीज तथा चारा उपलब्ध कराया गया जिससे उनके मछली पालन कार्य की मजबूत नींव रखी गई।

आर्थिक लाभ

योजना मिलने के बाद प्रकाश जी की वार्षिक उत्पादन क्षमता 10 टन तक पहुंच गई। दो चक्रों में मछली पालन करने से उन्हें हर वर्ष लगभग 8.00 लाख रुपये की आमदनी होती है, जिसमें से शुद्ध मुनाफा 6.00 लाख रुपये रहता है। प्रारंभिक लागत 2 लाख रुपये तक रही। इस

सफलता ने न केवल उनके आर्थिक हालात सुधारे, बल्कि अब वे स्वतंत्र रूप से एक सफल मत्स्य व्यवसायी बन गए हैं। तथा तिलैया जलाशय के निकट उन्होंने अपना रेस्टोरेंट भी खोल लिया है।

सामाजिक प्रभाव

इस योजना का लाभ केवल प्रकाश जी तक ही सीमित नहीं रहा। उनके व्यवसाय में अब दो अन्य व्यक्तियों को भी रोजगार मिला है। इससे उनके क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं बढ़ीं और युवाओं को प्रेरणा मिली कि सरकार की योजनाओं का सही तरीके से उपयोग कर आत्मनिर्भर बना जा सकता है।

निष्कर्ष

श्री प्रकाश रविदास की कहानी इस बात का प्रमाण है कि यदि व्यक्ति में सीखने की इच्छा और मेहनत करने की लगन हो, तो सरकारी योजनाएं उनके लिए वरदान साबित हो सकती हैं। प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना ने उनके जीवन की दिशा बदल दी और वे अब समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत बन चुके हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	2 लाख
वार्षिक आय	-	8 लाख
शुद्ध आय	-	6 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	10 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

दृढ़ संकल्प से बदलाव की मिसाल बने

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	चित्रकेतु उराँव
मोबाईल	9801930145
जिला	लातेहार
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Live fish vending Centres
कुल परियोजना लागत	20.00 लाख
अनुदान राशि	12.00 लाख

परिचय

झारखंड के लातेहार जिले के महुआडांड़ गांव के निवासी श्री चित्रकेतु उरांव एक प्रेरणास्पद व्यक्तित्व हैं जिन्होंने सीमित संसाधनों और सामाजिक बाधाओं के बावजूद मत्स्य पालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। इंटरमीडिएट तक शिक्षित और अनुसूचित जनजाति (ST) वर्ग से आने वाले श्री उरांव ने अपने मेहनत, समर्पण और दूरदृष्टि से न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया, बल्कि अन्य ग्रामीणों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बने।

परियोजना की शुरुआत

श्री उरांव को मत्स्य पालन की दिशा में प्रेरणा जिला मत्स्य कार्यालय, लातेहार से मिली। उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत "लाइव फिश वेंडिंग सेंटर" की स्थापना की। इस परियोजना की कुल लागत 20 लाख थी, जिसमें से 12 लाख की वित्तीय सहायता उन्हें PMMSY के तहत प्राप्त हुई। विशेष बात यह रही कि उन्होंने इस परियोजना के लिए किसी भी बैंक या अन्य स्रोत से ऋण नहीं लिया, बल्कि अपनी बचत और संसाधनों से ही शेष राशि जुटाई।

आर्थिक प्रगति

PMMSY योजना से जुड़ने से पूर्व श्री चित्रकेतु उरांव की मासिक आय 20,000 से 50,000 रुपए के बीच थी, लेकिन उन्हें तालाब अतिक्रमण और मछली चोरी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। लाइव फिश वेंडिंग सेंटर की स्थापना के बाद, उनकी आय मे काफ़ी वृद्धि हुई। लाइव फिश वेंडिंग सेंटर से उन्होंने 5 लाख का शुद्ध लाभ अर्जित किया, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

सामाजिक प्रभाव

श्री उरांव की यह पहल सिर्फ उनकी व्यक्तिगत सफलता नहीं रही, बल्कि इसने स्थानीय समुदाय को भी लाभ पहुँचाया। उन्होंने अपने उद्यम के माध्यम से 3 लोगों को रोजगार प्रदान किया - जिसमें 1 पुरुष और 2 महिलाएं शामिल हैं। जीवित मछलियों की बिक्री से उन्हें बेहतर मूल्य प्राप्त हुआ, जिससे व्यवसाय की लाभप्रदता बढ़ी। उनकी सफलता ने क्षेत्र के अन्य मछली पालकों और युवाओं को भी इस क्षेत्र में कदम रखने के लिए प्रेरित किया है।

निष्कर्ष

श्री चित्रकेतु उरांव की सफलता की कहानी इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि सरकारी योजनाओं के सही उपयोग, आत्मविश्वास और परिश्रम से कोई भी व्यक्ति सामाजिक और आर्थिक सीमाओं को पार कर सकता है। उन्होंने एक साधारण मछली किसान से सफल उद्यमी तक का सफर तय कर न केवल अपने परिवार को संबल प्रदान किया, बल्कि पूरे समुदाय में आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित किया। उनकी कहानी आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में आम नागरिकों की भूमिका को उजागर करती है और यह संदेश देती है कि परिवर्तन की शुरुआत हमेशा दृढ़ इच्छाशक्ति से होती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प, तिलपिया, पंगास एवं अन्य मछलियाँ
परिचालन लागत	-	3.00 लाख
वार्षिक आय	-	8.00 लाख
शुद्ध आय	-	5.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
भंडारण क्षमता	1500 से 2000 किलोग्राम भंडारण क्षमता	
रोज़गार	3 व्यक्ति	

सपनों को तैरने दो: सीमा देवी की सफल गाथा

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सीमा देवी
मोबाईल	8987730075
जिला	लातेहार
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Small RAS
कुल परियोजना लागत	7.50 लाख
अनुदान राशि	4.50 लाख

परिचय

झारखंड के लातेहार जिले की रहने वाली **श्रीमती सीमा देवी** एक सामान्य ग्रामीण पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखती हैं। शिक्षा के नाम पर सिर्फ़ मैट्रिक पास, सीमित संसाधन, और जिम्मेदारियों का बोझ -यह सब होते हुए भी उन्होंने अपने जीवन में बदलाव लाने का निर्णय लिया। जब केंद्र सरकार की **प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना** (PMMSY) के बारे में उन्हें जानकारी मिली, तो उन्होंने इस अवसर को अपने और अपने परिवार के भविष्य को संवारने के लिए एक मजबूत हथियार बना लिया। आज वे सिर्फ़ एक मत्स्य पालक नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए **प्रेरणा की मिसाल** बन चुकी हैं।

परियोजना की शुरुआत

वर्ष **2022-23** में सीमा जी ने PMMSY योजना के अंतर्गत **Recirculatory Aquaculture System (RAS)** आधारित मत्स्य पालन परियोजना की शुरुआत की। उन्होंने एक **100 घन मीटर क्षमता** की टंकी स्थापित की, जिससे मछली पालन का कार्य वैज्ञानिक तरीके से शुरू हो सका।

इस परियोजना की कुल लागत **7.50 लाख रुपए** थी, जिसमें से सरकार द्वारा **4.50 लाख रुपए की सब्सिडी** प्रदान की गई। इस आर्थिक सहयोग ने उन्हें आत्मविश्वास दिया और वे बिना किसी बड़े ऋण या कर्ज़ के यह व्यवसाय शुरू कर सकीं। यह योजना उनके लिए सिर्फ़ एक स्कीम नहीं, बल्कि **नए जीवन की शुरुआत** बन गई।

आर्थिक लाभ

योजना के पहले तक श्रीमती सीमा देवी के परिवार की कोई स्थायी आय नहीं थी। जीवन की बुनियादी ज़रूरतें भी संघर्षपूर्ण थीं। लेकिन इस योजना के बाद उन्होंने रोहु, कतला, मृगल, तिलापिया और पंगास जैसी **मछलियों** का

पालन शुरू किया। आज इस व्यवसाय से उनका **वार्षिक उत्पादन** लगभग **8000 किलोग्राम है।** इससे ना उन्हें सिर्फ आर्थिक स्थिरता, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी पंख मिला।

सामाजिक प्रभाव

1. **आर्थिक आत्मनिर्भरता:** अब परिवार को **किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता**। घरेलू खर्च, बच्चों की पढ़ाई, और अन्य आवश्यकताएं अब स्वाभिमान के साथ पूरी हो रही हैं।
2. **तकनीकी जागरूकता:** सीमा देवी जी ने गुणवत्तापूर्ण बीज व चारा अपनाया, **जल परीक्षण और टंकी प्रबंधन** पर विशेष ध्यान दिया। इसके साथ ही उन्होंने **सौर ऊर्जा आधारित पंपों** के उपयोग का प्रशिक्षण लिया, जिससे बिजली की बचत के साथ उत्पादन में वृद्धि हुई।

भविष्य की नई योजनाएं

श्रीमती सीमा देवी अब सिर्फ़ मछली पालक नहीं रहीं, वे **एक उद्यमी महिला** बन चुकी हैं। अब वे आस-पास की महिलाओं को भी योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं। वे भविष्य में मत्स्य प्रसंस्करण इकाई और मूल्य संवर्धन जैसे कदम उठाकर **रोज़गार सृजन** की दिशा में काम करना चाहती हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती सीमा देवी की सफलता यह साबित करती है कि **सरकारी योजनाएं अगर सही हाथों में पहुँचें, तो वे क्रांति ला सकती हैं**। सीमित संसाधनों में भी बड़ा बदलाव संभव है - बशर्ते इच्छाशक्ति हो, थोड़ी सी मदद हो और नया कुछ सीखने की चाह हो। उनकी यह कहानी न केवल **आर्थिक समृद्धि** की मिसाल है, बल्कि यह भी दिखाती है कि कैसे एक महिला, अपने दम पर, पूरे समाज की सोच बदल सकती है। आज वे केवल अपने परिवार की नहीं, बल्कि **सैकड़ों ग्रामीण महिलाओं की उम्मीद बन चुकी हैं।**

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	6.00 लाख
वार्षिक आय	-	9.00 लाख
शुद्ध आय	-	3.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	8 टन	
रोज़गार	3 व्यक्ति	

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना से नीली क्रांति

लाभुक की विवरणी	
लाभुक का नाम	इंदु भगत
मोबाईल	9308209709
जिला	लोहरदगा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	स्नातकोत्तर और B.Ed.
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020–21
अवयव	बायोफ्लॉक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

श्रीमती इंदु भगत, पति श्री करण कुमार, प्रखण्ड कैरो, जिला– लोहरदगा, एक मध्यम वर्गीय परिवार की महिला, स्नातकोत्तर और B.Ed. की शिक्षा प्राप्त कर शिक्षिका के तौर पर कार्य करती थीं। उनकी मासिक आय सिर्फ 10,000 रुपये थी, जो उनके परिवार के खर्चों और भविष्य की जरूरतों के हिसाब से बहुत कम थी। हालांकि, संतोषजनक जीवन की उम्मीद रखते हुए भी, उन्हें हमेशा यह महसूस होता था कि उन्हे उनकी मेहनत और क्षमताओं का पूरा फल नहीं मिल रहा है।

जीवन के इस मोड़ पर उन्हें एक नई उम्मीद मिली, जब उन्हें ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी मिली। योजना की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय, लोहरदगा से संपर्क किया एवं अनुशंसा करा रांची में जाकर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण में भाग लेने का निश्चय किया। इन प्रशिक्षणों ने उन्हें मत्स्य पालन और संबंधित कार्यों के बारे में गहरी समझ दी। प्रशिक्षण उपरांत, उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय, लोहरदगा की मदद से बायोफ्लॉक तालाब योजना का लाभ लिया और अपने नए व्यवसाय की शुरुआत की। यह योजना उनके जीवन में एक नया मोड़ लेकर आई, जिससे उन्हें यह विश्वास हुआ कि अब वे अपनी शिक्षा और क्षमताओं का सही उपयोग करके अपने जीवन में बदलाव ला सकती हैं। आज श्रीमती इंदु न केवल अपनी पारिवारिक जरूरतों को पूरा कर रही हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन चुकी हैं।

बड़े बायोफ्लॉक तालाब के स्थापना की पहल

श्रीमती इंदु भगत, एक शिक्षिका होते हुए भी मासिक आय कम होने के कारण आर्थिक रूप से कमजोर स्थिति का सामना कर रही थीं। यही कारण था कि उन्होंने अपने जीवन में बदलाव लाने के लिए नए अवसरों की तलाश शुरू की।

इंदु ने वित्तीय वर्ष 2020–21 में जिला मत्स्य कार्यालय, लोहरदगा में बायोफ्लॉक तालाब के लिए आवेदन किया, जिसकी कुल परियोजना लागत 14.00 लाख रुपये थी। उन्हें महिला कोटि में चयनित किया गया, जिसके तहत उन्हें 60% अनुदान के रूप में 8.40 लाख रुपये की सहायता प्राप्त हुई तथा इंदु की तकनीकी दक्षता को बढ़ाने के लिए उन्हें "मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार" के द्वारा निःशुल्क "पांच दिवसीय बायोफ्लॉक प्रशिक्षण" प्रदान किया गया। जिला मत्स्य कार्यालय, लोहरदगा से मिले सहयोग से उन्होंने अपने कार्य की शुरुआत की और नए व्यवसाय की ओर कदम बढ़ाया।

आर्थिक लाभ

इंदु भगत, प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) की एक लाभार्थी, मछली पालन के माध्यम से अपने आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव ला चुकी हैं। इंदु प्रति वर्ष 5 टन मछली का उत्पादन कर लगभग 6 लाख रुपये की मछलियों की बिक्री कर रही हैं। इस आमदनी से उनका शुद्ध मुनाफा 3–4 लाख रुपये प्रतिवर्ष है, जो उनके वित्तीय स्थिरता को सुनिश्चित करता है। इस व्यवसाय के माध्यम से इंदु ने 4 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया है, जिससे न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है, बल्कि समुदाय में भी रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

सामाजिक प्रभाव

इंदु भगत का यह उदाहरण यह साबित करता है कि सही योजना और मेहनत के साथ न केवल व्यक्तिगत आय में वृद्धि हो सकती है, बल्कि समाज में भी रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं। उनकी यह सफलता की कहानी दिखाती है कि प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना जैसे अवसर, महिलाओं को सशक्त बनाने और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती इंदु भगत की सफलता यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन और प्रयासों से कोई भी महिला अपने जीवन को नया दिशा दे सकती है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत बायोफ्लॉक तालाब

स्थापित करके, इंदु ने न केवल अपनी आय में वृद्धि की, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किए। इस योजना के जरिए उन्होंने न केवल अपने परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त किया, बल्कि समाज में भी महिलाओं के लिए प्रेरणा का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। उनकी यह सफलता साबित करती है कि अगर दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत मजबूत हो, तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	–	पंगेसियस, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	–	01
परिचालन लागत	–	3.00 लाख
वार्षिक आय	–	6.00 लाख
शुद्ध आय	–	3.00 – 4.00 लाख
परियोजना आउटपुटः		
वार्षिक उत्पादन	5 टन	
रोजगार	4 व्यक्ति	

सीमा नहीं मंज़िल की, जब संकल्प हो दृढ़: सीमा तिवारी की प्रेरक पहल

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सीमा तिवारी
मोबाईल	9572649978
जिला	लोहरदगा
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Biofloc pond
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

झारखंड के लोहरदगा जिले की हरी-भरी वादियों में बसे छोटे से गांव झारो चट्टी की एक साधारण गृहिणी, श्रीमती सीमा तिवारी ने अपनी असाधारण मेहनत, समर्पण और दूरदृष्टि से मछली पालन की दुनिया में एक नई पहचान बनाई है। सीमित संसाधनों और ग्रामीण परिवेश की चुनौतियों के बीच उन्होंने बायोफ्लॉक तकनीक को अपनाकर मत्स्य पालन के क्षेत्र में सफलता की एक ऐसी कहानी लिखी है, जो आज पूरे क्षेत्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुकी है।

उनके इस परिवर्तनकारी सफर में मत्स्य विभाग, लोहरदगा ने न केवल मार्गदर्शन किया, बल्कि समय-समय पर सहयोग और प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भरता की दिशा में सशक्त रूप से आगे बढ़ाया। यह कहानी केवल मछली पालन की नहीं, बल्कि सपनों को साकार करने की जिद और साहसिक प्रयासों से बदली गई तक़दीर की कहानी है।

परियोजना की शुरुआत

श्रीमती सीमा तिवारी को बचपन से ही मछली पालने का शौक था। इसी रुचि को पेशे में बदलते हुए उन्होंने वर्ष **2021** में अपने गांव में 5 एकड़ की भूमि पर **बायोफ्लॉक फिश फार्मिंग** की शुरुआत की। आरंभ में उन्होंने 6 बायोफ्लॉक पौंड बनवाए और उनमें **सिंघी** और **देशी मागुर** प्रजातियों की मछलियों का बीज डाला। पहले ही वर्ष उन्हें अच्छा उत्पादन और आय प्राप्त हुई जिससे उनका आत्मविश्वास और भी बढ़ा। विभाग द्वारा उनकी बायोफ्लॉक परियोजना को **14 लाख की लागत** के साथ **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** के तहत अनुमोदित किया गया, जिसमें से **8.60 लाख का सरकारी अनुदान** उन्हें प्राप्त हुआ। यह वित्तीय सहयोग उनके सपनों को मूर्त रूप देने में मील का पत्थर साबित हुआ। सीमा तिवारी की यह उपलब्धि इस बात का प्रमाण है कि यदि सही मार्गदर्शन और संसाधन मिलें, तो ग्रामीण परिवेश की महिलाएं भी **आर्थिक क्रांति की अग्रदूत** बन सकती हैं।

प्रेरणा पाकर उन्होंने **झारखंड सरकार** द्वारा संचालित **मत्स्य प्रशिक्षण केन्द्र, शालीमार** से प्रशिक्षण प्राप्त किया और इसके बाद **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** के तहत मत्स्य विभाग लोहरदगा से सहयोग प्राप्त किया।

आर्थिक लाभ

श्रीमती सीमा तिवारी द्वारा **पंगास मछली की खेती** ने केवल उनके जीवन की दिशा बदली, बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनने की राह भी दिखाई। आधुनिक **बायोफ्लॉक तकनीक** के माध्यम से उन्होंने **सात महीनों के भीतर 5.5 टन मछली** का उत्पादन किया, जिसे स्थानीय बाजार में विक्रय कर उन्होंने लगभग **7.20 लाख की शुद्ध वार्षिक आमदनी** अर्जित की। उनकी मेहनत और दूरदृष्टि का परिणाम है कि आज वे **पूरी तरह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर** बन चुकी हैं।

इस सफलता में **मत्स्य विभाग, लोहरदगा** की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती सीमा तिवारी की सफलता से न केवल उनके परिवार को लाभ हुआ, बल्कि उन्होंने अपने क्षेत्र के **कई बेरोजगार युवाओं को भी मत्स्यपालन से जोड़ने का कार्य** शुरू किया है। वे उन्हें प्रशिक्षण दिलवा रही हैं, योजनाओं की जानकारी दे रही हैं और उन्हें स्वरोजगार की दिशा में प्रेरित कर रही हैं।

मत्स्य विभाग की मदद से उन्हें **हैदराबाद, कोलकाता, भुवनेश्वर और रांची** जैसे शहरों में उन्नत प्रशिक्षण हेतु भेजा गया, जिससे वे अपनी जानकारी और अनुभव को और समृद्ध कर सकें।

निष्कर्ष

श्रीमती सीमा तिवारी की यह सफलता दर्शाती है कि यदि सही मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और सरकारीयोजनाओं का लाभ समय पर मिले, तो कोई भी व्यक्तिस्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बन सकता है। उनकी यह यात्रा न केवल आर्थिक रूपसेसफलरहीहै,बल्किसामाजिकरूपसेभीप्रेरणादायकहै। उनका सपना है कि वे अपने आस-पास के गांवों के और भी **युवाओं को मछली पालन से जोड़कर**, उन्हें **रोजगार और स्वावलम्बन की दिशा में अग्रसर करें।**

श्रीमती सीमा तिवारी आज नारी सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास और आधुनिक मत्स्य पालन का एक सशक्त उदाहरण बन चुकी हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास , सिंघी और देशी मागुर
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	4.5 लाख
वार्षिक आय	-	7.2 लाख
शुद्ध आय	-	2.7 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	5.5 ton	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

सफलता की कहानी सं.-40

हौसला और प्रशिक्षण बना आशा ज्योति का मार्गदर्शन

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	आशा ज्योति गिरी
मोबाईल	9153581006
जिला	लोहरदगा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	Biofloc pond
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

लोहरदगा जिले के भंडरा प्रखंड की एक साधारण महिला, श्रीमती आशा ज्योति गिरी, आज मत्स्य पालन के क्षेत्र में एक मिसाल बन चुकी हैं। उनका जीवन एक प्रेरणा है कि अगर आत्मविश्वास, कठिन परिश्रम और सही दिशा में मेहनत की जाए, तो किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है। उनका संघर्ष और सफलता की कहानी न केवल महिलाओं के लिए बल्कि समाज के हर तबके के लिए एक उदाहरण बन चुकी है। यह कहानी है एक महिला की, जिसने अपनी मेहनत और दृढ़ निश्चय से अपने जीवन को बदला और दूसरों के लिए भी एक नई राह दिखाई।

योजना की शुरुआत

सभी के जीवन में कभी न कभी एक ऐसा मोड़ आता है, जब कठिनाइयाँ हावी हो जाती हैं, और हर दिशा में अंधकार सा महसूस होने लगता है। लेकिन यही वह समय होता है जब सही मार्गदर्शन और प्रेरणा से व्यक्ति अपनी तक़दीर को बदल सकता है। लोहरदगा जिले की श्रीमती आशा का जीवन भी इसी प्रकार के एक बदलाव का उदाहरण है। जब उनके सामने आर्थिक संकट खड़ा था, तब जिला मत्स्य कार्यालय लोहरदगा ने उनका हाथ थामा और उन्हें बायोफ्लॉक तकनीक पर आधारित मत्स्य पालन की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया।

"प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)" के तहत देशभर में 47 योजनाएं चल रही थीं, जो मछली पालन को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई थीं। इन योजनाओं में से एक विशेष योजना थी बायोफ्लॉक तालाब की, जिसके तहत श्रीमती आशा को न केवल तालाब निर्माण की तकनीकी सहायता मिली, बल्कि पंगास मछली के अंगुलिकाएं और फैक्ट्री निर्मित फ्लोटिंग फीड जैसी सुविधाएं भी प्रदान की गईं। इन सभी मददों ने उन्हें इस व्यवसाय में सफलता पाने

के लिए सही मार्ग दिखाया।

वित्तीय वर्ष 2023-24 में उन्हें "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना" के तहत महिला श्रेणी में 60% अनुदान मिला, जो कुल परियोजना लागत का महत्वपूर्ण हिस्सा था। इस अनुदान के तहत उन्हें 14.00 लाख रुपये की परियोजना लागत में से 8.40 लाख रुपये का समर्थन मिला। इसमें से 5.04 लाख रुपये केंद्र सरकार और 3.36 लाख रुपये राज्य सरकार की ओर से प्रदान किए गए थे। इस सहायता ने उन्हें बायोफ्लॉक तालाब बनाने में मदद की और उनके मछली पालन के व्यवसाय को एक नया दिशा दी।

इसके अलावा, उन्होंने रांची स्थित शालीमार में मत्स्य किसान प्रशिक्षण केन्द्र से मछली पालन और बीज उत्पादन का गहन प्रशिक्षण लिया। राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB) द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी उन्होंने भाग लिया, जिसमें उन्हें मछली पालन की उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। इस प्रशिक्षण से उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने अपने 40 डिसमिल भूमि पर बायोफ्लॉक तालाब का निर्माण कर मछली पालन शुरू किया।

सकारात्मक बदलाव:

श्रीमती आशा के जीवन में यह बदलाव एक नए सूरज की तरह था, जो उनके व्यवसाय को न केवल एक नई दिशा दे रहा था, बल्कि उनके आर्थिक जीवन को भी संजीवनी दे रहा था। प्रशिक्षण, सरकारी सहायता और बायोफ्लॉक तकनीक के सही उपयोग ने उनके मछली पालन को एक व्यवस्थित और लाभकारी व्यवसाय में बदल दिया। आज उनके तालाबों से होने वाले उत्पादन में दिन-ब-दिन वृद्धि हो रही है, और उनका व्यवसाय अब एक स्थिर और लाभकारी उद्योग बन चुका है।

आर्थिक लाभ

श्रीमती गिरी का निर्णय उनके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। अब श्रीमती गिरी अपने तालाबों में मछली पालन कर रही हैं और सालाना लगभग 4 टन मछली का उत्पादन करती हैं। इस उत्पादन से उन्हें लगभग 6 लाख रुपये तक का टर्नओवर हो रहा है। इसके अलावा, उन्होंने मत्स्य बीज उत्पादन और विपणन में भी प्रशिक्षण लिया, जिससे उनकी आय में और भी वृद्धि हुई है। इस व्यवसाय ने न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत भी किया।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती आशा ज्योति गिरी की सफलता ने न केवल उनके जीवन को बदल दिया, बल्कि यह पूरे जिले में एक सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी डाल रही है। वह अब न केवल खुद के लिए, बल्कि जिले के बेरोजगार युवाओं के लिए भी एक प्रेरणा बन चुकी हैं। उनके प्रयासों से कई बेरोजगार युवाओं ने मछली पालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाया है और आज वे भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो चुके हैं। श्रीमती गिरी ने इस क्षेत्र में एक मजबूत नेटवर्क तैयार किया है, जिससे उनके आसपास के लोग भी मछली पालन में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। उनका यह मार्गदर्शन स्थानीय समुदाय में सकारात्मक बदलाव ला रहा है और गांव में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

निष्कर्ष

श्रीमती आशा ज्योति गिरी की यात्रा हमें यह सिखाती है कि यदि नीयत सच्ची हो और कार्य में ईमानदारी हो, तो कोई भी कठिनाई असंभव नहीं होती। उनका जीवन यह प्रमाणित करता है कि आत्मविश्वास और मेहनत से कोई भी सपना सच हो सकता है। उनका सपना है कि उनके जिले के और अधिक किसान मछली पालन में प्रशिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनें और इस व्यवसाय को एक मजबूत और स्थिर उद्योग के रूप में स्थापित करें।

"सपनों को उड़ान दो, मेहनत को पहचान दो – श्रीमती आशा ज्योति गिरि जैसी महिलाओं से सीखो, जो हर बाधा को अवसर में बदलना जानती हैं।"

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	3 लाख
वार्षिक आय	-	6 लाख
शुद्ध आय	-	3 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	4 टन	
रोज़गार		

मत्स्य पालन से आत्मनिर्भरता की ओर

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सरिता देवी
मोबाईल	9523270438
जिला	लोहरदगा
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	Biofloc pond
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

श्रीमती सरिता देवी, ग्राम चट्टी, प्रखंड भण्डरा की निवासी हैं। एक सामान्य गृहणी के रूप में जीवन की शुरुआत करने वाली सरिता देवी ने विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और अपने दृढ़ संकल्प और जिला मत्स्य कार्यालय, लोहरदगा की सहायता से आत्मनिर्भर बनने की राह अपनाई। उनके पति श्री सुदामा गिरि परिवार के एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे, परंतु कोरोना काल में उनका रोजगार छिन गया जिससे परिवार पर आर्थिक संकट आ गया।

योजना की शुरुआत

इस संकट की घड़ी में जिला मत्स्य कार्यालय, लोहरदगा ने सहारा बनकर सरिता देवी को वायोफ्लोक तकनीक पर आधारित मत्स्य पालन की दिशा में प्रेरित किया। "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)" के अंतर्गत चल रही 47 योजनाओं के अंतर्गत एक उपयोजना बायोफ्लॉक तालाब का लाभ दिया गया।

वित्तीय वर्ष 2023-24 में उनका चयन "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई)" अंतर्गत बायोफलॉक तालाब निर्माण हेतु महिला श्रेणी में 60% अनुदान पर किया गया। बायोफलॉक तालाब निर्माण का कुल परियोजना लागत 14.00 लाख रु था, जिसमें से श्रीमती सरिता देवी को 8.40लाख रु की अनुदान राशि (केंद्राश- 5.04 लाख रु एवं राज्यांश-3.36 लाख रु) का समर्थन मिला।

उन्होंने पहले स्थानीय सफल मत्स्य कृषक से प्रेरणा ली और तत्पश्चात मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, धुर्वा, रांची एवं National Fisheries Development Board (NFDB) द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया। विभागीय सहायता प्राप्त कर उन्होंने अपनी लगभग 30 डिसमिल भूमि पर बायोफ्लॉक तालाब का निर्माण कर मत्स्य पालन आरंभ किया। इस सहयोग ओर प्रशिक्षण ने उनके जीवन में वो सकारात्मक बदलाव लाए जिन्हें आज हम

उनके दिन-ब-दिन बढ़ते मत्स्य उत्पादन से देख पा रहे हैं।

आर्थिक लाभ

शुरुआती वर्ष से ही सरिता देवी को मत्स्य पालन से अच्छा मुनाफा होने लगा। वर्तमान में वे 40 डिसमिल जलक्षेत्र में कार्य कर रही हैं और प्रतिवर्ष लगभग 4 टन मछली उत्पादन कर रही हैं, जिससे उनका वार्षिक टर्नओवर लगभग 6 लाख रुपये है। इस व्यवसाय ने न केवल उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाया, बल्कि उन्हें अपने क्षेत्र में एक सफल उद्यमी के रूप में स्थापित किया।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती सरिता देवी आज न केवल अपने लिए बल्कि अपने गांव और आस-पास के क्षेत्रों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन चुकी हैं। वे बेरोजगार युवाओं को मत्स्य पालन का प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं। वह निःस्वार्थ भाव से लोगों को मछली पालन से जुड़ी जानकारी देती हैं और कई ग्रामीण युवाओं को इस दिशा में मार्गदर्शन कर चुकी हैं। इसके साथ ही उन्होंने धान के खेतों में भी मछली पालन की सफल शुरुआत की है, जिससे खेती और मछली पालन का एकीकृत मॉडल उभर कर आया है।

निष्कर्ष

श्रीमती सरिता देवी की कहानी इस बात का प्रमाण है कि अगर इच्छाशक्ति हो और सही मार्गदर्शन प्राप्त हो तो कोई भी महिला आत्मनिर्भर बन सकती है। उनकी सफलता मत्स्य पालन के क्षेत्र में नवाचार, समर्पण और विभागीय सहयोग का जीवंत उदाहरण है।

उनका सपना है कि अधिक से अधिक किसान मत्स्य पालन में प्रशिक्षित होकर इस क्षेत्र से जुड़ें और आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर हों। मत्स्य विभाग, लोहरदगा द्वारा प्रदत्त सहयोग और उनके व्यक्तिगत प्रयासों ने उन्हें एक रोल मॉडल के रूप में स्थापित कर दिया है।

"मछली पालन केवल व्यवसाय नहीं, यह आत्मनिर्भरता और समृद्धि की दिशा में एक सशक्त कदम है।" – श्रीमती सरिता देवी

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	3 लाख
वार्षिक आय	-	6 लाख
शुद्ध आय	-	3 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	4 टन	
रोज़गार		

जलीय कृषि के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

लाभुक की विवरणी	
लाभुक का नाम	सुप्रिया मंडल
मोबाईल	7667353728
जिला	पाकुड़
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	माध्यमिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	कार्प हैचरी
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

परिचय

श्रीमती सुप्रिया मंडल, झारखंड राज्य के पाकुड़ जिले में स्थित गांधीपुर गांव के एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार से हैं। परिवार की आय बहुत कम होने के कारण, उनका प्रारंभिक जीवन चुनौतियों से भरा था। उनके लिए अपने परिवार की आजीविका सुरक्षित करना और अन्य आवश्यकताओं को पूरा करना बहुत कठिन था। जिला मत्स्य कार्यालय, पाकुड़ द्वारा उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी प्राप्त कर जीवन की विभिन्न चुनौतियाँ से उभरकर एक अच्छे भविष्य की कामना करते हुए, उन्होंने PMMSY के विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र की एवं PMMSY लाभुकों की कड़ी मे जुड़कर, अपने और अपने समुदाय के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने का दृढ़ संकल्प लिया ।

फिन फिश हैचरी की स्थापना की पहल

श्रीमती सुप्रिया मंडल का परिवार पेशे से मछली पकड़ने के कार्य में लगा हुआ था। किन्तु उनका व्यवसाय बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण उसके माध्यम से आजीविका की आवश्यकताओं को पूरा करना संभव नहीं था। इस प्रकार, उनका दृष्टिकोण 2020 में पारंपरिक मछली पकड़ने के व्यवसाय से आगे बढ़ गया, और PMMSY के तहत मत्स्य पालन विभाग की सहायता से मीठे पानी फिनफिश हैचरी की स्थापना करके एक महत्वपूर्ण प्रयास कर आगे बढ़ाया। इस हैचरी इकाई ने गुणवत्तापूर्ण मछली बीज उत्पादन पर ध्यान केंद्रित किया और पूरे इलाके में मत्स्य बीज उपलब्ध करने में योगदान दिया, जो उनके व्यवसाय में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

इस पहल के माध्यम से, लगभग 5.00 लाख रु के वार्षिक आय के साथ, 83 मिलियन उच्च गुणवत्ता वाले मत्स्य स्पॉन उत्पादन करने में सक्षम है। यह उपलब्धि न केवल उनकी उद्यमशीलता की भावना को प्रदर्शित करता है, बल्कि उनके परिवार और स्थानीय

मत्स्य किसानों की आजीविका में सुधार के लिए उनके समर्पण को भी दर्शाता है। एक छोटे मछुआरे से चलकर एक सफल हैचरी मालिक तक की उनकी यात्रा उनके समुदाय के अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का श्रोत है, जो यह साबित करती है कि दृढ़ संकल्प और सही दिशानिर्देश द्वारा चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और सफलता प्राप्त कर पूरे समाज के लिए एक उदाहरण साबित हो सकता है।

वर्ष 2020–21 में, श्रीमती सुप्रिया मंडल ने झारखंड के पाकुड़ जिले के गांधीपुर गांव में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत मत्स्य विभाग, झारखंड से 15.00 लाख रुपये अनुदान राशि प्राप्त की एवं मीठे पानी की फिनफिश हैचरी की स्थापना की। यह हैचरी आई.एम.सी. (कतला, रोहू, मृगल) और कॉमन कार्प जैसी प्रमुख मत्स्य प्रजातियों के कृत्रिम प्रजनन के लिए, आवश्यक बुनियादी ढांचे से सुसज्जित है, जिसमें एक प्रजनन पूल, हैचिंग पूल और ओवर हेड टैंक की स्थापना की गई जिसमे कृत्रिम प्रजनन और बीज उत्पादन के कार्य के लिए उपयुक्त है।

आर्थिक लाभ

श्रीमती मंडल को मत्स्य विभाग ने हैचरी के सफल कामकाज के लिए तकनीकी प्रशिक्षण सहित हैचरी योजना, डिजाइनिंग, ढांचागत सहायता के लिए हर पहलू में उनका मार्गदर्शन किया। इस सहयोग ने श्रीमती मंडल को प्रभावशाली वार्षिक क्षमता हासिल करने में सक्षम बनाया है।

वर्ष 2023 और 2024 के बीच, इस हैचरी के माध्यम से 83 मिलियन मत्स्य स्पॉन की प्राप्ति की गई, जिसमें 70 मिलियन भारतीय मेजर कार्प (आईएमसी) शामिल हैं – और 13 मिलियन कॉमन कार्प स्पॉन शामिल हैं। उत्पादित स्पॉन निजी तालाब के मालिक/मछली उत्पादक/स्थानीय समुदाय आदि को बेचे जाते हैं। पिछले वर्षों में, श्रीमती मंडल ने लगभग 5.00 लाख रु. का वार्षिक उत्पादन प्राप्त कर, पारिवारिक अर्थव्यवस्था में योगदान दिया और मत्स्य किसानों की आजीविका का समर्थन किया है। इस पहल के माध्यम से, स्थानीय मत्स्य किसानों को किफायती मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज उपलब्ध है। श्रीमती मंडल का पाकुड़ जिले में मत्स्य किसानों के साथ बेहतर संपर्क हैं, जिससे जलीय कृषि क्षेत्र पर उनका प्रभाव और मजबूत हुआ है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती मंडल द्वारा हैचरी की स्थापना से आर्थिक विकास, आजीविका सुरक्षा, रोजगार के अवसर, बाल शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता, जीवन स्तर पर काफी सुधार हुआ है। इस आत्मविश्वास और मत्स्य विभाग के सहयोग से उन्होंने आसपास के इलाके में एक अलग पहचान बनाई है।

निष्कर्ष

श्रीमती मंडल का स्टार्टअप, मत्स्य पालन और जलीय कृषि में सबसे तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र में से एक है और मानव आहार में उच्च प्रोटीन का प्राथमिक स्रोत है। फिन फिश फ्रेश वाटर हैचरी में सुप्रिया मंडल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और मत्स्य बीज उत्पादन के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का एक उदाहरण बन रही हैं। वर्तमान में स्थानीय मत्स्य किसानों को गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज की आपूर्ति करने और बाजार में एक मजबूत कनेक्टिविटी बनाने

में सक्षम है। भविष्य के लिए एक स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ, विभिन्न मत्स्य प्रजातियों के प्रजनन में विविधता लाने और राज्य में स्पॉन एवं फ्राई की आपूर्ति के लिए अपने संचालन का विस्तार करने में गहरी रुचि रखती है तथा लोकल फॉर वोकल के सपनों को साकार करती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	IMC एवं Common Carp
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	06 चक्र
परिचालन लागत	-	2.95 लाख
वार्षिक आय	-	5.00 लाख
शुद्ध आय	-	2.04 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	83 मिलियन मत्स्य स्पॉन	
रोजगार	4 व्यक्ति	

सपने हुए साकार : पीएमएमएसवाई ने खोले द्वार

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	शर्मिला टुडु
मोबाईल	6295126484
जिला	पाकुड़
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	उच्च माध्यमिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	7 टैंक बायोफ्लोक
कुल परियोजना लागत	7.50 लाख
अनुदान राशि	4.50 लाख

परिचय:

श्रीमती शर्मिला टुडु, झारखंड राज्य के पाकुड़ जिले में स्थित ब्लॉक- पाकुरिया, बनोग्राम गांव के एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार से हैं। शर्मिला टुडु का पूरा परिवार उनके पति के रोजगार मे आश्रित था और शर्मिला टुडु उनके घर के पीछे पारंपरिक सब्जी खेती कर थोड़ा बहुत अपने पति का जीविका मे हाथ बंटाती थी। जीवन के इस मोड़ पर उन्हे एक नई उम्मीद मिली जब उन्हे पाकुरिया के मत्स्य मित्र के माध्यम से मछली पालन के पाँच दिवसीय प्रशिक्षण के बारे मे जानकारी मिला और वों मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, रांची जाकर मछली पालन और "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" के विषय मे जानकारी ली। यह प्रशिक्षण एवं योजना उनके जीवन मे एक नया मोड़ लेकर आई। आज श्रीमती शर्मिला टुडु न केवल अपनी जरूरतों को सहजता से पूरा कर रही है बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गई है ।

7 टैंक बायोफ्लोक की स्थापना-

श्रीमती शर्मिला टुडु ने "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" के अंतर्गत 7 टैंक बायोफ्लोक योजना के लिए वर्ष 2020-21 मे जिला मत्स्य कार्यालय पाकुड़ मे आवेदन दिया, उन्हे महिला कोटि मे चयनित किया गया, जिसके तहत उन्हें 60% अनुदान की सहायता राशि प्राप्त हुई। तत्पश्चात मत्स्य विभाग, झारखंड से मिले सहयोग से उन्होंने अपनी कार्य की शुरुआत कर नई व्यवसाय की ओर कदम बढ़ाया।

आर्थिक लाभ -

श्रीमती शर्मिला टुडु, "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" की एक लाभार्थी 7 टैंक बायोफ्लोक में मछली पालन कर अपने आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव ला चुकी हैं। उनको प्रतिवर्ष लगभग 2.60 लाख रु० की आमदनी हो रही हैं । इस व्यवसाय के माध्यम से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

सामाजिक प्रभाव –

श्रीमती शर्मिला टुडु, का यह उदाहरण साबित करता है की मेहनत के साथ न केवल व्यक्तिगत आय में वृद्धि हो सकती है, बल्कि समाज में भी रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं। इनकी यह सफलता की कहानी दिखाती है कि PMMSY जैसे अवसर महिलाओं को सशक्त बनाने और आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण योगदान देने मे सक्षम है।

निष्कर्ष –

श्रीमती शर्मिला टुडु की सफलता यह दर्शाती है की सही मार्गदर्शन और प्रयास से कोई भी महिला अपने जीवन को नया दिशा दे सकती है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत् 7 टैंक बायोफ्लोक स्थापित कर न केवल अपनी आय मे वृद्धि की, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किए है एवं महिलाओं के लिए प्रेरणा का एक उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। उनकी सफलता साबित करती है कि अगर इचहशक्ति और लगन हो तो, कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	1.6 लाख
वार्षिक आय	-	2.6 लाख
शुद्ध आय	-	1.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	2-3 टन	
रोज़गार	1 व्यक्ति	

मत्स्य पालन द्वारा जीविकोपार्जन की पहल

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	आशा सरकार
मोबाईल	7667353728
जिला	पाकुड़
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	उच्च माध्यमिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	7 टैंक बायफ्लोक
कुल परियोजना लागत	7.50 लाख
अनुदान राशि	4.50 लाख

परिचय:

श्रीमती आशा सरकार, झारखंड राज्य के पाकुड़ जिले में स्थित ब्लॉक- महेशपुर, सोनपड़ा गांव के एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार से हैं। श्रीमती आशा सरकार पढ़ाई बीच मे छोड़कर अपनी गृहस्थी संभालते हुए अपनी जीविका चल रही थी। अपने परिवार के खर्चे और भविष्य की जरूरतों के हिसाब से बहुत मुश्किल मे अपना घर चल रहीं थी। जीवन के इस मोड़ पर उन्हे एक नई उम्मीद मिली जब उन्हे महेशपुर के मत्स्य मित्र के माध्यम से जिला मत्स्य कार्यालय, पाकुड़ द्वारा संचालित "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं की जानकारी मिली । उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय, पाकुड़ से संपर्क कर 7 टैंक बायोफलोक योजना का लाभ लिया एवं नए व्यवसाय की शुरुआत की। यह योजना उनके जीवन मे एक नया मोड़ लेकर आई, जिसमे उन्हे यह विश्वास हुआ यदि मेहनत और लग्न से किसी काम को किया जाए तो मंजिल तक पहुंचते देर नहीं लगती । आज श्रीमती आशा सरकार न केवल अपनी जरूरतों को सहजता से पूरा कर रही है बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गई है ।

7 टैंक बायोफ्लोक की स्थापना-

श्रीमती आशा सरकार ने "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" के अंतर्गत 7 टैंक बायोफ्लोक योजना के लिए वर्ष 2020-21 मे जिला मत्स्य कार्यालय पाकुड़ मे आवेदन दिया, उन्हे महिला कोटि मे चयनित किया गया, जिसके तहत उन्हें 60% अनुदान की सहायता राशि प्राप्त हुई। तत्पश्चात मत्स्य विभाग, झारखंड से मिले सहयोग से उन्होंने अपनी कार्य की शुरुआत कर नई व्यवसाय की ओर कदम बढ़ाया।

आर्थिक लाभ -

श्रीमती आशा सरकार, "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" की एक लाभार्थी 7 टैंक बायोफ्लोक में मछली पालन कर अपने आर्थिक स्थति में महत्वपूर्ण बदलाव ला चुकी हैं। उनको प्रतिवर्ष लगभग 2.46 लाख रु० की आमदनी हो रही हैं। इस व्यवसाय के माध्यम से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

सामाजिक प्रभाव –

श्रीमती आशा सरकार, का यह उदाहरण साबित करता है की मेहनत के साथ न केवल व्यक्तिगत आय में वृद्धि हो सकती है, बल्कि समाज में भी रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं । इनकी यह सफलता की कहानी दिखाती है कि PMMSY जैसे अवसर महिलाओं को सशक्त बनाने और आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण योगदान देने मे सक्षम है।

निष्कर्ष –

श्रीमती आशा सरकार की सफलता यह दर्शाती है की सही मार्गदर्शन और प्रयास से कोई भी महिला अपने जीवन को नई दिशा दे सकती है । प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत् 7 टैंक बायोफ्लोक स्थापित कर न केवल अपनी आय मे वृद्धि की, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किए है एवं महिलाओं के लिए प्रेरणा का एक उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। उनकी सफलता साबित करती है कि अगर इचहशक्ति और लगन हो तो, कोई भी चुनौती बड़ी नहीं होती।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	2.46 लाख
वार्षिक आय	-	3.36 लाख
शुद्ध आय	-	0.90 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	2.8 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

सरकारी अनुदान : मत्स्य पालन में वरदान

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	नमिता दास
मोबाईल	6295126484
जिला	पाकुड़
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	उच्च माध्यमिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	7 टैंक बायोफ्लोक
कुल परियोजना लागत	7.50 लाख
अनुदान राशि	4.50 लाख

परिचय:

श्रीमती नमिता दास, झारखंड के पाकुड़ जिले के महेशपुर प्रखंड अंतर्गत मोहुबन्ना गाँव की निवासी हैं। महिला कोटि में चयनित श्रीमती दास को प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत 7 टैंक बायोफ्लोक योजना का लाभ प्राप्त हुआ। पहले उनके पास मत्स्य पालन का कोई अनुभव नहीं था, लेकिन इस योजना से जुड़ने के बाद उन्होंने मछली पालन में एक सफल उद्यम की शुरुआत की।

7 टैंक बायोफ्लोक की स्थापना-

साल 2022-23 में योजना के तहत चयन के पश्चात उन्हें ₹4.50 लाख की सब्सिडी प्राप्त हुई। उन्होंने अपने क्षेत्र में 7 टैंक बायोफ्लोक प्रणाली स्थापित की, जिसमें उन्होंने मांगुर, शिंघी, कोई और पंगास जैसी मछलियों का पालन शुरू किया।

आर्थिक लाभ -

श्रीमती नमिता दास, "प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)" की एक लाभार्थी 7 टैंक बायोफ्लोक में मछली पालन कर अपने आर्थिक स्थति में महत्वपूर्ण बदलाव ला चुकी हैं। उनको साल के दो फसल चक्र में से प्रति फसल मे शुद्ध आय: ₹1.65 लाख रु० की आमदनी हो रही हैं। इस व्यवसाय के माध्यम से पहले जहां कोई आय नहीं थी, अब नियमित आमदनी हो रही है, जिससे घर की आर्थिक स्थिति में बड़ा सुधार हुआ है।

सामाजिक प्रभाव –

श्रीमती नमिता दास, का यह उदाहरण साबित करता है की मेहनत के साथ न केवल व्यक्तिगत आय में वृद्धि हो सकती है, बल्कि समाज में भी रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं। श्रीमती दास अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गई हैं और यह सफलता ग्रामीण महिलाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत बन चुकी है। इनकी यह सफलता की कहानी दिखाती है कि PMMSY जैसे अवसर महिलाओं को सशक्त बनाने और आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण योगदान देने मे सक्षम है।

निष्कर्ष –

श्रीमती नमिता दास की सफलता यह दर्शाती है कि उचित योजना, मार्गदर्शन और मेहनत के साथ कोई भी महिला आत्मनिर्भर बन सकती है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना की मदद से उन्होंने न केवल अपने परिवार की स्थिति सुदृढ़ की, बल्कि समाज में महिला सशक्तिकरण का उदाहरण भी प्रस्तुत किया।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	1.71 लाख
वार्षिक आय	-	3.36 लाख
शुद्ध आय	-	1.65 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	3-4 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

घर की चौखट से, उद्यमीता के अवसर तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	कावेरी बाला दासी
मोबाईल	9631423721
जिला	पाकुड़
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022 -23
अवयव	बायोफ्लाक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय:

झारखंड के एक छोटे से गाँव की रहनेवाली कावेरी बाला दासी चुनौती को अवसर में बदलने की एक प्रेरणादायक उदाहरण है। पाकुड़ जिला के महेशपुर प्रखण्ड की श्रीमती दासी ने मत्स्य पालन को अपनाकर न केवल अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत किया है, बल्कि क्षेत्र के कई युवाओं के लिए स्वरोजगार का एक नया रास्ता भी दिखाया है। जिला मत्स्य कार्यालय, पाकुर के संपर्क और मत्स्य विभाग की योजनाओं का लाभ उठाकर आर्थिक सशक्तिकरण को समृद्ध किया। भारत सरकार द्वारा प्रायोजित "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई)" के तहत चल रहे आधुनिक मत्स्य तकनीकी "बायोफ्लाक तालाब" में मछली पालन के बारे में प्राप्त जानकारी से काफी प्रभावित हुई और महसूस किया कि यह आधुनिक तकनीक महिला के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है, जो न केवल उनकी जीविका को सुरक्षित कर सकता है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर भी बना सकता है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना अन्तर्गत महिला कोटी से 60% अनुदान का लाभ लेकर कार्य की शुरुआत की। मत्स्य विभाग द्वारा प्राप्त जानकारी का अनुपालन करते हुए इस तकनीकी के बारे में मत्स्य विभाग द्वारा संचालित प्रशिक्षण में भाग लिया और अपनी तकनीकी कौशल और ज्ञान को समृद्ध किया।

इस तकनीक का क्रियान्वयन उन्होंने अपने निवास स्थान महेशपुर प्रखण्ड अन्तर्गत चापतुरा ग्राम में किया, जिससे न केवल उनका जीवन बेहतर हुआ, बल्कि उनके जैसे अन्य लोगों के लिए भी यह एक प्रेरणा का स्रोत बन गई है । आज श्रीमती दासी एक सफल मत्स्य पालक के रूप में मछली पालन के क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुकी हैं, और उनकी सफलता आसपास के क्षेत्रों में रहनेवाले अन्य लोगों को भी इस व्यवसाय से जुडने के लिए प्रेरित करती है ।

बायोफ्लाक तालाब में मछली पालन की पहल:

वित्तीय वर्ष 2022-23 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत "बायोफ्लॉक तालाब" अधिष्ठापन कार्य हेतु लाभुक श्रीमती कावेरी बाला दासी को स्वीकृति मिली । मत्स्य विभाग द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण का अनुसरण करते हुए 0.1 हेक्टर जल क्षेत्र में बायोफ्लॉक तालाब का निर्माण किया गया । इस योजना की कुल निर्धारित लागत 14.00 लाख रुपए है , जिसमें लाभुक का अंशदान 5.60 लाख रुपए (40%) तथा सरकार का अनुदान 8.40 लाख रुपए (60%) प्राप्त हुआ । तालाब की तैयारी एवं पानी की भौतिक-रासायनिक मापदंड को मछली पालन योग्य तैयार करने के उपरांत अच्छी गुणवत्ता वाले मछली बीज (प्रजाति- मांगुर, सिंघी, कवई एवं पंगास) का संचयन किया गया । प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी का उपयोग करते हुए समय-समय पे मछली को संतुलित आहार, पानी गुणवत्ता की जांच, निगरानी और प्रबंधन का विशेष ध्यान रखा गया। श्रीमती दासी अपने दृढ़ संकल्प, समर्पण के साथ इस कार्य को अपना रोजगार एवं जीवन आधार मानते हुए सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया।

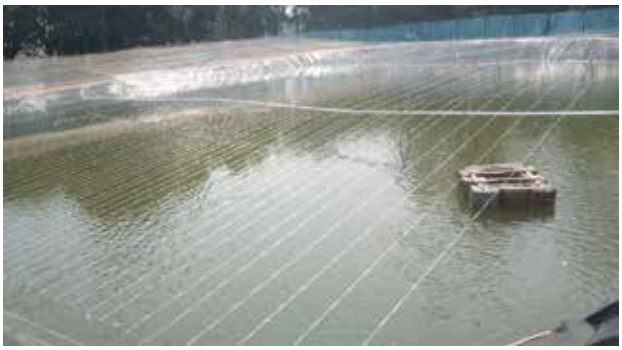

आर्थिक लाभ:

बायोफ्लॉक तालाब में मत्स्य पालन के लिए कुल 3.10 लाख रुपए का परिचालन लागत खर्च हुआ जिसके फलस्वरूप प्रथम वर्ष में 5.86 टन मछली का उत्पादन प्राप्त हुआ । प्राप्त उत्पादन को स्थानीय बाजार में औसतन 110 रुपए प्रति किलोग्राम के दर से बिक्री करके कुल 6.44 लाख रुपए का लाभ हुआ, जिसमें शुद्ध मुनाफा 3.34 लाख रुपए प्राप्त हुआ । प्रथम वर्ष में प्राप्त अनुभव के आधार पर वर्तमान में और भी बेहतर तरीके से मत्स्य पालन का कार्य कर रही है। लाभुक द्वारा बायोफ्लॉक तालाब से 2 -3 व्यक्तियों को मजदुर के तौर पर अप्रत्यक्ष रोजगार से भी जोड़ा गया है ।

सामाजिक प्रभाव:

श्रीमती कावेरी बाला दासी की सफलता न केवल उनकी व्यक्तिगत जीवन को बदलने में मदद की, बल्कि पूरे समुदाय में एक सकारात्मक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाया है। मछली प्रोटीन और सूक्ष्म पोषक तत्वों का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो खाद्य सुरक्षा और पोषण को बढ़ाती है, मत्स्य पालन के जरिए अपने परिवार एवं स्थानीय समुदायों को बेहतर खाद्य सुरक्षा और रोजगार से जोड़ा है। मत्स्य पालन की आधुनिक तकनीक का उपयोग करके अपनी आजीविका को सशक्त एवं स्वरोगार को सुनिशित करने की दिशा में सफलतापूर्वक प्रयास सराहनीय है।

निष्कर्ष:

श्रीमती कावेरी बाला दासी की यह कहानी न केवल आत्मनिर्भरता की मिसाल प्रस्तुत करती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि सही दिशा और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग करने से एक सामान्य महिला भी अपने जीवन को बदल सकती है और दूसरों के लिए भी एक प्रेरणा बन सकती है। उनकी सकारात्मक पहल और सफलता पाकुड़ जिले में बायोफ्लॉक तालाब में मत्स्य पालन की आधुनिक तकनीक के माध्यम से मछली पालन को एक नई पहचान दी है। मछली पालन, मछली पालकों, श्रमिकों और व्यापारियों सहित इस व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए आय और आजीविका का एक स्रोत बन सकता है ।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	3.10 लाख
वार्षिक आय	-	6.44 लाख
शुद्ध आय	-	3.34 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	5-6 टन	
रोजगार	2 व्यक्ति	

RAS तकनीक से बदली बिनीता की किस्मत

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	बिनिता पाण्डेय
मोबाईल	7004607045
जिला	पलामू
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Large RAS- 8 tanks
कुल परियोजना लागत	50.00 लाख
अनुदान राशि	30.00 लाख

परिचय :

झारखंड राज्य के पलामू जिले की निवासी श्रीमती बिनीता **पाण्डेय** ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि इच्छाशक्ति और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग जीवन को नई दिशा दे सकता है। एक सामान्य महिला से सफल मत्स्य पालक बनने तक का उनका सफर कई महिलाओं और युवाओं के लिए प्रेरणा है।

परियोजना की शुरुआत:

वित्तीय वर्ष 2020-21 में बिनीता पांडे ने **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** (PMMSY) के अंतर्गत "Large RAS" को अपनाया। योजना की जानकारी उन्हें जिला मत्स्य कार्यालय, पलामू से प्राप्त हुई और उन्होंने प्रशिक्षण लेकर इसकी शुरुआत की। पहले वे केवल तालाब में साधारण कार्य करती थीं और आय सीमित थी।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना अंतर्गत उन्हे महिला लाभुक होने के कारण सरकार से 30 लाख की सब्सिडी प्राप्त हुई, जिससे उन्होंने 50 लाख की परियोजना की शुरुआत की। इस परियोजना में उन्होंने पंगासियस, देशी मागुर, मोनोसेक्स तिलापिया जैसी मछलियों का पालन शुरू किया।

आर्थिक लाभ:

बेहतर प्रबंधन, गुणवत्ता युक्त बीज, प्रशिक्षित श्रमिक, सोलर पंप जैसे आधुनिक उपायों से लागत को घटाया गया और उत्पादन में वृद्धि हुई।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	29.60 लाख
वार्षिक आय	-	38.40 लाख
शुद्ध आय	-	8.40 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	32 टन	
रोज़गार	4-5 व्यक्ति	

सामाजिक प्रभाव:

- परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, जिससे अब घर के बच्चे नियमित रूप से अच्छे स्कूलों में पढ़ाई कर पा रहे हैं।
- बिनीता अब क्षेत्र में प्रेरणास्त्रोत बन चुकी हैं और अन्य महिलाएं भी मत्स्य पालन की ओर आकर्षित हो रही हैं।
- क्षेत्र में आय के नए स्रोत उत्पन्न हुए हैं और सामुदायिक भागीदारी में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष:

बिनीता पांडे की यह यात्रा दिखाती है कि यदि सही योजना, मार्गदर्शन और परिश्रम मिले तो कोई भी महिला आत्मनिर्भर बन सकती है। मत्स्य पालन के क्षेत्र में उनका यह प्रयास न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक बदलाव का भी माध्यम बना है। यह कहानी उन सभी के लिए प्रेरणा है जो बदलाव की राह पर चलना चाहते हैं।

सफलता की कहानी सं.–48

बायोफ्लॉक से बदली तकदीर

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	शेषा देवी
मोबाईल	7061129126
जिला	पलामू
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Biofloc ponds
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय :

झारखंड राज्य के पलामू जिले की एक साधारण महिला **श्रीमती शेषा देवी** ने यह दिखा दिया कि अगर अवसर और मार्गदर्शन मिले, तो महिलाएं भी मत्स्य पालन जैसे तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकती हैं। कभी घरेलू कामों में व्यस्त रहने वाली शेषा देवी ने **PMMSY योजना** का लाभ लेकर न सिर्फ अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया बल्कि अन्य महिलाओं के लिए भी एक प्रेरणा बन गईं।

परियोजना की शुरुआत:

श्रीमती शेषा देवी को वर्ष 2020-21 में **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** (PMMSY) के अंतर्गत बायोफ्लॉक तालाब का लाभ दिया गायब। इस आधुनिक तकनीक को सीखने तथा सुचारू रूप से चलाने के लिए उन्होंने राँची जाकर मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र से "बायोफ्लॉक 5 दिनों का विशेष प्रशिक्षण" लेकर आधुनिक तकनीकों को समझा और अपनी योजना की शुरुआत की। उन्हें 8.40 लाख की सब्सिडी प्राप्त हुई जिसकी कुल परियोजना लागत 14 लाख रुपए थी। इसके साथ उन्हे प्रोत्साहन के रूप में पंगास तथा तिलपिया मत्स्य अंगुलिकाएं तथा फॉम्यूलेटेड फ़ीड भी उपलब्ध कराया गया।

आर्थिक लाभ:

शेषा देवी की यह यात्रा केवल एक योजना से शुरू होकर व्यवसाय तक नहीं रुकी, बल्कि आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक मिसाल बन गई। हर साल वे लगभग **2 टन मछली**

उत्पादन कर रही है। इस उत्पादन से उन्हें **4.00 लाख रुपये की वार्षिक आय** होती है। हालांकि, इस व्यवसाय की संचालन लागत लगभग **2 लाख रुपये** होती है, लेकिन इसके बावजूद वे हर साल **1.5-2.00 लाख का शुद्ध मुनाफा** कमा रही हैं - जो पहले उनके लिए एक कल्पना जैसा था।

शेषा देवी ने उत्पादन की गुणवत्ता बनाए रखने और लागत कम करने के लिए **मत्स्य बीज, गुणवत्तापूर्ण चारा, नियमित जल परीक्षण**, और **सौर ऊर्जा आधारित पंपों** पर भी विशेष ध्यान दिया।

उनकी यह सूझबूझ और सीखने की ललक ही थी जिसने उन्हें एक कुशल उद्यमी में बदल दिया - और आज वे न सिर्फ कमाई कर रही हैं, बल्कि दूसरों को भी रोज़गार दे रही हैं।

सामाजिक प्रभाव:

पहले केवल घरेलू कामों में व्यस्त रहने वाली शेषा देवी अब एक सफल मत्स्य व्यवसायी बन चुकी हैं। उनके परिवार की आमदनी बढ़ने से अब बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल रही है। वे अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हैं और उनके मार्गदर्शन में अब कई महिलाएं मत्स्य पालन के प्रति जागरूक हो रही हैं। उनके इस प्रयास से समुदाय में **रोज़गार, क्षेत्रीय आर्थिक सशक्तिकरण** और **सामाजिक सम्मान** में भी वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष:

श्रीमती शेषा देवी की कहानी यह स्पष्ट करती है कि यदि इच्छाशक्ति और सही दिशा मिले, तो कोई भी महिला सीमित संसाधनों से आगे बढ़कर अपनी और समाज की तस्वीर बदल सकती है। **बायोफ्लॉक तकनीक** को अपनाकर उन्होंने अपने जीवन को एक नई दिशा दी है। यह कहानी सभी ग्रामीण महिलाओं के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है जो आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना चाहती हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	2 लाख
वार्षिक आय	-	4 लाख
शुद्ध आय	-	1.5-2 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	2 टन	
रोज़गार		

बायोफ्लॉक तकनीक द्वारा आत्मनिर्भरता का सफर

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	इन्देश प्रसाद
मोबाईल	9631379749
जिला	पलामू
राज्य	झारखंड
कोटि	General
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	बायोफलॉक तालाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	5.60 लाख

झारखंड के पलामू जिले के चैनपुर प्रखंड स्थित नरसिंगपुर पथरा गांव के निवासी श्री इन्देश प्रसाद, एक सामान्य ग्रामीण परिवार से आते हैं। मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे पारंपरिक मछली पालन की गतिविधियों से जुड़े थे, लेकिन वार्षिक मछली का उत्पादन बहुत ही सीमित था और प्राप्त आर्थिक लाभ दैनिक दिनचर्या के लिए आपर्याप्त होने की स्तिथि में उनके परिवार का भरण पोषण करना भी एक चुनौती था। बेहतर आय एवं आजीविका की तलाश में उन्होंने आधुनिक मत्स्य पालन को अपनाकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार करने का निश्चय किया।

वित्तीय वर्ष 2022-23 में, श्री इन्देश प्रसाद को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत बायोफ्लॉक तकनीक के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत बायोफ्लॉक तालाब स्थापित करने का निर्णय लिया। जिसकी कुल परियोजना लागत 14.00 लाख रुपए थी, सामान्य वर्ग के लाभुक होने के कारण सरकार की ओर से 40% अनुदान के रूप में 5.60 लाख रुपए की अनुदान राशि का लाभ श्री इन्देश प्रसाद को दिया गया। यह सहायता उनके लिए एक महत्वपूर्ण सहारा बनी, जिससे उन्होंने तकनीकी रूप से उन्नत मत्स्य पालन की शुरुआत की।

बायोफ्लॉक प्रणाली अपनाने के बाद श्री इन्देश प्रसाद ने मोनोसेक्स तिलापिया, पंगेशियस और देसी मांगुर जैसी मछली प्रजातियों की सफलतापूर्वक खेती शुरू की। आज उनकी वार्षिक उत्पादन 7.00 लाख रुपए है, जिसमे उनका परिचालन लागत 4.50 लाख रुपए है। इस बढ़ी हुई आय ने न केवल उनके जीवन में आर्थिक स्थिरता लाई, बल्कि उन्हें

एक सफल उद्यमी में बदल दिया।

श्री इन्देश प्रसाद ने उत्पादन लागत को कम करने और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए कई सर्वोत्तम जलकृषि पद्धतियाँ (Best Aquaculture Practices - BAP) अपनाईं:

- प्रमाणित बीज और फ़ीड का प्रयोग
- जल परीक्षण और गुणवत्ता प्रबंधन
- जलविज्ञान संबंधी मानकों की निगरानी
- संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त करना
- ऊर्जा लागत कम करने हेतु सौर पंप का उपयोग

इन उपायों ने उनकी कार्यक्षमता और लाभप्रदता को और भी बढ़ा दिया।

बायोफ्लॉक तकनीक और PMMSY योजना ने श्री इन्देश प्रसाद की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। वे अब गांव के अन्य मत्स्य पालकों के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। ग्रामीण युवा अब बायोफ्लॉक तकनीक में रुचि दिखा रहे हैं। उनकी सफलता से स्थानीय जागरूकता और योजना के प्रति विश्वास बढ़ा है।

श्री इन्देश प्रसाद की सफलता की कहानी यह सिद्ध करती है कि यदि इच्छाशक्ति, सही मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं का सहयोग मिले, तो ग्रामीण भारत में भी आर्थिक आत्मनिर्भरता का सपना साकार हो सकता है।

उनकी यात्रा झारखंड जैसे राज्य में मत्स्य पालन के माध्यम से समृद्धि और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक ठोस कदम है। वे अब न केवल एक सफल मत्स्य पालक हैं, बल्कि ग्रामीण नवाचार और प्रेरणा के प्रतीक भी हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास एवं तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	4.50 लाख
वार्षिक आय	-	7.00 लाख
शुद्ध आय	-	2.50 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

आत्मनिर्भरता की ओर सफल सफर

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	चाँदनी कुमारी
मोबाईल	6204383900
जिला	रामगढ़
राज्य	झारखंड
कोटि	सामान्य
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	Medium Biofloc-25 tanks
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	10.00 लाख

परिचय

सुश्री चाँदनी कुमारी, झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले के अंतर्गत आने वाले रामगढ़ प्रखंड की निवासी हैं। एक सामान्य ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाली चाँदनी ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो और सही दिशा में मार्गदर्शन मिले, तो कोई भी महिला आत्मनिर्भरता की ओर एक सशक्त कदम बढ़ा सकती है।

चाँदनी का परिवार मुख्यतः कृषि एवं बकरी पालन पर आश्रित था। बचपन से उन्होंने इसी परिवेश को देखा, किन्तु उनके भीतर हमेशा कुछ नया, लाभकारी और सृजनात्मक कार्य करने की तीव्र आकांक्षा रही। जब उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी प्राप्त हुई, तो उन्होंने इसे अवसर के रूप में लिया और मछली पालन के क्षेत्र में कदम रखने का साहसिक निर्णय लिया।

परियोजना की शुरुआत

वर्ष 2021 में चाँदनी को जिला मत्स्य कार्यालय, रामगढ़ के माध्यम से केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** (PMMSY) की जानकारी प्राप्त हुई। तत्पश्चात उन्होंने वित्तीय वर्ष 2021-22 में इस योजना के अंतर्गत **25 टैंकों की बायोफ्लॉक इकाई** स्थापित करने का निश्चय किया।

परियोजना की कुल लागत 25.00 लाख निर्धारित थी, जिसमें से चाँदनी को सामान्य श्रेणी के अंतर्गत **40% (10.00लाख)** का अनुदान प्रदान किया गया। तकनीकी दक्षता हेतु चाँदनी को **राँची स्थित मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र** से 5 दिवसीय बायोफ्लॉक आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

इस प्रशिक्षण एवं सरकारी सहायता के माध्यम से उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से मछली पालन की शुरुआत की और अपने उद्यम को व्यवस्थित रूप दिया।

आर्थिक लाभ

सुश्री चाँदनी कुमारी द्वारा अपनाई गई आधुनिक तकनीकों जैसे **नियमित फीडिंग, गुणवत्तापूर्ण जल प्रबंधन**, और **निरंतर देखरेख** के परिणामस्वरूप उन्हें मछली उत्पादन में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई।

अब तक वे लगभग **5 लाख मूल्य की मछलियों** का विक्रय कर चुकी हैं। वर्तमान में उनके पास लगभग **11,000 किलोग्राम मछलियाँ उत्पादन के लिए तैयार** हैं, और पूर्व में **5,000 किलोग्राम मछलियाँ बाजार में बेची जा चुकी** हैं। अनुमान है कि इस इकाई से प्रति वर्ष **8,000–9,000 किलोग्राम तक का कुल उत्पादन** प्राप्त होगा, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में स्थायी एवं सकारात्मक बदलाव आया है।

सामाजिक प्रभाव

इस परियोजना का लाभ केवल चाँदनी और उनके परिवार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने **स्थानीय समुदाय पर भी गहरा प्रभाव** डाला है। उनके इस प्रयास ने न केवल क्षेत्रीय युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान किए, बल्कि मछली पालन में प्रशिक्षण प्राप्त कर वे भी आत्मनिर्भर बनने की राह पर अग्रसर हुए हैं। इसके अतिरिक्त, बायोफ्लॉक टैंकों से निकलने वाले जल का उपयोग **खेती की सिंचाई** में किया जा रहा है, जिससे क्षेत्रीय कृषि उत्पादन की गुणवत्ता एवं मात्रा में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

सुश्री चाँदनी कुमारी की सफलता यह दर्शाती है कि यदि सरकारी योजनाओं का सही उपयोग किया जाए और उसके साथ लगन, परिश्रम एवं दूरदर्शिता जोड़ी जाए, तो ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ भी एक सफल उद्यमी बन सकती हैं।

उनकी यह यात्रा, एक साधारण युवती से सफल मछलीपालक उद्यमी तक की, **नारी सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास और सतत आजीविका सृजन** का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। चाँदनी ने यह स्पष्ट कर दिया कि – **"यदि कुछ करने की ठान ली जाए, तो कोई भी मंज़िल दूर नहीं होती।"**

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	9.25 लाख
वार्षिक आय	-	12.00 लाख
शुद्ध आय	-	2.75 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	10 टन	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

केज कल्चर: सीमित संसाधन, अधिक उत्पादन

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	राजेश कुमार
मोबाईल	9835176956
जिला	रामगढ़
राज्य	झारखंड
कोटि	सामान्य
योग्यता	मैट्रिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	केज कल्चर
कुल परियोजना लागत	15.00 लाख
अनुदान राशि	6.00 लाख

परिचय:

श्री राजेश कुमार, रामगढ़ जिले के पतरातू प्रखंड अंतर्गत गेगड़ा, मुर्कट्टी गाँव के एक मेहनती किसान हैं। पहले वे पारंपरिक खेती और सीमित संसाधनों पर निर्भर थे, जिससे परिवार की जरूरतों को पूरा करना कठिन था । एक साधारण परिवार के राजेश कुमार, शिक्षा के आभाव में घर के कामकाजी जीवन में व्यस्त रहकर अपना जीवनचर्या काफी मुश्किलों और चुनौतियों से गुजार रहे थे। आय के विकल्पों की तलाश में वे जलाशय स्तरीय मत्स्यजीवी सहयोग समिति से जुड़कर मत्स्य पालन की ओर आकर्षित हुए।

वर्ष 2020-21 में प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के तहत उन्होंने केज आधारित मछली पालन के लिए जिला मत्स्य कार्यालय, रामगढ़ के केज मित्र के नेतृत्व मे मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, रांची मे केज मत्स्य पालन, पाँच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेकर प्रशिक्षित हुए। केज मे मछली पालन के बारे में प्राप्त जानकारी से काफी प्रभावित हुए और महसूस किया कि यह आधुनिक तकनीक मछली पालन के लिए अच्छा विकल्प हो सकता है, जो न केवल उनकी जीविका को सुरक्षित कर सकता है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर भी बना सकता है ।

केज में मछली पालन की पहल:

वित्तीय वर्ष 2020-21 मे केज मे मत्स्य पालन तकनीक का क्रियान्वयन उन्होंने पतरातू जलाशय में किया, जिसमे प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना अंतर्गत अनुदान राशि 6.00 लाख का सहायता प्राप्त कर 5 केजों मे मछली पालन का कार्य शुरू किया। उन्होंने अच्छे गुणवत्ता वाले मत्स्य अंगुलिका का संचयन कर मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, रांची द्वारा बताए गए विधि से मछली पालन कार्य करने लगे और पहली फसल निकासी मे उन्हे

लगा की केज मे मत्स्य पालन से न केवल उनका जीवन बेहतर हुआ, बल्कि उनके जैसे अन्य लोगों के लिए भी यह एक प्रेरणा का स्रोत बन चुका है। पहले जहाँ आमदनी का जरिया नहीं था अब वह प्रतिवर्ष लाखों रुपये की आय कर रहे हैं। उनकी मेहनत और वैज्ञानिक तरीके से पालन करने की लगन ने उन्हें सफलता दिलाई। आज राजेश कुमार, न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हैं बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार भी प्रदान कर रहे हैं

आर्थिक लाभ:

केज मे मत्स्य पालन कर पहले वर्ष से प्राप्त अनुभव से दूसरे वर्ष 2 फसल निकासी कर लगभग 10 टन मछली, रांची के मछली मंडी, स्थानीय बाजारो एवं पतरातू जलाशय के पर्यटको को ताज़ा मछली खिलाकर लगभग 9-10 लाख रुपया सालाना आय, जिसमे शुद्ध आय लगभग 7 लाख रुपया है। साथ ही लाभुक द्वारा केज मे मत्स्य पालन से 2-3 व्यक्तियों को मजदुर के तौर पर अप्रत्यक्ष रोजगार से भी जोड़ा गया है।

सामाजिक प्रभाव:

बेरोजगारी से रोजगार मे आने के बाद श्री राजेश कुमार ने सबसे पहले अपने परिवार के भविष्य के लिए बच्चों की शिक्षा मे ध्यान देकर उन्हे अब अंग्रेजी माध्यम स्कूल मे पढ़ाते है। अभी वो बेरोजगार ग्रामीण युवाओ को मत्स्य पालन की तकनीकी जानकारी देकर मत्स्य पालन के क्षेत्र मे रोजगार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है।

निष्कर्ष:

श्री राजेश कुमार की यह कहानी न केवल आत्मनिर्भरता की मिसाल प्रस्तुत करती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि सरकारी योजनाओं का सही उपयोग करने से एक सामान्य ग्रामीण भी अपने जीवन को बदल सकते है और दूसरों के लिए एक प्रेरणा बन सकते है। उनकी सकारात्मक पहल और सफलता रामगढ़ जिले में केज मत्स्य पालन की आधुनिक तकनीक को एक नई पहचान दी है। मछली पालन व्यवसाय मछली पालकों, श्रमिकों और व्यापारियों सहित इस व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए आय और आजीविका का माध्यम बन सकता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	2.5 लाख
वार्षिक आय	-	9.80 लाख
शुद्ध आय	-	7.30 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	10 टन	
रोज़गार	2-3 व्यक्ति	

फीड से फिश फार्मिंग तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	आयुष खेमका
मोबाईल	9709172092
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	सामान्य
योग्यता	Graduate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	LARGE RAS
कुल परियोजना लागत	50.00 लाख
अनुदान राशि	20.00 लाख

परिचय:

झारखंड की राजधानी रांची के नगड़ी प्रखण्ड के रहने वाले श्री आयुष खेमका, ने कभी नहीं सोचा था कि मत्स्य पालन उनके जीवन को एक नई दिशा देगा। जब अधिकांश युवा स्नातक की पढ़ाई के बाद किसी सरकारी नौकरी की आस में वर्षों तक प्रयास करते हैं, वहीं आयुष जी ने सफलता के लिए एक अलग और साहसी रास्ता चुना। आयुष जी पहले से ही मछली फ़ीड व्यवसाय के एक सफल उद्यमी थे। इस व्यवसाय ने उन्हें मछली पालन की दुनिया से परिचित कराया, और यहीं से उनके भीतर मत्स्य पालन की जिज्ञासा ने जनम लिया। मत्स्य फ़ीड एजेंसी चलाते हुए उन्होंने इस क्षेत्र की बारीकियों को नज़दीक से देखा। मछलियों की आवश्यकताओं, उनके स्वास्थ्य, वृद्धि दर और बाजार की मांग जैसे पहलुओं ने उन्हें आकर्षित किया।

श्री आयुष ने ठान लिया कि वे मछली पालन को सिर्फ एक जीविकोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक और संगठित उद्यम बनाएँगे। और इसी सोच को राह दिखाया **प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना** (PMMSY) ने ।

परियोजना का आरंभ:

वित्तीय वर्ष **2020-21** में श्री आयुष ने **PMMSY योजना के तहत "Large RAS (Recirculatory Aquaculture System)"** आधारित एक परियोजना की योजना बनाई। इस परियोजना की कुल लागत 50 लाख रुपए थी, जिसमें से उन्हें 20 लाख रुपए की सरकारी सब्सिडी उन्हे प्राप्त हुई - यह उनकी मेहनत और दूरदृष्टि को मान्यता मिलने जैसा था।

Large RAS प्रणाली एक अत्याधुनिक तकनीक है जिसमें सीमित जल स्रोत में भी मछलियों का उत्पादन अत्यधिक मात्रा में संभव होता है। जल को बार-बार पुनः उपयोग किया जा सकता है, जिससे यह प्रणाली पर्यावरण के अनुकूल भी है। इस प्रणाली की विशेषता है कि यह

पारंपरिक तालाबों की तुलना में कम स्थान में, अधिक नियंत्रण और बेहतर गुणवत्ता के साथ उत्पादन देती है।

श्री आयुष ने इस प्रणाली में **Monosex Tilapia** और **पंगास** जैसी मांग वाली मछलियों का पालन शुरू किया। उन्होंने उच्च गुणवत्ता वाले बीज और फ़ैक्ट्री-निर्मित फ़ीड का उपयोग किया। विभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित **ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रशिक्षणों और कार्यशालाओं** ने उन्हें तकनीकी दक्षता भी प्रदान की।

आर्थिक लाभ:

इस परियोजना की सफलता ने श्री आयुष खेमका को **एक समर्पित व्यवसायी से एक सफल उद्यमी** बना दिया। उनकी इकाई से वर्तमान में:

वार्षिक उत्पादन : 32 टन मछली
कुल वार्षिक आय : 38.4 लाख रुपए
संचालन लागत : 29.6 लाख रुपए
शुद्ध वार्षिक लाभ : 8.8 लाख रुपए

यह न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रतीक है, बल्कि उनकी मेहनत और सटीक योजना की साक्षात मिसाल भी है।

सामाजिक प्रभाव:

श्री आयुष की सफलता से न केवल उनका परिवार, बल्कि उनके आस-पास का पूरा क्षेत्र प्रेरित हो रहा है। उनकी इस परियोजना ने स्थानीय स्तर पर रोजगार भी उत्पन्न किया है। वे अब मत्स्य पालन का एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसे देखकर कई युवा आधुनिक तकनीकों से प्रेरित हो रहे हैं। विभागीय प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं और मार्गदर्शन ने उन्हें एक ऐसा मंच दिया, जहाँ से वे केवल उत्पादक नहीं, बल्कि प्रेरणादायक व्यक्तित्व बन चुके हैं।

निष्कर्ष:

श्री आयुष खेमका की यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि अगर किसी कार्य के प्रति समर्पण, तकनीकी समझ और सकारात्मक सोच हो, तो कोई भी सफलता की ऊँचाइयाँ छू सकता है। PMMSY जैसी योजनाएं जब संकल्प और मेहनत के साथ मिलती हैं, तो वे केवल मछली पालन को नहीं, बल्कि पूरे समाज को सशक्त और आत्मनिर्भर बना देती हैं।

PMMSY योजना ने न केवल आयुष जी को एक नया व्यवसाय दिया, बल्कि उन्हें एक ऐसे क्षेत्र में नेतृत्व करने का अवसर भी दिया जहाँ अभी बहुत संभावनाएं हैं। आयुष जी अब एक सफल उद्यमी हैं और उनका लक्ष्य है कि वह अपने जैसे और लोगों को मछलीपालन के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	29.60 लाख
वार्षिक आय	-	38.40 लाख
शुद्ध आय	-	8.80 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	32 टन	
रोज़गार	7 व्यक्ति	

सफलता की कहानी सं.-53

माटी से जुड़े, तकनीक से बढ़े

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	निशांत कुमार
मोबाईल	9470957037
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	सामान्य
योग्यता	MBA
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	BIOFLOC-50 tank
कुल परियोजना लागत	50.00 लाख
अनुदान राशि	20.00 लाख

परिचय

रांची जिले के रातू प्रखंड के निवासी श्री निशांत कुमार उन युवाओं में से हैं जिन्होंने शिक्षा को सिर्फ एक डिग्री तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज के लिए उपयोगी बनाकर दिखाया। MBA की पढ़ाई पूरी करने के बाद भी उन्होंने शहर का रुख कर कॉर्पोरेट नौकरियों की भीड़ में खुद को नहीं खोया बल्कि एक अलग राह चुनी - कुछ नया और अर्थपूर्ण करने की। वे चाहते थे कि स्वरोजगार के माध्यम से न केवल स्वयं आत्मनिर्भर बनें, बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी सशक्त और स्वावलंबी बना सकें।

इस सपने को साकार करने के लिए उन्होंने मत्स्य पालन को एक आधुनिक दृष्टिकोण के साथ अपनाया। वर्ष 2015-16 से वे मत्स्य विभाग एवं जिला मत्स्य कार्यालय, राँची से सक्रिय रूप से जुड़े रहे और मात्स्यिकी की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर अपने ज्ञान और अनुभव को समृद्ध करते रहे। उनकी यह यात्रा निर्णायक मोड़ पर पहुँची जब उन्हें प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में जानकारी मिली। इस योजना ने उन्हें न सिर्फ आर्थिक रूप से सहायता प्रदान की, बल्कि आधुनिक तकनीकों, प्रशिक्षण, और मार्गदर्शन से उनकी सोच और कार्यशैली को नई उड़ान दी।

आज, श्री निशांत कुमार केवल अपने सपनों को ही नहीं जी रहे हैं, बल्कि आज उन्हे उनके क्षेत्र के साथ साथ पूरे देश में "MBA मछली वाला" के नाम से जाना जाने लगा है एवं एक मत्स्य उद्यमी के रूप में उन्होंने एक फिश फर्म की स्थापना की जो आज "KING FISHERIES FARM" के नाम से विख्यात है। इसके साथ ही अपने क्षेत्र के अनेक लोगों के लिए प्रेरणा और रोजगार का स्रोत भी बन चुके हैं, उनकी सफलता दर्शाती है कि जब कोई युवा ठान ले, तो गाँव की धरती पर भी सफलता की फसल लहलहा सकती है।

योजना की शुरुआत

वित्तीय वर्ष 2020-21 में श्री निशांत कुमार ने प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत सामान्य कोटि के लाभुक के रूप में आवेदन किया और Biofloc प्रणाली को अपनाते हुए 50 टैंक की एक अत्याधुनिक परियोजना की शुरुआत की।

इस परियोजना की कुल लागत थी 50 लाख रुपए , जिसमें से उन्हें सरकार द्वारा 20 लाख रुपए की अनुदान राशि प्राप्त हुई । Biofloc तकनीक, पारंपरिक मत्स्य पालन से एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। यह प्रणाली सीमित जल संसाधनों में अधिक उत्पादन को संभव बनाती है और पानी की बार-बार जरूरत नहीं पड़ती, जिससे यह पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ विकल्प बन जाती है। इस तकनीक में उपयोग होने वाले सूक्ष्म जीवाणु न केवल जल को स्वच्छ बनाए रखते हैं, बल्कि मछलियों को पौष्टिक आहार भी प्रदान करते हैं।

श्री निशांत कुमार ने इस प्रणाली में Monosex Tilapia और पंगास जैसी तेजी से विकसित होने वाली और बाज़ार में उच्च मांग वाली प्रजातियों का चयन किया। इन प्रजातियों की विशेषता है कि ये सीमित समय में अधिक वजन प्राप्त करती हैं, जिससे वाणिज्यिक दृष्टिकोण से अत्यंत लाभदायक सिद्ध होती हैं।

आर्थिक लाभ

आज श्री निशांत द्वारा संचालित Bio-floc प्रणाली आधारित मत्स्य पालन इकाई अब वर्ष भर में लगभग 20 टन मछली का उत्पादन कर रही है। इस उत्पादन से उन्हें अब सालाना लगभग 20 लाख रुपए की आय हो रही है। इस पूरी प्रक्रिया में उनकी संचालन लागत 5 लाख रुपए रहती है, जिसके पश्चात वे हर वर्ष 15 लाख रुपए का शुद्ध लाभ अर्जित कर रहे हैं।

यह आंकड़े केवल आर्थिक उपलब्धियों को नहीं दर्शाते, बल्कि यह प्रमाण हैं कि यदि दृढ़ संकल्प और सही मार्गदर्शन के साथ कार्य किया जाए, तो ग्रामीण परिवेश में भी सशक्त, आत्मनिर्भर और लाभकारी व्यवसाय खड़ा किया जा सकता है।

सामाजिक प्रभाव

श्री निशांत कुमार की सफलता ने न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए एक प्रेरणा भी बनी। उन्होंने अपने अनुभवों को साझा कर अन्य किसानों को इस तकनीक के लिए प्रशिक्षित किया।

उनके द्वारा शुरू की गई Bio-floc इकाई ने स्थानीय स्तर पर 8-10 व्यक्ति को रोज़गार भी उपलब्ध कराया है। इसके अलावा, उनके प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से कई ग्रामीण मत्स्य पालन में रुचि लेने लगे हैं। वह समय-समय पर ऑनलाइन और ऑफलाइन वर्कशॉप्स भी आयोजित करते हैं।

निष्कर्ष

श्री निशांत कुमार की यह कहानी केवल एक व्यक्ति की सफलता नहीं है, बल्कि यह उस नई सोच और बदलते भारत का प्रतीक है, जहाँ युवा अपनी शिक्षा और कौशल का उपयोग कर गाँवों को भी आत्मनिर्भर और समृद्ध बना रहे हैं। उनकी यह यात्रा यह साबित करती है कि जब सरकार की योजनाएं ज़मीन तक पहुँचती हैं और जब युवाओं में कुछ कर दिखाने का जुनून होता है, तो परिवर्तन सिर्फ सपना नहीं, एक सच्चाई बन जाता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	5.00 लाख
वार्षिक आय	-	20 लाख
शुद्ध आय	-	15.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	20 टन	
रोज़गार	8-10 व्यक्ति	

जल में जीवंत होती रंगीन उम्मीदें: गोयंदी की नई पहचान

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	गोयंदी उराइन
मोबाईल	7542989190
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Non-Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Medium Scale Ornamental fish Rearing Unit (Marine and Freshwater Fish)
कुल परियोजना लागत	8.00 लाख
अनुदान राशि	4.80 लाख

परिचय

श्रीमती गोयंदी उराइन , रांची जिले की एक साधारण लेकिन साहसी महिला, जिनका जीवन कभी ईंट भट्ठों की तपती धूप और कठिन मजदूरी में बीतता था। परिस्थितियाँ विपरीत थीं, संसाधन सीमित थे और आय का कोई स्थायी साधन नहीं था। फिर भी, उनके अंदर कुछ कर दिखाने की जिद और अपने परिवार को बेहतर जीवन देने का सपना पल रहा था। वे चाहती थीं कि उनका जीवन सिर्फ मेहनत और गरीबी का पर्याय ना बने, बल्कि आत्मनिर्भरता, सम्मान और प्रेरणा का उदाहरण बने।

हालांकि वर्ष 2005 से ही वे अपने पति- श्री चरवा उरांव, को मात्स्यिकी क्षेत्र में कार्य करते देखा करती थी, लेकिन उन्हें नहीं पता था कि यही मात्स्यिकी उनकी जीवन की दिशा ही बदल देगा।

योजना की शुरुआत

वर्ष 2020 में जब श्री चरवा उराँव को राँची के जिला मत्स्य पदाधिकारी से प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) की जानकारी प्राप्त हुई, उन्होंने इस योजना की चर्चा अपनी पत्नी श्रीमती गोयनदी से की । यह केवल एक योजना की जानकारी नहीं थी — यह उनके जीवन में एक नई संभावना की किरण थी। इस योजना ने मानो गोयंदी जी की जीवन की दिशा मानो एक नई राह की ओर मोड़ दिया ।

उन्होंने मत्स्य पालन को एक नए भविष्य के रूप में देखा और सीखने की राह पर कदम बढ़ाया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने निम्नलिखित प्रशिक्षणों में भाग लिया:

- 5 दिवसीय मत्स्य पालन प्रशिक्षण
- 3 दिवसीय बीज उत्पादन प्रशिक्षण
- 5 दिवसीय रंगीन मछली पालन प्रशिक्षण

वित्तीय वर्ष 2020-21 में, प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत श्रीमती गोयंदी उराइन को "Medium Scale Ornamental fish Rearing Unit (Marine and Freshwater Fish)" की स्थापना हेतु सहायता प्रदान की गई। अनुसूचित जनजाति से संबंध रखने के कारण उन्हें कुल 8 लाख रुपये की परियोजना लागत पर 4.8 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त हुआ। वित्तीय सहायता के साथ-साथ विभाग की ओर से उन्हें कार्यारंभ हेतु आवश्यक संसाधन — जैसे कि 250 मछलियाँ, मछली आहार (फ़ीड), दवाइयाँ, एरेटर, FRC टैंक आदि — निःशुल्क उपलब्ध कराए गए। उन्होंने लगभग 1000 रंगीन मछलियों से इस उद्यम की शुरुआत की।

आर्थिक लाभ

योजना का लाभ मिलते ही गोयंदी ने रंगीन मछलियों जैसे – गप्पी, मौली, टेट्रा, गोल्ड फिश, प्लैटी, शार्क, स्टोन फिश, स्नेक हेड आदि का पालन शुरू किया। उनके पास अब एक समृद्ध मत्स्य इकाई है, जिससे उन्हें:

- वार्षिक उत्पादन: 10,000 से 20,000 रंगीन मछलियाँ
- वार्षिक आय: 1 से 1.5 लाख
- फसल चक्र: कई बार उत्पादन संभव
- वार्षिक लागत: न्यूनतम, लाभ अधिक

आज वे न केवल अपने घर का खर्च स्वयं चला रही हैं, बल्कि उन्होंने दो अन्य लोगों को भी रोजगार दिया है। इस व्यवसाय के साथ साथ वे अन्य महिलाओं का समूह बनाकर मत्स्य बीज उत्पादक का कार्य भी कर रही है ।

सामाजिक प्रभाव

जहाँ पहले वे ईंट भट्ठों में मजदूरी करने को मजबूर थीं, वहीं आज श्रीमती गोयंदी उराइन एक सफल और आत्मनिर्भर महिला उद्यमी हैं। उनके गाँव और समुदाय की महिलाएं उन्हें एक प्रेरणास्रोत के रूप में देखती हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया कि शिक्षा या संसाधनों की कमी किसी की सफलता में बाधा नहीं बन सकती, यदि इरादे मजबूत हों और सही मार्गदर्शन मिले।

निष्कर्ष

श्रीमती गोयंदी उराइन की कहानी केवल एक महिला की सफलता नहीं है, बल्कि यह उस बदलाव की कहानी है जो सही योजना, मार्गदर्शन और आत्मविश्वास से संभव होता है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना ने उन्हें न सिर्फ आर्थिक रूप से सशक्त बनाया, बल्कि उन्हें समाज में एक सम्मानित स्थान भी दिलाया।

"अब मैं सिर्फ मछलियाँ नहीं पालती, मैं अपने सपनों को तैरते हुए देखती हूं।" – गोयंदी उराइन

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	विभिन्न प्रजाति की रंगीन मछलियाँ
वार्षिक आय	-	2-3 लाख
शुद्ध आय	-	1-1.5 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक विक्रय	10-20000 रंगीन मछलियाँ	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

मछली से मुनाफा और बीज वितरण से बदलाव तक की सफल यात्रा

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	विनोद तिग्गा
मोबाईल	9199290469
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Three wheeler with Ice Box
कुल परियोजना लागत	3.00 लाख
अनुदान राशि	1.80 लाख

परिचय:

रांची जिले के मांडर प्रखंड स्थित एक छोटे से गांव के निवासी **श्री विनोद तिग्गा**, आज झारखंड में **मछली बीज उत्पादन** के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित और प्रेरणादायक नाम बन चुके हैं। लेकिन उनकी यह चमकदार पहचान, संघर्ष की अंधेरी राहों से होकर गुजरी है।

एक समय था जब विनोद जी केवल पारंपरिक खेती पर निर्भर थे। सीमित संसाधन और अनिश्चित मौसम के कारण उनकी आय बहुत कम थी। दैनिक जरूरतों को पूरा करना कठिन होता जा रहा था। कोई स्थायी रोजगार नहीं था और भविष्य अंधकारमय प्रतीत होता था। **2006 में उनका संपर्क जिला मत्स्य कार्यालय, रांची से हुआ**, और यहीं से उनके जीवन में परिवर्तन की कहानी शुरू हुई। समय-समय पर मत्स्य विभाग से मिले समर्थन और सहयोग ने एक आम आम आदमी के जीवन को बदल कर रख दिया।

परियोजना की शुरुआत:

जिला मत्स्य कार्यालय, रांची ने विनोद जी को मत्स्य पालन के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने **तालाबों में मछली बीज उत्पादन** की संभावनाओं को पहचाना और इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने का साहसिक निर्णय लिया। जहाँ अधिकांश लोग बड़ी मछली तैयार करने में पूरा एक वर्ष लगाकर सीमित आमदनी अर्जित करते हैं, वहीं विनोद जी ने मत्स्य बीज उत्पादन के क्षेत्र में कदम रखकर मात्र 4 से 5 महीनों में ही उससे कहीं अधिक मुनाफा कमाना शुरू कर दिया। "तकनीकी ज्ञान और वैज्ञानिक तरीके से कार्य करने के लिए उन्होंने **मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार** से विभाग की अनुशंसा पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने मछली बीज उत्पादन, जल गुणवत्ता प्रबंधन, उच्च गुणवत्ता वाले आहार का चयन, मछलियों की वृद्धि दर, और बीज परिवहन की तकनीकों के बारे में गहन जानकारी प्राप्त की।

धीरे-धीरे उन्होंने तीन तालाब तैयार किए और वैज्ञानिक तरीके से बीज उत्पादन का कार्य शुरू कर दिया। इस कार्य में उनकी मेहनत, अनुशासन और तकनीकी समझ ने उन्हें जिले में एक **प्रशंसित मत्स्य बीज उत्पादक** बना दिया।

3. आर्थिक लाभ:

श्री विनोद तिग्गा द्वारा उत्पादित मछली बीज की गुणवत्ता एवं उत्तरजीविता उच्च होने के कारण उनकी मांग लगातार बढ़ने लगी। उन्होंने **प्रति वर्ष 8 से 10 क्विंटल बीज उत्पादन** शुरू किया, जिससे उन्हें **1 लाख से 1.5 लाख रुपये की वार्षिक शुद्ध आय** प्राप्त होने लगी।

लेकिन समस्या तब आती थी जब बीज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के दौरान मछलियों की मृत्यु हो जाती थी, जिससे काफी नुकसान होता था। इस समस्या को देखते हुए **जिला मत्स्य कार्यालय रांची ने वर्ष 2020-21 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के अंतर्गत उन्हें **तीन-पहिया वाहन** प्रदान किया। इस वाहन की सहायता से बीज का परिवहन सुरक्षित और तेज़ हो गया, जिससे मछलियों की मृत्यु में कमी आई और बिक्री में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप उनकी वार्षिक आमदनी बढ़कर **2.5 से 3 लाख रुपये तक** पहुँच गई। उन्होंने इस आमदनी का सदुपयोग करते हुए अपने व्यवसाय का और विस्तार किया।

4. सामाजिक प्रभाव:

श्री विनोद तिग्गा की सफलता केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह उनके परिवार और समुदाय के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन चुकी है। उनकी मेहनत और मत्स्य विभाग से मिले सहयोग को देखकर उनकी पत्नी **श्रीमती प्रतिमा तिग्गा** को भी वर्ष **2023-24 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** के अंतर्गत **बायोफ्लॉक -7 टैंक योजना** का लाभ प्रदान किया गया, जिसका निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। अब यह दंपत्ति एक साथ मत्स्य व्यवसाय में संलग्न होकर मात्स्यिकी क्षेत्र में आगे बढ़ने की दिशा में प्रयासरत है । उनके बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल रही है, घर में सुविधाएं हैं, और उन्होंने आर्थिक रूप से सशक्त जीवन की ओर कदम बढ़ा लिया है।

इतना ही नहीं, श्री विनोद तिग्गा अब **अपने क्षेत्र के अन्य ग्रामीणों को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं**, उन्हें तकनीकी सलाह दे रहे हैं और मछली पालन की दिशा में आत्मनिर्भर बनने की राह दिखा रहे हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया कि सही मार्गदर्शन, तकनीकी ज्ञान और सरकार की सहायता से ग्रामीण भारत में भी समृद्धि संभव है।

निष्कर्ष:

श्री विनोद तिग्गा की यह कहानी न केवल आत्मनिर्भरता की प्रतीक है, बल्कि यह दर्शाती है कि **सरकारी योजनाएँ जब मेहनत और ज्ञान से जुड़ती हैं, तो असंभव भी संभव बन जाता है।** उन्होंने अपने जीवन को संघर्ष से सफलता में बदला और दूसरों को भी प्रेरित किया। आज वे झारखंड के मत्स्यपालन क्षेत्र में एक **आदर्श मॉडल** बन चुके हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
परिचालन लागत	-	0.70-0.80 लाख
वार्षिक आय	-	2-3 लाख
शुद्ध आय	-	1-1.50 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक बिक्री	8-10 क्विंटल मत्स्य बीज	
रोज़गार	स्वरोजगार	

केज कल्चर से बदलाव की क्रांति

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	कलेश नायक
मोबाईल	8825164548
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	SC
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021–22
अवयव	जलाशयों में केज कल्चर
कुल परियोजना लागत	18.00 लाख
अनुदान राशि	10.80 लाख

परिचय

श्री कलेश नायक, झारखंड के गेतलसूद जलाशय क्षेत्र से ताल्लुक रखने वाले एक युवा हैं, जिनकी यात्रा एक साधारण मछुआरे परिवार से शुरू होकर एक सफल मत्स्य उद्यमी तक पहुँची है। गेतलसूद जलाशय के विस्थापितों में से एक, कलेश नायक ने बचपन से ही मात्स्यिकी में गहरी रूचि दिखाई। छोटी उम्र से ही जलाशय में मछली पकड़ने का कार्य करते हुए उन्होंने इस क्षेत्र की बारीकियों को न केवल समझा, बल्कि उसमें उत्कृष्टता भी हासिल की।

शिक्षा के साथ–साथ उन्होंने मत्स्य गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाई और 2015 से पेशेवर रूप से इस क्षेत्र में जुड़ गए। 2017 में जब उन्होंने मत्स्य विभाग से संपर्क स्थापित किया, तो उनके कार्यों को नई दिशा और पहचान मिली। इसी क्रम में उन्होंने महेशपुर मत्स्यजीवी सहयोग समिति के सचिव के रूप में कार्यभार संभालते हुए समुदाय के साथ मिलकर कार्य करना शुरू किया।

उनकी यह यात्रा तब एक नया मोड़ लेती है जब वर्ष 2022 में उन्हें जिला मत्स्य पदाधिकारी, राँची के माध्यम से प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) की जानकारी मिलती है। इस योजना को उन्होंने अपने जीवन में एक नए अवसर के रूप में स्वीकार किया और इसके तहत 2022-23 में 6 केज इकाइयों की स्थापना कर एक नई शुरुआत की।

जलाशयों में केजों के निर्माण कि पहल

वित्तीय वर्ष 2022–23 में श्री कलेश नायक ने अपनी मात्स्यिकी यात्रा को एक नई दिशा दी, जब उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत

केज कल्चर आधारित मत्स्य पालन की शुरुआत की। अनुसूचित जाति वर्ग के लाभार्थी के रूप में उन्हें इस योजना के अंतर्गत ₹10.8 लाख का अनुदान प्राप्त हुआ, जो ₹18 लाख की कुल परियोजना लागत का 60% था। इस सहायता ने उन्हें गेतलसूद जलाशय में आधुनिक और वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन प्रारंभ करने का अवसर दिया।

यह केवल आर्थिक समर्थन तक सीमित नहीं था। मत्स्य विभाग द्वारा श्री नायक को इस परियोजना को सफलतापूर्वक शुरू करने के लिए आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध कराए गए। उन्हें 8,000–8,000 की संख्या में तिलपिया और पंगास मछलियों की उच्च गुणवत्ता वाली फिंगरलिंग्स (मत्स्य बीज) प्रदान किए गए। साथ ही, प्रारंभिक चरण में मछलियों के पोषण के लिए 1000 किलोग्राम फ्लोटिंग फीड भी दिया गया, जिससे केज में पालन की गई मछलियों का स्वास्थ्य और विकास सुनिश्चित हो सके।

श्री नायक को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने हेतु मत्स्य विभाग, राँची द्वारा उन्हें मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र में विशेष प्रशिक्षणों की श्रृंखला में सम्मिलित किया गया, जिनमें शामिल थे- 3 दिवसीय बीज उत्पादन का प्रशिक्षण, 5 दिवसीय सामान्य मत्स्य पालन प्रशिक्षण, 5 दिवसीय विशेष केज कल्चर प्रशिक्षण

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने न केवल उन्हें व्यावसायिक ज्ञान और कौशल प्रदान किया, बल्कि केज कल्चर को सफलतापूर्वक संचालित करने में आत्मविश्वास भी दिया। श्री कलेश नायक की यह पहल क्षेत्र के अन्य मत्स्य किसानों के लिए एक प्रेरणा बन रही है।

आर्थिक लाभ

कलेश नायक ने मछलियों के संतुलित पोषण, जल की गुणवत्ता और रोग नियंत्रण जैसे विषयों को गंभीरता से अपनाया। इसके परिणामस्वरूप उनकी उत्पादन क्षमता में निरंतर वृद्धि होती गई।

पहले ही वर्ष में उन्हें लगभग ₹3 लाख का शुद्ध लाभ हुआ, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ गया।

आज, नियमित अनुभव और परिपक्व तकनीकी समझ के साथ, कलेश हर वर्ष ₹10 से ₹12 लाख की कुल आय अर्जित कर रहे हैं, जिसमें से उनका शुद्ध मुनाफा ₹5 से ₹6 लाख तक पहुंच गया है। इस निरंतर आय ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि उन्हें और अधिक विस्तार एवं नवाचार की दिशा में प्रेरित किया है।

सामाजिक प्रभाव

कलेश की सामाजिक भागीदारी भी उल्लेखनीय रही है - वे समय-समय पर विभागीय कार्यक्रमों में सहभागी बनते हैं और अपनी सफलता की कहानी साझा कर दूसरों को जागरूक करते हैं। उनकी पहल से गेतलसूद जलाशय क्षेत्र में **स्थानीय रोजगार के अवसर** बढ़े हैं और **प्रवासन में कमी** आई है, क्योंकि अब लोगों को अपने ही गाँव में आजीविका का साधन उपलब्ध हो रहा है।

कलेश की कहानी यह सिखाती है कि बदलाव की शुरुआत किसी एक व्यक्ति से भी हो सकती है।

कलेश आज सिर्फ एक सफल मत्स्य पालक नहीं, बल्कि **समाज में बदलाव लाने वाले एक प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता** बन चुके हैं - जिनकी कहानी देश के हर उस युवा को प्रेरित करती है जो सीमित संसाधनों के बावजूद अपने सपनों को हकीकत में बदलने का हौसला रखता है।

निष्कर्ष

कलेश की यह कहानी यह दर्शाती है कि यदि सही समय पर सही योजना की जानकारी और समर्थन मिले, तो कोई भी व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर सफल हो सकता है। आज वह अपने व्यवसाय को और विस्तारित करने की योजना बना रहे हैं - जिसमें और अधिक केज यूनिट, मत्स्य बीज उत्पादन और मत्स्य विपणन के आधुनिक साधन शामिल हैं।

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना ने न केवल उनके जीवन में बदलाव लाया, बल्कि पूरे समुदाय को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी है।

कलेश का लक्ष्य अब है – "**स्वयं आगे बढ़ना और दूसरों को भी आगे बढ़ाना।**"

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	5-6 लाख
वार्षिक आय	-	10-12 लाख
शुद्ध आय	-	5-6 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	10-12 टन	
रोजगार	2 व्यक्ति	

एक सफर : संघर्ष से सफलता तक

लाभुक की विवरणी	
लाभुक का नाम	प्रकाश लोहरा
मोबाईल	9508221297
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	जलाशयों में केज कल्चर
कुल परियोजना लागत	24.00 लाख
अनुदान राशि	14.40 लाख

परिचय

श्री प्रकाश लोहरा एक साधारण मछुआरे परिवार से ताल्लुक रखने वाले युवा, आज मात्स्यिकी क्षेत्र में अपने कठिन परिश्रम और समर्पण से प्रेरणा का स्रोत बन चुके हैं। उनके पिता, श्री सूरज लोहरा, पेशेवर मछुवारे हैं और गेतलसूद जलाशय के विस्थापितों में से एक हैं। बचपन से ही प्रकाश अपने पिता के साथ जलाशय में मछली पकड़ने का कार्य करते थे, जिससे उन्हें मात्स्यिकी कार्यों की गहरी समझ और रूचि विकसित हुई।

शिक्षा के साथ–साथ प्रकाश मात्स्यिकी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। वर्ष 2022 में जब **महेशपुर मत्स्याजीवी सहयोग समिति** के सचिव श्री कलेश नायक से उन्हें **प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY)** की जानकारी मिली, तो उन्होंने इसे अपने जीवन में एक नए अवसर के रूप में देखा। वित्तीय वर्ष 2022–23 में उन्होंने मत्स्य कार्यालय, राँची से संपर्क कर योजना के तहत 8 केजों का लाभ प्राप्त किया और एक नई शुरुआत की।

जलाशयों में केजों के निर्माण कि पहल

वर्ष 2022–23 में प्रकाश लोहरा ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत अपनी मात्स्यिकी यात्रा को एक नए स्तर पर पहुँचाया। अनुसूचित जाति कोटि के लाभार्थी के रूप में उन्हें 60% अनुदान पर ₹14.40 लाख की अनुदान राशि प्राप्त हुई, जिसकी कुल परियोजना लागत ₹24 लाख थी। इस आर्थिक सहायता के माध्यम से उन्होंने गेतलसूद जलाशय में केज आधारित मत्स्य पालन (Cage Culture) की स्थापना की।

केवल वित्तीय सहायता ही नहीं, विभाग द्वारा प्रोत्साहन स्वरूप उन्हें 40,000 तिलपिया तथा 20,000 पंगास प्रजाति के मत्स्य अंगुलिका (फिंगरलिंग्स) भी उपलब्ध

कराए गए, साथ ही मछलियों के प्रारंभिक पोषण हेतु 100 किलोग्राम फ्लोटिंग फीड भी प्रदान किया गया।

प्रकाश की इस पहल को सफल बनाने हेतु जिला मत्स्य कार्यालय, राँची ने उन्हें तकनीकी रूप से सशक्त बनाने का भी कार्य किया। मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र राँची में उन्हें चरणबद्ध रूप से निम्न प्रशिक्षण प्रदान किए गए :

- 3 दिवसीय बीज उत्पादक प्रशिक्षण
- 5 दिवसीय बुनियादी मत्स्य पालन पर प्रशिक्षण
- 5 दिवसीय विशेष केज कल्चर प्रशिक्षण

इन प्रशिक्षणों से प्रकाश को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रबंधन कौशल, जल गुणवत्ता नियंत्रण, एवं मछलियों के स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारियाँ मिलीं, जिससे उन्होंने व्यवसाय को तकनीकी और व्यावसायिक रूप से और सुदृढ़ किया।

आर्थिक लाभ

शुरुआत में प्रकाश को केज आधारित मत्स्य पालन के तकनीकी पहलुओं को समझने में कठिनाई अवश्य हुई, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। मत्स्य विभाग के मार्गदर्शन और प्रशिक्षणों का उन्होंने पूरा लाभ उठाया। वैज्ञानिक तरीकों को अपनाते हुए उन्होंने केज कल्चर में पंगास, एवं मोनोसेक्स तिलापिया जैसी उन्नत प्रजातियों का पालन शुरू किया। प्रथम वर्ष में उन्हें लगभग ₹2.50 लाख का शुद्ध लाभ हुआ, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ गया।

आज, नियमित अनुभव और परिपक्व तकनीकी समझ के साथ, प्रकाश लोहरा हर वर्ष ₹7-00 से ₹8-00 लाख की कुल आय अर्जित कर रहे हैं, जिसमें से उनका शुद्ध मुनाफा ₹4-00 से ₹5-00 लाख तक पहुंच गया है। इस निरंतर आय ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि उन्हें और अधिक विस्तार एवं नवाचार की दिशा में प्रेरित किया है।

सामाजिक प्रभाव

प्रकाश लोहरा की सफलता उनके समुदाय और सामाजिक परिवेश के लिए एक प्रेरणादायक परिवर्तन

का कारण बनी है। एक विस्थापित मछुआरे परिवार से निकलकर उन्होंने यह साबित कर दिया कि यदि उचित मार्गदर्शन, सरकारी योजनाओं का समर्थन और आत्म–विश्वास हो, तो कोई भी व्यक्ति सामाजिक और आर्थिक बाधाओं को पार कर सकता है।

उनकी उपलब्धि ने विशेष रूप से अनुसूचित जाति समुदाय के युवाओं के लिए एक नई दिशा खोली है। अब गाँव के अन्य युवा भी मात्स्यिकी को केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि सफल कैरियर विकल्प के रूप में देखने लगे हैं। कई युवाओं ने केज कल्चर और मत्स्य पालन से जुड़ी गतिविधियों में रुचि लेना शुरू कर दिया है।

निष्कर्ष

प्रकाश लोहरा की कहानी इस बात का प्रमाण है कि संकल्प, समर्थन और समर्पण से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन की दिशा बदल सकता है। एक विस्थापित और साधारण मछुआरे परिवार से निकलकर उन्होंने

मात्स्यिकी के क्षेत्र में जो मुकाम हासिल किया है, वह न केवल उनकी व्यक्तिगत जीत है, बल्कि पूरे समुदाय के लिए प्रेरणाश्रोत है।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना जैसे सरकारी प्रयासों के प्रभावी क्रियान्वयन और विभागीय सहयोग से न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त की, बल्कि अपने जैसे कई युवाओं के लिए रोजगार का नया मार्ग खोला है।

उनकी सफलता यह संदेश देती है कि यदि योजनाओं की सही जानकारी, तकनीकी प्रशिक्षण और इच्छाशक्ति का समन्वय हो, तो कोई भी व्यक्ति संसाधनों से नहीं, सोच से समृद्ध बन सकता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	3 लाख
वार्षिक आय	-	7.2 लाख
शुद्ध आय	-	4.2 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6 टन	
रोजगार	3 व्यक्ति	

मीरा वोहरा की चाह: PMMSY से स्वरोजगार की राह

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	मीरा वोहरा
मोबाईल	9431011088
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	महिला
योग्यता	स्नात्तक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	बायोफ्लॉक पॉण्ड
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

श्रीमती मीरा वोहरा, पति श्री विमल वोहरा कृषि क्षेत्र की एक उद्यमी महिला है। ओरमांझी प्रखण्ड के पालु पंचायत के तिरला गाँव में उनका लगभग 5 एकड़ क्षेत्रफल का एक फार्म है जिसमें वो समेकित कृषि कार्य करती है। इसके अंतर्गत कृषि, डेयरी, पशुपालन एवं मत्स्य पालन आदि का कार्य करती है।

जिला मत्स्य कार्यालय रॉची के प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से श्रीमती वोहरा को प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के बारे में विस्तृत जानकारी मिली। ततपश्चात् वे बायोफ्लॉक पॉण्ड में मछली पालन योजना के प्रति आकर्षित हुई और इसकी तमाम तकनीकी एवं व्यवहारिक बारीकियों को विस्तार से समझा। 25 डी० के छोटे से जलक्षेत्र में आधुनिक बायोपलॉक तकनीक से सघन मछली पालन करते हुए 12 टन के मछली उत्पादन के क्षमता प्राप्त करने की संभावना ने उन्हे अत्यधिक उत्साहित किया जिससे प्ररित होकर उन्होने इस योजना हेतु आवेदन किया और अंततः चयनित हुई। जिला मत्स्य कार्यालय रॉची के सहयोग से उन्होने शीघ्र ही बायोफ्लॉक पॉण्डा का निर्माण कर लिया एवं उसमें मछली पालन का कार्य करने लगीं।

आर्थिक लाभ

योजना के प्रथम वर्ष मे ही उन्होने लगभग 5 टन मछली का उत्पादन किया। जिसमें उन्हें लगभग 2.5 लाख रू० का शुद्ध मुनाफा प्राप्त हुआ। प्रथम वर्ष का परिणाम उनके लिए उत्साहवर्धक रहा अभी उनका कहना है कि दुसरे वर्ष में वो नियोजित तरीके से मछली पालन कार्य करेंगी जिससे कम-से-कम 10-12 टन मछली के उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके और 10 लाख रू० का वार्षिक आय प्राप्त किया जा सके।

समाजिक प्रभाव

श्रीमती वोहरा की कृषि क्षेत्र में उद्यमिता उस पूरे क्षेत्र के किसानों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में स्थापित हुआ है। उस क्षेत्र के किसान इनसे प्रभावित है और मछली पालन के क्षेत्र में अपनी संभावनाएँ तलाश रहे है। श्रीमती वोहरा का कहना है कि हम यदि अपने कृषि संसाधनों का आधुनिक तकनीक अपनाते हुए उचित उपयोग करें तो स्वरोजगार के अवसर प्राप्त किये जा सकते है।

निष्कर्ष

मात्स्यिकी उद्यमता में श्रीमती वोहरा की सफलता प्रेरणादायी है। यह न केवल मात्स्यिकी के क्षेत्र में स्वरोजगार के माध्यम से जिविकोपार्जन को नया आयाम देता है बल्कि नारी शक्ति को भी प्रतिष्ठित करता है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना ऐसे ही सफलता के कहानियों से भरा पड़ा है जो आम जनजीवन में सतही स्तर पर एवं उद्यमिता के क्षेत्र में मात्स्यिकी की संभावनाओं के नये द्वार खोल रहा है और लोग इस क्षेत्र की ओर आकर्षित हो रहे है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	भारतीय मुख्य कार्प, तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	4.5 लाख
वार्षिक आय	-	7.20 लाख
शुद्ध आय	-	2.7 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	5 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

सफलता की कहानी सं.-59

विस्थापन से अवसर तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	रवींद्र नायक
मोबाईल	6204592778
जिला	राँची
राज्य	झारखंड
कोटि	SC
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	जलाशयों में केज कल्चर
कुल परियोजना लागत	12.00 लाख
अनुदान राशि	7.20 लाख

राँची जिले के गेतलसूद जलाशय से विस्थापित **श्री रवींद्र नायक** का जन्म एक साधारण मछुआरे परिवार में होने के कारण, बचपन से ही जलाशय में मछलियाँ पकड़ना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। इसी अनुभव ने मछली पालन के प्रति उनकी गहरी समझ और लगाव को जन्म दिया।

वर्ष **2022** में उन्हें **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** की जानकारी मिली। वे पहले से ही **महेशपुर मत्स्यजीवी सहयोग समिति** से जुड़े हुए थे और विस्थापित श्रेणी में आते थे, जिससे योजना में शामिल होना आसान हुआ। वित्तीय वर्ष **2022-23** में उन्हें **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) अंतर्गत 4 केज इकाइयों का लाभ मिल जिसकी कुल परियोजना लागत** 12 लाख रुपए थी। अनुसूचित जाति के लाभुक होने के कारण उन्हें 7.20 लाख रुपए की अनुदान राशि का लाभ मिला जो कुल परियोजना लागत का 60% था।

इस योजना के तहत उन्होंने **गेतलसूद जलाशय में केज आधारित मछली पालन (केज कल्चर)** की शुरुआत की। योजना के साथ उन्हें केवल आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि **तकनीकी सहयोग और प्रशिक्षण** भी मिला। बीज उत्पादन, सामान्य मत्स्य पालन और विशेष केज कल्चर प्रशिक्षणों ने उन्हें पानी की गुणवत्ता, मछली के स्वास्थ्य, और व्यवसाय प्रबंधन की वैज्ञानिक जानकारी दी।

शुरुआत में केज कल्चर की तकनीकी बारीकियों को समझना उनके लिए चुनौतीपूर्ण था। लेकिन **रवींद्र ने कभी हार नहीं मानी**। वे प्रशिक्षणों में भाग लेते रहे, विभाग से मार्गदर्शन लेते रहे और वैज्ञानिक तरीकों को अपनाते हुए मछली पालन करते रहे। **पहले ही वर्ष में उन्होंने** 2 लाख का शुद्ध लाभ अर्जित किया जो उनकी मनोबल को बढ़ाने में कारगर साबित हुआ। आज अपने कठिन परिश्रम तथा दृढ़ निश्चय के द्वारा वे सालाना 7–8 लाख रुपए की

वार्षिक आय अर्जित कर रहे है जिसमें उनका **शुद्ध मुनाफा** 4–5 लाख रुपए प्रतिवर्ष है। यह आर्थिक सफलता उनके आत्मविश्वास और परिवार की स्थिरता दोनों में बड़ा बदलाव लेकर आई।

आज श्री रवींद्र नायक केवल एक सफल मछली किसान नहीं, बल्कि **अपने समुदाय के लिए प्रेरणा स्रोत** बन चुके हैं। अनुसूचित जाति वर्ग के युवा अब मत्स्य पालन को एक **करियर विकल्प** के रूप में देखने लगे हैं। गाँव के अन्य लोग भी **केज कल्चर** और आधुनिक मत्स्य तकनीकों में रुचि दिखा रहे हैं। उनकी सफलता ने यह दिखाया है कि सरकार की योजना, तकनीकी सहयोग और व्यक्ति की मेहनत - मिलकर किसी की भी तकदीर बदल सकते हैं।

श्री रवींद्र नायक की कहानी हमें यह सिखाती है कि यदि अवसर मिले और उसे अपनाने का साहस हो, तो कोई भी व्यक्ति अपनी परिस्थिति बदल सकता है। एक विस्थापित मछुवारे परिवार से निकलकर उन्होंने जो उपलब्धि हासिल की है, वह न केवल उनकी खुद की जीत है, बल्कि पूरा समाज आज उनसे प्रेरणा ले रहा है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना जैसे कार्यक्रम, जब समर्पण और सही मार्गदर्शन के साथ जुड़ते हैं, तो वे सिर्फ लाभ नहीं, **जीवन में बदलाव** लाते हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत		3 लाख
वार्षिक आय	-	7.80 लाख
शुद्ध आय	-	4.50 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6-7 टन	
रोजगार	2 व्यक्ति	

केज कल्चर संस्कृति में एक कदम आगे

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	रूपाली कैबर्त
मोबाईल	9661169530
जिला	सरायकेला-खरसांवा
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Non-Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	Cages in Reservoirs
कुल परियोजना लागत	36.00 लाख
अनुदान राशि	21.60 लाख

परिचय :

श्रीमती रूपाली कैवर्त, एक गरीब परिवार की साधारण महिला, अपनी आजीविका का समर्थन करने के लिए अपने पति श्री अर्जुन कैवर्त के साथ चांडिल बांध (सरायकेला, झारखंड) के पास मछली बेचती थी। उसकी पारिवारिक स्थिति बहुत दयनीय थी और वह बड़ी कठिनाई से अपनी दिनचर्या का निर्वाह कर पाती थी। 8वीं कक्षा पास करने के बाद अच्छी नौकरी पाना उतना ही मुश्किल था, जितना बिना कमाई के घर चलाना। पारिवारिक स्थिति को सुधारने और अपने पति का समर्थन करने के लिए, रूपाली ने मछली बेचना शुरू किया, लेकिन फिर भी वह अपने परिवार का भरण पोषण करने के लिए पर्याप्त कमाई नहीं कर पाती थी।

इसी बीच रूपाली के पति को "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)" के बारे में पता चला और चांडिल बांध में जमीन डूबने के कारण उन्हें पीएमएमएसवाई के तहत जलाशयों में केज (पिंजरे) लगाने की योजना मिलने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

चांडिल जलाशय में केज की स्थापना की पहल :

श्रीमती रूपाली कैवर्त और उनके पति पेशेवर मछुआरे थे और चांडिल डैम के पास बहुत छोटे पैमाने पर मछली पकड़ने और बेचने की गतिविधियों में लगे हुए थे। वे वर्ष 2021 में जिला मत्स्य कार्यालय, सरायकेला से परिचित हुए और मत्स्य विभाग के सहयोग से उन्हें "विस्थापित मत्स्यजीवी स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड, बंदाबीर" में शामिल करके पीएमएमएसवाई के तहत जलाशयों में केज की स्थापना का लाभ मिला।

वित्तीय वर्ष 2022-23 में श्रीमती रूपाली कैवर्त को जलाशयों में केज की स्थापना की योजना के तहत महिला वर्ग में 60% अनुदान पर 7x5x5 मी. आकार के 12 केजों का लाभ मिला। कुल परियोजना लागत 36.00 लाख रु था, जिसमें से रूपाली को 21.60 लाख रु की अनुदान राशि का लाभ मिला। झारखंड के सरायकेला जिले के चांडिल डैम में

"प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना" के तहत मत्स्य विभाग, झारखंड की ओर से चांडिल डैम के कुकड़ू ब्लॉक के पास केज लगाया गया। विभाग की ओर से श्रीमती रूपाली को 20,000 पंगेसियस और 20,000 मोनोसेक्स तिलापिया फिंगरलिंग की सहायता भी प्रदान की गई। इसके अलावा काम शुरू करने के लिए ग्रोवेल कंपनी का 100 किलोग्राम प्री-स्टार्टर, 80 किलोग्राम ग्रोअर, फॉर्मूलेटेड मछली फ़ीड का लाभ भी दिया गया।

आर्थिक लाभ:

श्रीमती रूपाली कैवर्त को न केवल विभाग से योजना का लाभ मिला, बल्कि उन्हें तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव देने के लिए विभाग द्वारा "मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, रांची" भेजकर निशुल्क "पांच दिवसीय विशेष केज कल्चर" प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

इस सहयोग ने श्रीमती रूपाली को इतना सक्षम बना दिया है कि उनके द्वारा प्रति वर्ष लगभग 18.8 टन पंगेशियस और तिलापिया मछलियों का उत्पादन कर 8.10 लाख रु. की वार्षिक आय प्राप्त कर सकेगी। पिछले कुछ वर्षों में, श्रीमती रूपाली ने लगभग 8.00 लाख रु. वार्षिक आय की उपलब्धि हासिल की है, जो पारिवारिक अर्थव्यवस्था को बढ़ाने और आजीविका के मानकों को ऊपर उठाने में योगदान दे रहा है। इस पहल के माध्यम से, श्रीमती रूपाली ने महिला सशक्तिकरण की अद्भुत मिसाल कायम की है।

सामाजिक प्रभाव:

श्रीमती रूपाली कैबर्त की सफलता ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया, बल्कि उनके प्रयासों से पूरे समुदाय और विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण को एक नई दिशा दी है।

महिला सशक्तिकरण: श्रीमती रूपाली ने पारंपरिक रूप से पुरुषों द्वारा प्रभुत्व वाले मछली पालन क्षेत्र में अपने काम के माध्यम से महिला उद्यमिता की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। उनके प्रयासों ने अन्य ग्रामीण महिलाओं को यह संदेश दिया है कि वे भी कृषि और मछली पालन जैसे क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकती हैं, जिससे समाज में महिला सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक बदलाव आ रहा है।

आर्थिक उत्थान: श्रीमती रूपाली के मछली पालन व्यवसाय ने न केवल उनके परिवार की आय में वृद्धि की है, बल्कि उनके प्रयासों ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी सशक्त किया है। उनकी वार्षिक आय में वृद्धि के साथ-साथ, स्थानीय समुदाय में रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हुए हैं, जिससे क्षेत्र के आर्थिक विकास में योगदान हो रहा है।

प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग : श्रीमती रूपाली ने मत्स्य विभाग से प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपने व्यवसाय के संचालन में बेहतर तकनीकी ज्ञान का उपयोग किया, जिससे अन्य स्थानीय मछुआरों को भी तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। इसने समुदाय के बीच सहयोग और साझा विकास की भावना को बढ़ावा दिया है।

परिवार और जीवनस्तर में सुधार: श्रीमती रूपाली के प्रयासों से न केवल उनका व्यक्तिगत जीवन स्तर सुधरा, बल्कि उन्होंने अपने परिवार को स्थिरता और सुरक्षा प्रदान की है। इस सफलता ने अन्य ग्रामीण परिवारों को भी प्रेरित किया है कि वे भी अपने हालात सुधारने के लिए योजना और सही मार्गदर्शन के साथ अपने व्यवसाय को विस्तार दे सकते हैं।

समाज में बदलाव की शुरुआत: श्रीमती रूपाली का उदाहरण समाज में बदलाव की प्रेरणा बन चुका है, विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए जो आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक मान्यता की तलाश में हैं। उनकी यात्रा ने यह सिद्ध किया है कि सही योजनाओं और समर्थन से, कोई भी महिला अपनी कठिनाइयों को पार करके सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

इस प्रकार, श्रीमती रूपाली की कहानी ने न केवल उनके परिवार बल्कि समग्र समाज में परिवर्तन की लहर पैदा की है, जो ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हो सकती है।

निष्कर्ष:

श्रीमती रूपाली कैबर्त की प्रेरणादायक यात्रा यह सिद्ध करती है कि जब सही योजनाओं और समर्थन के साथ अवसर मिलते हैं, तो महिलाएं किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं। "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना" के तहत जलाशयों में केज कल्चर की स्थापना से न केवल रूपाली ने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार किया, बल्कि पूरे समुदाय के

लिए भी एक सकारात्मक बदलाव की शुरुआत की। रूपाली का उदाहरण यह दर्शाता है कि कैसे किसी व्यक्ति का दृढ़ निश्चय, योजनाओं का सही उपयोग और आवश्यक प्रशिक्षण के माध्यम से समाज में बदलाव लाया जा सकता है। उनकी सफलता न केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान भी है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नति और महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करता है।

इस प्रकार, श्रीमती रूपाली कैवर्त का जीवन यह प्रमाणित करता है कि यदि मेहनत, समर्पण और सही मार्गदर्शन हो, तो कोई भी महिला अपनी कठिनाइयों को पार कर सकती है और एक नई दिशा में अपने जीवन को बदल सकती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास एवं मोनोसेक्स तिलापिया कवई
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	14.40 लाख
वार्षिक आय	-	20.68 लाख
शुद्ध आय	-	8.10 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	18.8 टन	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

संघर्ष से सफलता तक – एक मछुआरे की प्रेरणादायक उड़ान

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	गोपाल सिंह मुंडा
मोबाईल	6207852132
जिला	सरायकेला
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022–23
अवयव	जलाशयों में केज कल्चर
कुल परियोजना लागत	24.00 लाख
अनुदान राशि	14.4 लाख

गोपाल सिंह मुंडा, झारखंड के सरायकेला-खरसावां जिले के चौका गाँव से हैं। वे एक पारंपरिक मछुआरे हैं, जिन्होंने चांडिल डैम क्षेत्र में विस्थापित होने के बाद जलाशयों में मछली पकड़कर जीवनयापन किया। लेकिन पारंपरिक मछली पकड़ने से होने वाली आमदनी से वे अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रहे थे।

आर्थिक अस्थिरता और भविष्य की चिंता ने उन्हें एक टिकाऊ और लाभदायक विकल्प की तलाश में प्रेरित किया। क्षेत्र में कुछ लोगों को **पिंजरा मत्स्य पालन (केज कल्चर)** में मिलती सफलता देख उन्होंने इस नई तकनीक को अपनाने का निश्चय किया एवं चांडिल स्वावलंबी मत्स्यजीवी सहयोग समिति से जुड़कर कार्य प्रारंभ किया।

वर्ष **2022-23** में उन्होंने **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के तहत पिंजरा पालन इकाई स्थापित करने की योजना बनाई।

- **कुल परियोजना लागत :** ₹24 लाख
- **अनुदान राशि :** ₹14.40 लाख (60%)
- **स्व निवेश :** ₹9.60 लाख

अपनी यात्रा में गोपाल सिंह को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इनमें मछली के स्वास्थ्य का प्रबंधन, पर्याप्त पूंजी हासिल करना, रोग का प्रकोप, गुणवत्ता वाले मछली बीज की अनुपलब्धता, चारा भंडारण और परिवहन से संबंधित मुद्दे शामिल थे।

निरंतर प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और व्यावहारिक प्रदर्शनों के माध्यम से, गोपाल सिंह ने अपने पिंजरा पालन को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना सीखा। उन्होंने बेहतर जल विनिमय के लिए नियमित पिंजरा स्थानांतरण, सर्दियों के मौसम में चूना डालना, नियमित रूप से जाल की सफाई, उचित बीज प्रबंधन, कुशल चारा प्रबंधन जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू किया।

गोपाल सिंह को उनके कड़ी मेहनत और समर्पण का फल मिला। 2023-24 में, उनकी पिंजरा पालन इकाई ने 13.5 टन मछली का उत्पादन किया, जिससे ₹14.30 लाख का कारोबार हुआ। ₹9.60 लाख के व्यय के बाद, उन्होंने ₹4.70 लाख का शुद्ध लाभ अर्जित किया। उनकी सफलता ने न केवल उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार किया है, बल्कि 2-4 लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा किए हैं।

गोपाल सिंह का लक्ष्य अब 2026-27 तक कम से कम 5 पिंजरा बैटरी स्थापित करके अपने कार्यों का विस्तार करना है। उन्होंने प्रति वर्ष दो फसल चक्र प्राप्त करने की भी योजना बनाई है। इसके अतिरिक्त, वह अपनी आय को और बढ़ाने के लिए पाली जाने वाली मछली प्रजातियों में विविधता लाने का इरादा रखते हैं। वह सरकार से निरंतर समर्थन की आवश्यकता पर भी जोर देते हैं, विशेष रूप से बीज और चारा सब्सिडी, समय पर बीज आपूर्ति और जिंदा मछली बिक्री केंद्र की स्थापना के क्षेत्रों में।

गोपाल सिंह मुंडा की सफलता की कहानी, सरकारी समर्थन, तकनीकी ज्ञान और उद्यमशीलता की भावना के साथ पिंजरा पालन की परिवर्तनकारी क्षमता को प्रदर्शित करती है। उनकी उपलब्धियां अन्य मछुआरों के लिए प्रेरणा का काम करती हैं और आर्थिक विकास और आजीविका सुधार के लिए स्थायी जलकृषि पद्धतियों के महत्व पर प्रकाश डालती हैं।

वे न सिर्फ खुद के लिए बल्कि अपने समुदाय के लिए भी बदलाव की मिसाल बन चुके हैं — एक सच्चे **"मत्स्य उद्यमी"** और **"आत्मनिर्भर भारत"** के निर्माण में सहभागी।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	9.6 लाख
वार्षिक आय	-	14 लाख
शुद्ध आय	-	4-5 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	13-14 टन	
रोजगार	2 व्यक्ति	

बायोफ्लॉक तकनीक द्वारा आधुनिक मत्स्य पालन की पहल

लाभुक की विवरणी	
लाभुक का नाम	लीली हाँसदा
मोबाईल	8294074433
जिला	साहेबगंज
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	M.A.
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Establishment of Bio - floc (50 tanks)
कुल परियोजना लागत	50.00 लाख
अनुदान राशि	30.00 लाख

परिचय

सुश्री लीली हाँसदा, पिता श्री सनातन हाँसदा, साहेबगंज जिले के बरहेट प्रखंड के पहाड़पुर ग्राम की एक साधारण परिवार की घरेलु महिला हैं। उनका जीवन काफी साधारण था, शिक्षित होते हुए भी वे घर के कामकाजी जीवन में व्यस्त रहती थीं। लेकिन एक दिन जब उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय, साहेबगंज से संपर्क किया, तो उनका जीवन एक नई दिशा की ओर मुड़ गया। वहां उन्हें मत्स्य पालन एवं सरकार के द्वारा चलाई जा रही कई योजनाओं के बारे में जानकारी मिली। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी0एम0एम0एस0वाई0) के तहत चल रहे 47 योजनाओं के बारे मे जानकार वे बहुत प्रभावित हुईं।

सुश्री हाँसदा ने महसूस किया कि बायोफ्लॉक तकनीक द्वारा आधुनिक मत्स्य पालन उनकी जैसी शिक्षित महिला के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है, जो न केवल उनकी जीविका को सुरक्षित कर सकता है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर भी बना सकता है। इसके बाद, उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत महिला कोटि से 60% अनुदान पर 50 टैंक वाले बड़े बायोफ्लॉक की योजना का लाभ लेकर कार्य की शुरुआत की।

यह बायोफ्लॉक योजना उन्होंने बरहेट प्रखंड के लक्ष्मी महुआटांड़ ग्राम में स्थापित की, जिससे न केवल उनका जीवन बेहतर हुआ, बल्कि उनके जैसे अन्य लोगों के लिए भी यह एक प्रेरणा का स्रोत बन गया। आज श्रीमती लीली हाँसदा एक सफल उद्यमी के रूप में मछली पालन के क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुकी हैं, और उनकी सफलता दूसरों को भी इसी दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है।

बड़े बायोफ्लॉक (50 टैंक) की स्थापना की पहल

वित्तीय वर्ष 2020–21 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत 50 टैंक वाले बायोफ्लॉक अधिष्ठापन कार्य हेतु लाभुक सुश्री लिली हाँसदा को स्वीकृति मिली। उनके द्वारा 50 टैंक बायोफ्लॉक का निर्माण किया गया, जिसकी कुल लागत 50.00 लाख रुपए जिसमें लाभुक का अंशदान 20.00 लाख रुपए तथा सरकार का अनुदान 30.00 लाख रुपए इनको प्राप्त हुआ। 50 टैंक वाले बायोफ्लॉक निर्माण कार्य पूर्ण करने के उपरांत सभी टैंकों में मत्स्य पालन प्रारंभ कर दिया। जिसमें प्रथम वर्ष उन्होंने 57,000 मत्स्य बीज (तिलापिया, पंगास, सिंघी एवं देसी मांगुर) का संचयन किया एवं 12 क्विंटल फॉर्मूलेटेड मत्स्य फीड (स्टार्टर एवं ग्रोअर) का उपयोग किया गया।

आर्थिक लाभ

सुश्री लिली हाँसदा ने प्रथम वर्ष बायोफ्लॉक तकनीक से मछली पालन कर कुल 10 टन तैयार मछली को 130 रुपए प्रति किलो की दर से बिक्री कर कुल 13 लाख रुपए की कमाई की, जिसमें शुद्ध मुनाफा 8 लाख रुपए प्राप्त हुआ। दो चक्र में प्राप्त अनुभव के आधार पर, और भी बेहतर ढंग से मत्स्य पालन कर अधिक मुनाफा प्राप्त करने की योजना है। साथ ही लाभुक के द्वारा बायोफ्लॉक तकनीक से मत्स्य पालन में पांच व्यक्तियों को दैनिक मजदूर के तौर पर प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराया गया है एवं इस तकनीक से उत्पादित मछली के बिक्री में 6 व्यक्तियों को अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराया गया है।

सामाजिक प्रभाव

सुश्री लीली हाँसदा की सफलता ने न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को बदलने में मदद की, बल्कि पूरे समुदाय में एक सकारात्मक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाया। उनका प्रयास बायोफ्लॉक तकनीक का सही उपयोग करके न केवल अपनी आजीविका को सशक्त बनाने में सफल रहा, बल्कि इसके माध्यम से रोजगार के अवसर भी उत्पन्न हुए। उनके द्वारा किए गए कार्य ने ना केवल उनके परिवार की आर्थिक उन्नति और रोजगार का सृजन किया बल्कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार का सृजन भी किया।

इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने समुदाय में प्रेरणा का स्रोत बनकर शानदार परिवर्तन की शुरुआत की। सुश्री लीली द्वारा सेवा शक्ति संस्था, बरहेट नामक एक NGO का निर्माण कर ग्रामीण विकास कार्य किया जा रहा है।

निष्कर्ष

श्रीमती लीली हाँसदा की यह कहानी न केवल आत्मनिर्भरता की मिसाल प्रस्तुत करती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि सही दिशा और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग करने से कैसे एक सामान्य महिला भी अपने जीवन को बदल सकती है और दूसरों के लिए भी एक प्रेरणा बन सकती है। उनकी सकारात्मक पहल और सफलता ने साहेबगंज जिले में बायोफ्लॉक तकनीक के माध्यम से मछली पालन को एक नई पहचान दी है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया, सिंघी, देसी मांगुर
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	02
परिचालन लागत	-	8.00 लाख
वार्षिक आय	-	13.00 लाख
शुद्ध आय	-	5.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	10 टन	
रोजगार	5–6 व्यक्ति	

सफलता की कहानी सं.-63

हैचरी से आत्मनिर्भरता तक

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	गीता राय
मोबाईल	7908844872
जिला	साहेबगंज
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Non-matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	कार्प हैचरी
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

श्रीमती गीता राय, साहेबगंज जिले की ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाली एक साधारण महिला, आज मत्स्य पालन के क्षेत्र में एक प्रभावशाली नाम बन चुकी हैं। परंपरागत खेती और सीमित संसाधनों के बीच जीवन यापन करने वाली गीता जी के पास न तो अधिक पूंजी थी, न ही तकनीकी ज्ञान - लेकिन था तो बस एक दृढ़ संकल्प और कुछ कर दिखाने की तीव्र इच्छा।

वर्ष 2022 में जब उन्हें **जिला मत्स्य कार्यालय, साहेबगंज** से **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना** की जानकारी मिली, तो उन्होंने इस अवसर को अपनी जिंदगी बदलने वाले मौके के रूप में देखा। महिला कोटि के अंतर्गत **60% अनुदान (₹15.00 लाख)** प्राप्त कर उन्होंने **₹25.00 लाख लागत की कार्प हैचरी परियोजना** की शुरुआत की।

वित्तीय वर्ष **2022-23** में हैचरी निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ और निर्माण पूर्ण होते ही उन्होंने **मत्स्य बीज उत्पादन** की शुरुआत की। इस हैचरी में वे **कतला, रोहू एवं मृगल** जैसी प्रजातियों के **15–20 करोड़ स्पॉन** प्रतिवर्ष तैयार कर रही हैं, जिससे स्थानीय स्तर पर बीज की मांग को पूरा किया जा रहा है।

इस उद्यम से श्रीमती राय को प्रतिवर्ष **₹4–5 लाख की शुद्ध आय** हो रही है। साथ ही, उन्होंने **5 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार** भी प्रदान किया है, जो उनके साथ इस हैचरी परियोजना में कार्यरत हैं।

उनके उत्पादन से साहिबगंज जिले के अन्य मत्स्य पालकों को स्थानीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण बीज सुलभ हो रहा है। गीता देवी ने कई ग्रामीणों को मत्स्य पालन अपनाने के लिए प्रेरित किया और तकनीकी मार्गदर्शन भी दिया। रोजगार सृजन और आय के नए स्रोत बनने से ग्राम स्तर पर आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। गीता देवी आज अपने क्षेत्र की महिलाओं के लिए **प्रेरणा स्रोत** हैं - एक ऐसी महिला जिन्होंने साबित कर दिया कि ग्रामीण पृष्ठभूमि से भी नेतृत्व की भूमिका निभाई जा सकती है।

श्रीमती गीता राय की सफलता की यह कहानी न केवल उनकी मेहनत और आत्मविश्वास का प्रमाण है, बल्कि यह इस बात का भी उदाहरण है कि **सरकारी योजनाओं का सही उपयोग कर** कोई भी व्यक्ति अपने जीवन की दिशा बदल सकता है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि महिलाएं केवल घर की जिम्मेदारी ही नहीं संभाल सकतीं, बल्कि वे आर्थिक और सामाजिक नेतृत्व भी कर सकती हैं।

उनकी कहानी **"आत्मनिर्भर भारत"** की नींव में महिला शक्ति के योगदान को उजागर करती है - यह एक व्यक्तिगत उपलब्धि ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक **प्रेरणादायक संदेश** है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	मेजर भारतीय कार्प
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	
परिचालन लागत	-	4-5 लाख
वार्षिक आय	-	8-9 लाख
शुद्ध आय	-	4-5 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	15-20 करोड़ स्पॉन	
रोज़गार	5 व्यक्ति	

बायोफ्लॉक तालाब : पारंपारिकता से आधुनिकता की ओर एक कदम

लाभुक की विवरणी	
लाभुक का नाम	बिरजिनीया कीड़ो
मोबाईल	8210110212
जिला	सिमडेगा
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	स्नातक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	बायोफ्लॉक तलाब
कुल परियोजना लागत	14.00 लाख
अनुदान राशि	8.40 लाख

परिचय

श्रीमती बिरजिनीया कीड़ो, पति श्री जूलियस कीड़ो, ग्राम–गरजा भंडार टोली, प्रखंड – सिमडेगा की निवासी अपने शुरुआती जीवन मे गाँव के विद्यालय में अध्यापिका के पद पर कार्य कर, अपने परिवार के साथ एक संतुष्ट जीवन व्यतीत करते हुए आश्वस्त थी, गाँव मे उनका अपना तालाब होने के कारण पारंपरिक रूप से मत्स्य पालन का कार्य हो रहा था लेकिन ये उत्पादन इतना कम था की इसे व्यावसायिक दृष्टिकोण से देख पाना असंभव था।

इसी बीच श्रीमती बिरजिनीया के बेटे श्री अतुल कीड़ो जिला मत्स्य कार्यालय, सिमडेगा के अनुशंसा से अपने गाँव के पारंपरिक तालाब में उत्पादन बढ़ाने की सोच लिए **"मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र"** में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण के लिए पहुंचे। अतुल ने प्रशिक्षण के दौरान मात्स्यिकी के क्षेत्र मे आए आधुनिकताओं का अन्वेषण किया, इस प्रशिक्षण ने मानो अतुल के मात्स्यिकी से संबंधित दृष्टिकोण को पलट कर रख दिया। अब उनका रुझान पारंपरिक विधि से हट कर आधुनिक विधि द्वारा गहन मत्स्य पालन की ओर बढ़ा। प्रशिक्षण से लौटने के उपरांत उन्होंने सारी जानकारी अपनी माता से साझा की। श्रीमती कीड़ो की पहले से ही मत्स्य पालन मे रूचि के कारण उन्होंने रांची आकर प्रशिक्षण लेने का मन बना लिया। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) के अंतर्गत चल रही 47 योजनाओं के बारे में पता चला। उन्होंने सभी योजनाओं का गहन चिंतन किया एवं अपने सुविधा के हिसाब से बायोफलॉक तालाब का चयन कर, केंद्र एवं राज्य सरकार का सहयोग प्राप्त कर उन्होंने मात्स्यिकी के क्षेत्र मे अपना कदम जमाने का निश्चय किया। उनकी उत्सुकता एवं कर्तव्यनिष्ठा देखते हुए उन्हे मत्स्य विभाग से योजना मिलने मे कोई कठिनाई नहीं हुई।

बायोफलॉक तालाब के स्थापना की पहल

श्रीमती बिरजिनीया कीड़ो की रूचि एवं आत्मविश्वास को देखते हुए जिला मत्स्य कार्यालय, सिमडेगा के द्वारा वित्तीय वर्ष 2020–21 में उनका चयन प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) अंतर्गत बायोफलॉक तालाब निर्माण हेतु अनुसूचित जनजातीय श्रेणी में 60% अनुदान पर किया गया। बायोफलॉक तालाब निर्माण का कुल परियोजना लागत 14.00 लाख रु था, जिसमें से श्रीमती बिरजिनीया को 8.40 लाख रु. की अनुदान राशि (केंद्राश– 5.04 लाख रु एवं राज्यांश–3.36 लाख रु) का सहयोग मिला।

इसके साथ साथ तकनीकी समर्थन के लिए श्रीमती बिरजिनीया को "मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, राँची" से बायोफलॉक तकनीक से मत्स्य पालन का विशेष प्रशिक्षण तथा प्रायोगिक प्रशिक्षण भी प्राप्त हुआ, जिसके कारण उनके ज्ञान और कार्य कुशलता मे वृद्धि हुई। इस तरह उन्होंने वर्ष 2021 में पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ कार्य प्रारंभ किया।

आर्थिक लाभ

मत्स्य विभाग से मिले सहयोग ने श्रीमती बिरजिनीया कीड़ो को इतना सक्षम बना दिया है की उनके द्वारा प्रति वर्ष लगभग 6 से 7 टन पंगेशियस और तिलापिया मछलियों का उत्पादन कर 5.00 से 6.00 लाख रु. की वार्षिक आय प्राप्त कर रही है। पिछले कुछ वर्षों में, श्रीमती बिरजिनीया ने औसत 5.00 लाख रु. वार्षिक आय की उपलब्धि हासिल की है। जो पारिवारिक अर्थव्यवस्था को बढ़ाने और आजीविका के मानकों को ऊपर उठाने में योगदान दे रहा है। इस पहल के माध्यम से, श्रीमती बिरजिनीया ने महिला सशक्तिकरण की अद्भुत मिसाल कायम की है।

सामाजिक प्रभाव

श्रीमती बिरजिनीया, एक जनजातीय समुदाय की साधारण महिला है जिनकी सफलता उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों से कहीं आगे तक फैली हुई है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना का लाभ उठाकर, उन्होंने न केवल अपने परिवार की वित्तीय स्थिरता में सुधार किया है, बल्कि अपने समुदाय के समग्र आर्थिक विकास में भी योगदान दिया है।

पारंपारिक तालाब मत्स्य पालन मे आधुनिकता लाते हुए बायोफलॉक तकनीक से मत्स्य पालन ने न केवल उनके लिए स्थायी आजीविका का सृजन किया है, बल्कि दूसरों के लिए रोजगार के अवसर भी प्रदान किए हैं। मत्स्य विभाग के साथ अपने सहयोग के माध्यम से, उन्होंने आधुनिक मछली पालन तकनीकों के बारे में स्थानीय जागरूकता बढ़ाई है, एवं अपने जनजातीय महिलाओं को जागरूक करने का भी कार्य किया है।

इसके अलावा, उनकी कहानी पारंपरिक रूप से पुरुष–प्रधान क्षेत्रों में महिला उद्यमशीलता भूमिकाओं का एक प्रेरक मॉडल है। उनकी यात्रा ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य महिलाओं को समान अवसर तलाशने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक सुधार का प्रभाव पैदा होता है।

निष्कर्ष

श्रीमती बिरजिनीया कीड़ो के आत्मविश्वास से लेकर एक सफल मत्स्य पालक बनने तक की यात्रा सरकारी योजनाओं और कड़ी मेहनत की शक्ति का प्रमाण है। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के सहयोग और जिला मत्स्य कार्यालय, सिमडेगा के मार्गदर्शन से, उन्होंने अपने जीवन और परिवार की वित्तीय स्थिति को बदल दिया है। आधुनिक गहन मत्स्य पालन तकनीकों को अपनाकर, तकनीकी ज्ञान प्राप्त करके और उन्हें प्रदान किए गए अवसरों का लाभ उठाकर, उन्होनें न केवल अपनी आजीविका में सुधार किया है, बल्कि महिला सशक्तिकरण और उद्यमिता का एक प्रेरक उदाहरण भी स्थापित किया है। उनकी कहानी आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन की अपार संभावनाओं पर प्रकाश डालती है जब महिलाओं को सही संसाधन और सहायता प्रदान की जाती है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास एवं मोनोसेक्स तिलापिया
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	3.00 लाख
वार्षिक आय	-	9.00 लाख
शुद्ध आय	-	6.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	10 टन	
रोजगार	3 व्यक्ति	

बायोफ्लॉक तकनीक : तालाब के बिना मछली पालन

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सुशीला सोरेंग
मोबाईल	9304991973
जिला	सिमडेगा
राज्य	झारखंड
कोटि	Women
योग्यता	Non-Matric
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2022-23
अवयव	बायोफ्लॉक 25 टैंक
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

परिचय:

श्रीमती सुशीला सोरेंग, पति – श्री ख्रीस्टोफर सोरेंग, प्रखण्ड – ठेठईटाँगर, जिला – सिमडेगा, एक छोटे से गांव की एक मध्यम वर्गीय महिला है । विभाग से जुड़ने के पूर्व उनका परिवार अत्यंत गरीब था, और उनके पास एक छोटी सी ज़मीन थी, जो किसी तरह से ही परिवार का पेट भरती थी। हर दिन सुशीला अपने पति के साथ खेतों में काम करती, और उम्मीद करती कि कभी उनके जीवन में कुछ बदलाव आएगा। लेकिन सालों की मेहनत के बावजूद वे गरीबी के दलदल से बाहर नहीं निकल पा रहीं थी।

झारखंड में कुपोषण वर्षों से एक स्थानिक समस्या रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के आंकड़ों ने लगातार बच्चों में बौनापन, दुर्बलता और कम वजन की चिंताजनक दरों को उजागर किया है। यह समस्या विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में गंभीर है, जहां गरीबी, विविध आहारों तक सीमित पहुंच, खाद्य असुरक्षा और जागरूकता की कमी व्यापक प्रोटीन-ऊर्जा कुपोषण में योगदान करती है। यह कमी न केवल बच्चों के शारीरिक विकास और संज्ञानात्मक विकास को बाधित करती है, बल्कि प्रतिरक्षा प्रणाली को भी कमजोर करती है, जिससे समुदाय बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। स्थायी, स्थानीय रूप से अनुकूल समाधान खोजना सर्वोपरि है।

श्रीमती सुशीला ने कुछ लोगों को मछली पालन के बारे में बात करते सुना, जिसमें सरकार की तरफ से मत्स्य किसानों के लिए "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)" नामक एक पंच- वर्षीय योजना शुरू की गई थी। यह बात सुशीला के मन में घर कर गई। उन्होंने फैसला किया कि वह इस मौके का लाभ उठाएंगी। मछली पालन के बारे में ज्यादा जानकारी जुटाने के लिए उन्होंने जिला मत्स्य कार्यालय, सिमडेगा से संपर्क किया और उनके मार्गदर्शन के तहत रांची जाकर मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार से मत्स्य पालन का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए PMMSY के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

शुरुआत में उन्हें मछली पालन के बारे में बहुत कुछ सीखना पड़ा, जैसे पानी का प्रबंधन, मछलियों का प्राकृतिक एवं कृत्रिम

भोजन, और उनके रख-रखाव की तकनीकें। लेकिन सुशीला ने हार नहीं मानी। उन्होंने बड़े लगन ओर उत्सुकता के साथ सारे तकनीकों को सिखा। ज़मीन कम होने के कारण सुशीला ने बड़ी होशियारी से काम लिया, और कम जलक्षेत्र मे अधिक उत्पादन लेने के दृष्टिकोण से PMMSY से 25 टैंक बायोफ्लॉक योजना का लाभ लेकर कार्य करने का संकल्प किया।

25 टैंक बायोफ्लॉक के निर्माण कि पहल:

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 में श्रीमती सुशीला सोरेंग को महिला कोटि के अंतर्गत 25 टैंक वाले बायोफ्लॉक निर्माण हेतु विभाग की ओर से 60% अनुदान यथा- 15.00 लाख रुपए की राशि का सहयोग मिला जिसकी कुल परियोजना लागत 25.00 लाख रुपए थी। उनके द्वारा 25 टैंक बायोफ्लॉक का निर्माण किया गया जिसमें लाभुक का अंशदान 10.00 लाख रुपए था।

मत्स्य विभाग, झारखंड से मिले वित्तीय सहयोग एवं जिला मत्स्य कार्यालय, सिमडेगा के मार्गदर्शन द्वारा श्रीमती सुशीला ने वर्ष 2022-23 से लगातार आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए बायोफ्लॉक टैंको का निर्माण किया एवं प्रथम वर्ष विभाग द्वारा प्राप्त 25,000 मत्स्य बीज (तिलापिया,पंगास, सिंघी एवं देसी मांगुर) का संचयन कर कार्य प्रारंभ किया। उसी वर्ष विभाग की ओर से श्रीमती सुशीला को फॉर्मूलेटेड मत्स्य फ़ीड (स्टार्टर एवं ग्रोअर) एवं तकनीकी समर्थन हेतु "बायोफ्लॉक में मत्स्य पालन प्रशिक्षण" का लाभ भी प्राप्त हुआ ।

आर्थिक लाभ:

श्रीमती सुशीला सोरेंग ने मत्स्य विभाग से मिले वित्तीय और तकनीकी समर्थन का लाभ उठाते हुए वर्ष 2024 तक लगभग 2-3 टन मछली का वार्षिक उत्पादन किया, जिससे उन्हें 4 से 5 लाख रुपए की आय प्राप्त हुई । दो फसलों से प्राप्त अनुभव के आधार पर, वह आगे भी अपने उत्पादन और वार्षिक आय को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। इसके अलावा, श्रीमती सुशीला ने बायोफ्लॉक तकनीक के माध्यम से दो व्यक्तियों को दैनिक मजदूरी पर रोजगार प्रदान किया है। साथ ही, ग्रामीण महिलाओं के समूह को विभाग द्वारा 50 टैंक वाले बड़े बायोफ्लॉक योजना का लाभ दिलाकर, बड़े पैमाने पर मछली का उत्पादन करने एवं महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने का प्रयास भी जारी है।

सामाजिक प्रभाव:

श्रीमती सुशीला सोरेंग, एक सामान्य गृहिणी जिन्होनें "प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)" के तहत आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए 25 बायोफ्लॉक टैंक स्थापित कर न केवल अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया बल्कि उन्होंने अपने समुदाय में अन्य महिलाओं को भी प्रेरित किया। वह ग्रामीण महिलाओं के एक समूह को भी मछली पालन के क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर देने के लिए प्रेरित कर रही हैं, और उन्हें 50 टैंक बायोफ्लॉक योजना का लाभ दिलाने का प्रयास कर रही हैं। उनके प्रयासों ने न केवल उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त किया, बल्कि उनके समुदाय की अन्य महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनाने की दिशा मे कार्य किया जा रहा है।

निष्कर्ष:

श्रीमती सुशीला सोरेंग का संघर्ष और सफलता इस बात का उदाहरण है कि बायोफ्लॉक तकनीक जैसे आधुनिक तकनीकों के माध्यम से महिलाएं न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकती हैं, बल्कि पूरे समुदाय में सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। उनके प्रयास से ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक नई राह दिखाई देती है।

डॉ० एच एन द्विवेदी, निदेशक मत्स्य के द्वारा बताया गया कि बिना तालाब के नई तकनीक से झारखंड के मत्स्य कृषकों द्वारा मत्स्य पालन किया जा रहा है जिससे किसानों को अच्छी कमाई हो रही है श्रीमती सुशीला सोरेंग के द्वारा किए गए कार्य अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का श्रोत है। झारखंड के

किसानों से, युवा बेरोजगारों से मैं अनुरोध करना चाहता हूँ की झारखंड में मत्स्य कृषि की असीम संभावनाएं है जिसका उपयोग करें तथा मछली उत्पादन की वृद्धि करने में अपना सहयोग दें। इस हेतु मत्स्य निदेशालय, झारखंड के द्वारा राज्य स्तर पर मात्स्यिकी के विभिन्न क्षेत्रों में मत्स्य पालन के आधुनिक विधियों से संबंधित प्रशिक्षण मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार, राँची में दिया जाता है। साथ ही मत्स्य कृषकों के संबंधित जिला मत्स्य कार्यालयों मे सीधा संपर्क कर प्रशिक्षण का लाभ लिया जा सकता है तथा मत्स्य पालन से जुड़कर रोजगार के नए अवसर को अपनाया जा सकता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, मोनोसेक्स तिलापिया, सिंघी, देसी मांगुर
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	3.00 लाख
वार्षिक आय	-	6.00 लाख
शुद्ध आय	-	3.00 लाख
परियोजना आउटपुट:		
वार्षिक उत्पादन	4-5 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

बीज से बदलाव तक: सुदर्शन बिरूआ की सफल की कहानी

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	सुदर्शन बिरूआ
मोबाईल	9955375509
जिला	पश्चिम सिंहभूम
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Freshwater Finfish Hatcheries
कुल परियोजना लागत	25.00 लाख
अनुदान राशि	15.00 लाख

परिचय

श्री सुदर्शन बिरूआ एक अनुसूचित जनजाति (ST) वर्ग से आने वाले पारंपरिक किसान थे, जिनकी आय का मुख्य स्रोत कृषि और सीमित स्तर पर मछली पालन था। हालांकि वे मेहनती थे, परंतु आर्थिक रूप से कमजोर थे। कोविड महामारी के दौरान उनकी आर्थिक स्थिति और भी कठिन हो गई। लेकिन आज वे एक सफल मछली बीज उत्पादक और मत्स्य व्यवसायी हैं, जिनकी वार्षिक आय लाखों तक पहुँच चुकी है। उनकी यह परिवर्तनकारी यात्रा न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे समुदाय के लिए एक प्रेरणा बन चुकी है।

योजना की शुरुआत

नए और स्थिर व्यवसाय की तलाश में जब सुदर्शन बिरूआ ने जिला मत्स्य कार्यालय, पश्चिम सिंहभूम से संपर्क किया, तो उन्होंने नहीं सोचा था कि यह कदम उनके जीवन की दिशा ही बदल देगा। जिला मत्स्य पदाधिकारी की मार्गदर्शन में उन्हें सबसे पहले राँची स्थित मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र भेजा गया, प्रशिक्षण के दौरान सुदर्शन ने मत्स्य पालन क्षेत्र में छिपी हुई संभावनाओं को समझा और इस क्षेत्र में गहराई से काम करने की इच्छा उनके मन में जागी। इसी उत्साह के साथ उन्होंने पुनः राँची जाकर 3 दिवसीय बीज उत्पादन का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण उपरांत, उन्होंने अपने निजी तालाबों और लीज पर लिए गए तालाबों में मछली पालन की शुरुआत की, जो उनके लिए एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ।

मछली पालन में मिली प्रारंभिक सफलता ने उनकी रुचि को और प्रगाढ़ किया। वे अब ना केवल बड़ी मछली और बीज उत्पादन में निपुण हो चुके थे, बल्कि उन्होंने स्पॉन उत्पादन की दिशा में भी कदम बढ़ाया। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने हापा ब्रूडिंग तकनीक के माध्यम से कॉमन कार्प स्पॉन का उत्पादन प्रारंभ किया और इससे अच्छा लाभ कमाया। इस प्रारंभिक सफलता से प्रेरित होकर

उन्होंने वर्ष 2021-22 में **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के अंतर्गत अपनी खुद की **कार्प हैचरी** की स्थापना की। अनुसूचित जनजाति से होने के कारण उन्हें परियोजना लागत पर 60% तक अनुदान का लाभ प्राप्त हुआ। कुल 25 लाख रुपये की लागत वाली इस परियोजना के लिए उन्हें 15 लाख रुपये अनुदान के रूप में प्राप्त हुए।

इस प्रकार एक छोटे से कदम और प्रशिक्षण से शुरू हुआ सफर अब एक स्थिर और लाभकारी व्यवसाय का रूप ले चुका है, जो न केवल सुदर्शन बिरूआ की आजीविका का सशक्त आधार बना है, बल्कि अन्य ग्रामीण युवाओं के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन गया है।

आर्थिक लाभ

आज श्री सुदर्शन बिरूआ अपनी खुद की हैचरी के माध्यम से हर साल लगभग **30 मिलियन** तैयार करते हैं, जिन्हें वे स्थानीय किसानों को बेचते हैं। इसके साथ-साथ **वे झींगा (Prawn), ग्रास कार्प, ब्लैक कार्प और देशी मांगुर** जैसी मूल्यवान प्रजातियों का भी पालन करते हैं। वे उच्च गुणवत्ता वाले बीज और मछलियों को न केवल स्थानीय बाज़ार में, बल्कि ओडिशा बॉर्डर तक बेचते हैं। उनकी कुल वार्षिक आय 12 लाख है, जिसमें 8 लाख का शुद्ध लाभ शामिल है।

सामाजिक प्रभाव

श्री सुदर्शन बिरूआ अब सिर्फ एक किसान नहीं, बल्कि एक **मॉडल मत्स्य उद्यमी** हैं। वे न केवल अपने लिए आजीविका के नए अवसर बना पाए हैं, बल्कि अपने क्षेत्र के अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन चुके हैं। उनकी पहल ने यह दिखाया है कि सही तकनीकी ज्ञान और सरकारी योजना का लाभ लेकर कोई भी व्यक्ति आर्थिक रूप से सशक्त बन सकता है। उन्होंने नर्सरी और रियरिंग तालाब का निर्माण कर अपने व्यवसाय को और विस्तृत किया है।

निष्कर्ष

श्री सुदर्शन बिरूआ की मेहनत, तकनीकी समझ और योजनाबद्ध कार्यप्रणाली ने उन्हें एक आदर्श मत्स्य पालक बना दिया है। वे आज "आत्मनिर्भर भारत" की भावना को ज़मीन पर साकार कर रहे हैं और इसके लिए वे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रति आभार भी व्यक्त करते हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास, अमूर कार्प, ग्रास कार्प
परिचालन लागत	-	4 लाख
वार्षिक आय	-	12 लाख
शुद्ध आय	-	8 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	30 मिलीयन लाख	
रोज़गार	5 व्यक्ति	

कम ज़मीन, बड़ा सपना: बायोफ्लॉक तकनीक से मिली नई पहचान

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	प्रधान मुंडा
मोबाईल	9934371918
जिला	पश्चिम सिंहभूम
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Graduation
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Biofloc 7 tank
कुल परियोजना लागत	7.5 लाख
अनुदान राशि	4.5 लाख

परिचय

झारखंड के पश्चिम सिंहभूम ज़िले के छोटे से गाँव दौबेरा से ताल्लुक रखने वाले श्री **प्रधान मुंडा** कभी पारंपरिक कृषि जैसे धान और दाल की खेती में लगे रहते थे। वे एक साधारण किसान थे, जिनकी आय सीमित थी और जीवन में आर्थिक चुनौतियाँ लगातार सामने आती थीं। परंतु आज वही प्रधान मुंडा एक सफल **बायोफ्लॉक मछली पालक** हैं, जिनकी वार्षिक आय लाखों में है। यह परिवर्तन केवल उनकी जीविका का नहीं, बल्कि उनके सोचने के तरीके, आत्मविश्वास और सामाजिक पहचान का भी है। उनकी यह यात्रा आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम है।

योजना की शुरुआत

कोरोना काल ने जहाँ एक ओर देशभर में अनिश्चितता और अवसाद फैलाया, वहीं कुछ लोगों के लिए यह अवसरों की दस्तक भी बनकर आया। उसी समय प्रधान मुंडा को **बायोफ्लॉक मछली पालन** नामक एक आधुनिक तकनीक की जानकारी मिली। उन्होंने मत्स्य विभाग से संपर्क किया और वहाँ से उन्हें इस तकनीक का विधिवत प्रशिक्षण मिला। सीमित भूमि होने के बावजूद, बायोफ्लॉक की विशेषता "**कम** स्थान में अधिक उत्पादन" ने उन्हें आशावादी बनाया। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत 4.5 लाख की सब्सिडी प्राप्त कर उन्होंने वर्ष 2021-22 में 7 टैंकों वाला बायोफ्लॉक सिस्टम स्थापित किया। यही वह मोड़ था जहाँ से उनकी नई यात्रा आरंभ हुई।

आर्थिक लाभ

इस योजना के क्रियान्वयन के पश्चात श्री प्रधान मुंडा की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। वे अब वर्ष में एक बार देशी मागुर, मोनोसेक्स तिलापिया, पंगास और कोई जैसी मछलियों की फसल लेते हैं। कुल उत्पादन 4000 किलोग्राम तक पहुँच गया है और उनकी वार्षिक आय 3-4 लाख तक हो

चुकी है। सभी परिचालन लागतों को घटाकर उन्हें हर वर्ष लगभग 0.90 लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त होता है। यह न केवल आर्थिक स्थिरता प्रदान करता है, बल्कि भविष्य के लिए नई संभावनाओं के द्वार भी खोलता है।

सामाजिक प्रभाव

श्री प्रधान मुंडा की यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत नहीं है, यह सामूहिक उत्थान की मिसाल बन चुकी है। वे अब अपने क्षेत्र के युवाओं और जरूरतमंदों के लिए रोज़गार का स्रोत बन गए हैं। पहले जहाँ उन्हें मछली पालन की कोई जानकारी नहीं थी, आज वे जल की गुणवत्ता, पोषक आहार, बीज चयन, pH, DO, अमोनिया, और एफसीआर जैसे तकनीकी पहलुओं के विशेषज्ञ बन चुके हैं। उनका ज्ञान, अनुभव और समर्पण समाज में एक नई सोच को जन्म दे रहा है—**कि सफलता साधनों की मोहताज नहीं, संकल्प की परिणाम है।**

निष्कर्ष

श्री प्रधान मुंडा की कहानी यह सिद्ध करती है कि यदि योजनाएँ जमीनी स्तर तक पहुँचें और सही मार्गदर्शन मिले, तो भारत के ग्रामीण क्षेत्र भी आत्मनिर्भरता की मिसाल बन सकते हैं। उनका साहस, दृढ़ निश्चय और सतत प्रयास उन्हें एक साधारण किसान से एक सफल उद्यमी में रूपांतरित कर चुका है। आज वे न केवल स्वयं सशक्त हैं, बल्कि समाज के लिए उम्मीद की किरण बनकर उभरे हैं। वे आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में एक सशक्त और प्रेरणादायक चेहरा हैं।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	कोई, तिलपिया, पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	1
परिचालन लागत	-	2.46 लाख
वार्षिक आय	-	3.36 लाख
शुद्ध आय	-	0.90 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	4 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

PMMSY की शक्ति से, शिशिर की सफलता

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	शिशिर सिंकु
मोबाईल	9934511566
जिला	पश्चिम सिंहभूम
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	Intermediate
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2020-21
अवयव	Small RAS
कुल परियोजना लागत	7.50 लाख
अनुदान राशि	4.50 लाख

परिचय:

झारखंड राज्य के पश्चिमी सिंहभूम जिले के जगन्नाथपुर प्रखंड स्थित कंसलापोश गांव के निवासी **श्री शिशिर सिंकु**, एक मेहनती और दूरदर्शी व्यक्ति हैं। अनुसूचित जनजाति (ST) समुदाय से आने वाले शिशिर जी ने इंटरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की है। पहले वह पारंपरिक खेती, व्यापार और सामान्य मत्स्यपालन में लगे हुए थे, लेकिन आय सीमित होने के कारण उन्हें पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं हो पा रहा था।

शिशिर जी ने **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के अंतर्गत **छोटे RAS सिस्टम (रीसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम)** की स्थापना कर मत्स्यपालन में क्रांति ला दी। आज वे अपने जिले के पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने इस अत्याधुनिक प्रणाली को अपनाकर मत्स्यपालन के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छू लिया है।

परियोजना की शुरुआत:

वित्तीय वर्ष 2020-21 में **श्री शिशिर सिंकु** को जिला मत्स्य कार्यालय, पश्चिमी सिंहभूम की ओर से प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत RAS सिस्टम (1 टैंक - 100 क्यूबिक मीटर) के लिए **4,50,000 रुपए की सब्सिडी** प्रदान की गई। परियोजना की कुल लागत 7,50,000 रुपए थी, जिसमें शेष राशि शिशिर जी ने स्वयं वहन की। इसके साथ ही उन्हे तकनीकी सक्षम बनाने के लिए उन्हे मत्स्य विभाग की ओर से 5 दिवसीय RAS का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त हुआ, जिससे उन्हें जल गुणवत्ता प्रबंधन, अमोनिया, डीओ (घुलनशील ऑक्सीजन), पीएच आदि जैसे महत्वपूर्ण मानकों को नियंत्रित करने, मत्स्य आहार प्रबंधन तथा RAS प्रणाली का तकनीकी ज्ञान मिला। उन्होंने RAS प्रणाली के माध्यम से **Monosex Tilapia और झींगा (Prawn)** जैसी उन्नत प्रजातियों का पालन प्रारंभ किया।

आर्थिक लाभ:

RAS प्रणाली के तहत शिशिर को प्रति वर्ष **1 फसल चक्र** का लाभ मिल रहा है। एक वर्ष में वे लगभग **8000 किलोग्राम मछली का उत्पादन** करते हैं। इस उत्पादन से उनकी वार्षिक **आय 9,00,000 रुपए तक पहुँच गई है**, जिसमें से **3,00,000 रुपए का शुद्ध लाभ** होता है, जबकि **क्रियाशील लागत लगभग 6,00,000 रुपए** रहती है।

उनकी मछलियाँ अब स्थानीय बाजार के साथ-साथ जिला स्तर के थोक विक्रेताओं और जमशेदपुर जैसे बड़े बाजारों में भी बेची जाती हैं, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य प्राप्त हो रहा है।

सामाजिक प्रभाव:

श्री शिशिर सिंकु न केवल स्वयं लाभान्वित हुए, बल्कि उन्होंने इस योजना को अपने क्षेत्र में प्रचारित भी किया। उन्होंने **स्थानीय बेरोजगार युवाओं को अपने साथ जोड़कर उन्हें प्रशिक्षण और रोजगार** प्रदान किया है। उनके प्रयासों से RAS प्रणाली अब क्षेत्र में एक नई पहचान बना चुकी है।

इसके अतिरिक्त, शिशिर ने RAS से हुए लाभ से एक **गैरेज की दुकान भी खोली**, जिससे उनका व्यवसाय और आय के स्रोत और अधिक विस्तृत हुए। अब उनका परिवार एक सम्मानजनक और बेहतर जीवन जी रहा है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन की अन्य सुविधाएं सुलभ हैं।

निष्कर्ष:

श्री शिशिर सिंकु की यह सफलता दर्शाती है कि यदि सरकारी योजनाओं का सही लाभ लिया जाए और आधुनिक तकनीक को अपनाया जाए, तो ग्रामीण और सीमित संसाधनों वाले लोग भी आत्मनिर्भर बन सकते हैं। उनकी यह कहानी **"आत्मनिर्भर भारत"**, **युवा सशक्तिकरण** और **आधुनिक मत्स्यपालन** की एक प्रेरणादायक मिसाल है। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि मेहनत, प्रशिक्षण और दूरदर्शिता के साथ कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को बदल सकता है और दूसरों को भी लाभ पहुँचा सकता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	तिलपिया , पंगास, झींगा
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	2
परिचालन लागत	-	6 लाख
वार्षिक आय	-	9 लाख
शुद्ध आय	-	3 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	8 टन	
रोज़गार	2 व्यक्ति	

मछली पालन में नवाचार: पश्चिमी सिंहभूम की महिला बनी मिसाल

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	चन्द्रावति सिजुइ
मोबाईल	6205590603
जिला	पश्चिमी सिंहभूम, चाईबासा
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	इंटरमीडिएट
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2021-22
अवयव	केज कल्चर
कुल परियोजना लागत	12 लाख
अनुदान राशि	7.2 लाख

परिचय-

चन्द्रावति सिजुइ, पति-युद्धिष्ठिर भुमिज, प्रखण्ड सोनुवा, जिला- पश्चिमी सिंहभूम के एक छोटे से गॉव बांसकाटा के एक साधरण परिवार से है। मत्स्य विभाग से जुड़ने से पूर्व इनका परिवार गरीब था। इनके पति मजदूरी करके एवं पनसुआ जलाशय में मछली शिकारमाही कर परिवार का भरण पोषण करते थे। फिर एक दिन जलाशय समिति के सदस्यों द्वारा इन्हें एवं इनके पति को जानकारी मिली कि जलाशय में केज कल्चर तकनीक से मछली पालन हेतु मत्स्य विभाग द्वारा आर्थिक एवं तकनीकी मदद की जाती है। इसके बाद इन्होने जिला मत्स्य कार्यालय पश्चिमी सिंहभूम, चाईबासा में सम्पर्क किया एवं इन्हे प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना अन्तर्गत केज कल्चर योजनाओं का लाभ मिला। मत्स्य विभाग द्वारा इन्हे केज कल्चर निर्माण हेतु विभाग की ओर से कुल 720000 रूपये का अनुदान राशि मिला एवं तकनीकी सहायता भी प्राप्त हुआ। चन्द्रावति सिजुइ एवं इनके पति युद्धिष्ठिर भुमिज ने मत्स्य विभाग से मिले वित्तीय अनुदान एवं तकनीकी सहायता का लाभ उठाते हुए प्रतिवर्ष केज कल्चर में आधुनिक तरीके से फारमुलेटेड फ्लोटिंग फिश फीड इस्तेमाल कर एवं सही मात्रा में केज में स्वस्थ्य मत्स्य बीज का संचयन एवं संवर्धन कर मछली पालन से प्रतिवर्ष 6 टन पंगास एवं तिलापिया (MST) का उत्पादन करते है एवं 4 से 5 लाख रूपया आय प्राप्त करते है। इनके द्वारा उत्पादित मछलीयों की बिक्री स्थानीय हाट बाजारों में हो जाती है।

समाजिक आर्थिक लाभ-

चन्द्रावति सिजुइ साधरण ग्रामीण परिवार की महिला है। जिन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना अन्तर्गत केज कल्चर तकनीक से मछली पालन कर ना केवल आर्थिक स्थिति मे सुधार किया है बल्कि इन्होंने जलाशय समिति के अन्य महिलाओ एवं युवाओ को भी आधुनिक तकनीक से मछली पालन हेतु प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप बहुत सारी महिलाएं एवं युवा मछली पालन की नई तकनीक से मछली पालन हेतु विभाग से जुड़ रही है।

निष्कर्ष-

इस तरह से चन्द्रावति सिजुइ एवं इनके पति युद्धिष्ठिर भुमिज का सघर्ष एवं सफलता इस बात का उदाहरण है कि केज कल्चर तकनीक जैसे अधुनिक तरीके से मछली पालन कर ग्रामीण महिलाये एवं युवा ना सिर्फ अपने आर्थिक स्थिति सुधार सकते है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण दिशा में सशक्त बन एवं आत्म निर्भर बन सकते है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	3.00 लाख
वार्षिक आय	-	4-5 लाख
शुद्ध आय	-	2.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	6 टन	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

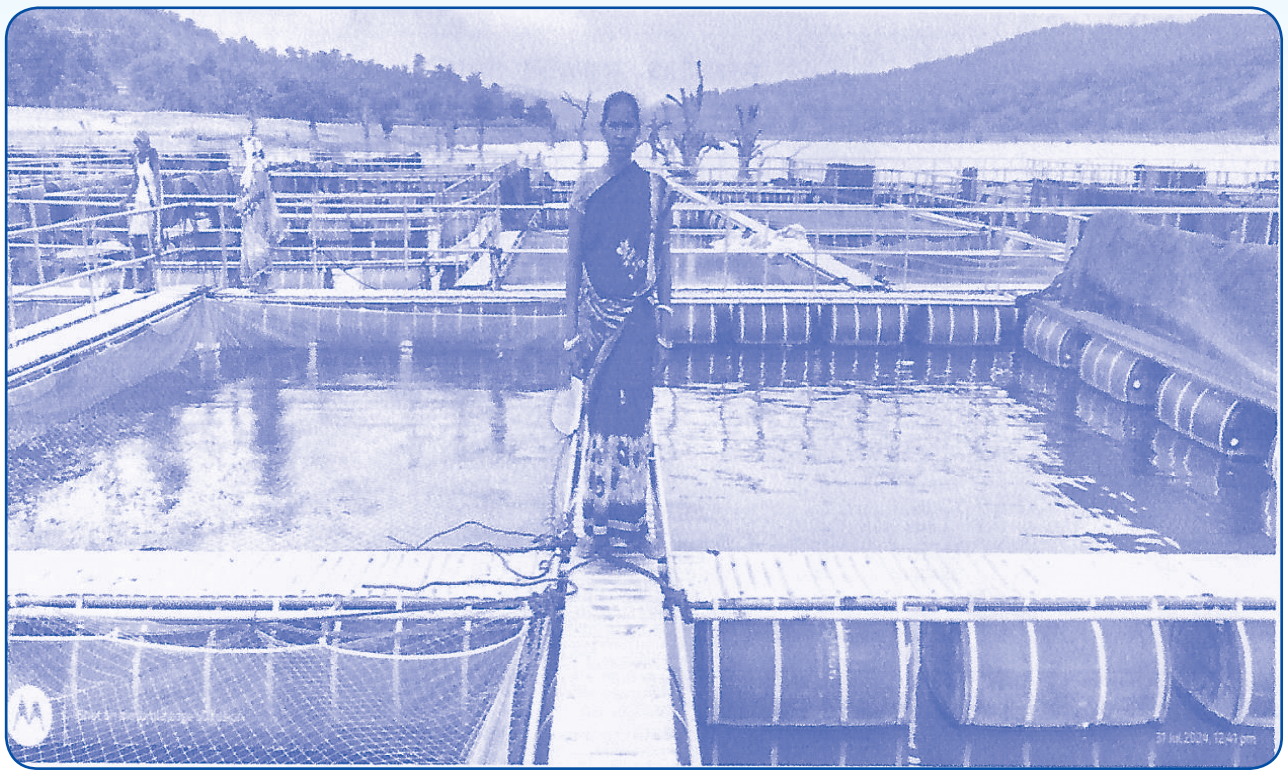

मत्स्य पालन में उद्यमिता का उदय : PMMSY लाभुक श्री संजय

लाभुक की विवरणी :	
लाभुक का नाम	संजय गागराई
मोबाईल	8292290597
जिला	पश्चिमी सिंहभूम, चाईबासा
राज्य	झारखंड
कोटि	ST
योग्यता	मैट्रिक
लाभुक को प्राप्त योजना की विवरणी :	
योजना	PMMSY
कार्यान्वयन वर्ष	2023-24
अवयव	7 टैंक बायोफ्लॉक
कुल परियोजना लागत	7.5 लाख
अनुदान राशि	4.5 लाख

परिचय-

संजय गागराई, पिता-यदुनारायण गागराई, प्रखण्ड हाटगम्हरिया, जिला- पश्चिमी सिंहभूम के एक छोटे से गाँव कुसमुण्डा का एक साधरण परिवार से है। मत्स्य विभाग से जुड़ने से पूर्व इनका परिवार गरीब था। एवं मजदूरी करके एवं थोड़ी बहुत खेती एवं बागवानी करके बड़ी मुश्किल से परिवार का भरण पोषण करते थे एवं घर चलाने के लिए कर्ज भी लेना पड़ता था। जिससे इनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। फिर एक दिन कुछ लोगो से मालुम हुआ की सरकार द्वारा मछली पालन करने के लिए ग्रामीणों को तकनीकी प्रशिक्षण एवं आथिक सहायता प्रादान की जाती है। इसके बाद इन्होने जिला मत्स्य कार्यालय पश्चिमी सिंहभूम, चाईबासा में सम्पर्क किया एवं इन्हे प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना अन्तर्गत 7 टैंक बायोफ्लॉक योजनाओं का लाभ मिला। मत्स्य विभाग द्वारा इन्हे बायोफ्लॉक तालाब निर्माण हेतु विभाग की ओर से अनुदान राशि (स्टेट टॉक अप सहित कुल 637500 रूपये का अनुदान राशि मिला) एवं तकनीकी प्रशिक्षण भी प्राप्त हुआ। श्री संजय गागराई के द्वारा मत्स्य विभाग से मिले वित्तीय अनुदान एवं तकनीकी प्रशिक्षण का लाभ उठाते हुए प्रतिवर्ष बायोफ्लॉक टैंक में आधुनिक तरीके से मछली पालन कर प्रतिवर्ष 5000 से 6000 kg. पंगास एवं तिलापिया (MST) का उत्पादन करते है एवं 2 से 3 लाख रूपया आय प्राप्त करते है। बायोफ्लॉक टैंक में वाटर क्वालिटी मैनेजमेंट एवं फीड मैनेजमेंट कर एक ओर जहाँ लागत खर्च में कमी करते है वहीं मुनाफा भी ज्यादा होता है। इनके द्वारा उत्पादित मछलीयों की बिक्री स्थानीय हाट बाजारो में हो जाती है।

समाजिक आर्थिक लाभ-

श्री संजय गागराई सधारण ग्रामीण परिवार का व्यक्ति है। जिन्होने प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना अन्तर्गत बायोफ्लॉक तकनीक से मछली पालन कर ना केवल अपने आर्थिक स्थिति में सुधार किया है बल्कि अपने समुदाय के अन्य ग्रामीण युवाओं को भी उनत तकनीक से मछली पालन हेतु प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप बहुत सारे युवा मछली पालन की नई तकनीक से मछली पालन हेतु विभाग से जुड़ रहा है।

निष्कर्ष-

इस तरह से श्री संजय गागराई का सघर्ष एवं सफलता इस बात का उदाहरण है कि बायोफ्लॉक तकनीक जैसे अधुनिक तरीके से मछली पालन कर ग्रामीण युवा ना सिर्फ अपने आर्थिक स्थिति सुधार सकते है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

परियोजना विवरण	योजना का लाभ मिलने से पहले	योजना का लाभ मिलने के बाद
प्रजाति के प्रकार	-	पंगास
प्रति वर्ष फसल की संख्या	-	01
परिचालन लागत	-	1.00 लाख
वार्षिक आय	-	2-3 लाख
शुद्ध आय	-	1.00 लाख
परियोजना आउटपुट		
वार्षिक उत्पादन	5-6 टन	
रोज़गार	4 व्यक्ति	

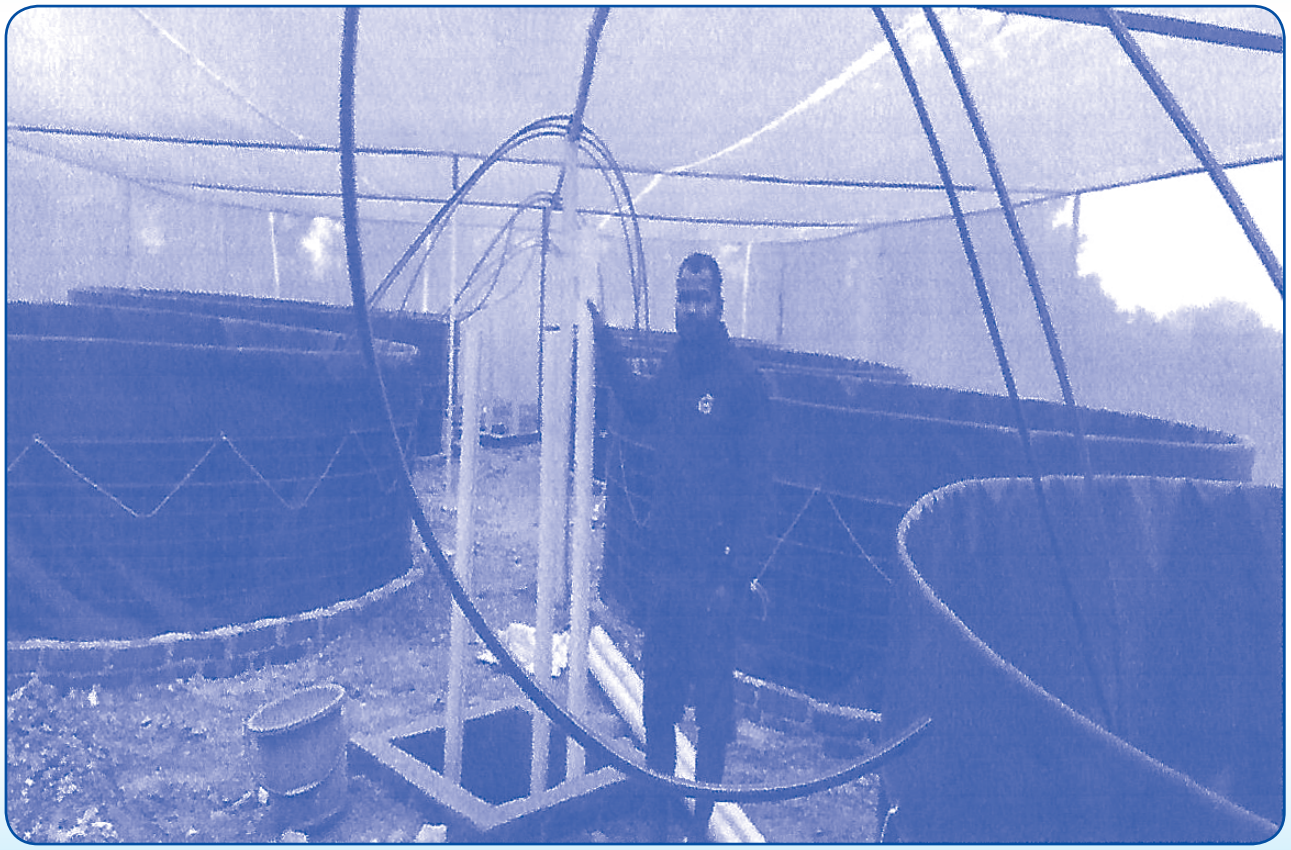

झलकियाँ

JOHAR JHARKHAND

Jharkhand's remarkable success in fish production has paved way for its foray into pearl farming. TOI explores the initiatives implemented by state in promoting this new endeavour

PROCEDURE

WHAT IS PEARL FARMING?

FROM FISH TO PEARLS: STATE'S AQUACULTURE BOOM

'Boosting fish yield can fast-track rural eco, curb malnutrition'

FISH PRODUCTION OVER THE YEARS (IN MT*)

AQUACULTURE RESOURCES IN STATE

1,30,248

Blue Revolution: How Jharkhand transformed its fishing industry

JHARKHAND

तातानगर. 50 किसानों को मिला मछली व मोती पालन का प्रशिक्षण, एचएन द्विवेदी ने कहा

जिले में मोती व मछली पालन की असीम संभावनाएं, आत्मनिर्भर बनें किसान

गुमला | रांची, सोमवार 19.05.2025 | 05

विश्व बैंक की टीम ने गुमला स्थित बसिया के नारेकला गांव में मछली पालन की ली जानकारी

मछली पालन में मॉडल जिला बना गुमला

मछली पालन को लेकर केंद्र सरकार की योजना अच्छे से चल रही है : शिल्पी बक्स

झारखंड में एक्वा पार्क बनायेगी राज्य सरकार : शिल्पी नेहा तिर्की

हैदराबाद के एक फिश फॉर्म का भ्रमण करतीं मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की.

रांची. राज्य सरकार झारखंड में एक्वा पार्क बनायेगी ... के अधिकारियों के साथ बैठक की.

Agriculture Minister visits fisheries farmer training center

...व बैंक फिशरीज टीम के अधिकारियों ने चट्टी में फीस फार्मिंग का लिया जायजा

झारखंड में भी बनाया जाएगा एक्वा पार्क: मंत्री

www.jagran.com

मत्स्य पालन में आर्थिक मजबूती की अपार संभावनाएं : जूलियन

मत्स्य पालन का वर्ल्ड बैंक व एएफडी टीम ने किया निरीक्षण

झलकियाँ

Ranchi Mumbai Delhi Bengaluru Hyderabad

World Bank, fisheries dept inspect cage cultu

Vishvendu Jaipuriar / TNN / Updated: May 19, 2025, 08:35 IST

A World Bank-led team, including representatives from the French Development Agency cage culture activities at Telaiya reservoir in Hazaribag. They interacted with local fish f for seed and feed production.

HAZARIBAG:

demand for seed and feed production unit.

The team, led by Julian Million, senior fisheries industry Orphie Sillard and Nidhi Batra from AFD, IA Siddiqui fro National Fisheries Development Board (NFDB).

The objective of the visit was to evaluate the progress c (PMMKSY) and assess the economic condition of fish fa the Pradhan Mantri Matsya Sampada Yojana (PMMSY) a sch...

झारखंड राज्य मछलीपालन में अच्छा काम कर रहा : कृषि सचिव

मदुरई में फिशरीज मसर मीट का आयोजन

दैनिक भास्कर रांची 18-05-2025

वर्ल्ड बैंक की टीम ने राज्य के मत्स्य कृषकों की सुधरती स्थिति को सराहा

रांची, हजारीबाग और रामगढ़ जिले का भ्रमण किया

टीम ने मोती पालन की भी ली जानकारी

तमिलनाडु में हुआ फिशरी समर मीट

झारखंड में ब्रूड बैंक व मॉडल हैचरी की स्थापना में सहयोग करेगा केंद्र

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

मदुरई (तमिलनाडु) में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के सफल क्रियान्वयन तथा उसकी उपलब्धियों पर चर्चा के लिए फिशरी समर मीट का आयोजन ...

... शामिल अबु बक्कर सिद्दीख.

...सानों को किया ...रा सम्मानित

...

World Bank, fisheries dept inspect cage culture

Vishvendu Jaipuriar | TNN

Hazaribag: A joint team of senior officials of World Bank, the French Development Agency, NCDC (National Co-operative Development Corporation) and Jharkhand State Fisheries Department inspected the cage culture activities being conducted at Bundu located at Telaiya reservoir under Barhi sub-division of Hazaribag district on Saturday. The team also interacted with farmers and provided positive assurance on demand for seed and feed production unit.

The team, led by Julian Million, senior fisheries industry standard specialist, World Bank, comprises of Orphie Sillard and Nidhi ... ment Board (NFDB).

Officials inspect cage culture activities on Sunday

The objective of the visit was to evaluate the progress of Pradhan Mantri Matsya Kisan Samridhi Yojana (PMMKSY) and assess the economic condition of fish farmers. This activity has been identified under the Pradhan Mantri Matsya Sampada Yojana (PMMSY) and District Mineral Foundation Trust (DMFT) sche...

...दी की तरह चमकते मोती के उत्पादन की बनेगी पहचान

तीन तरह के होते हैं मोती

टैंक, तालाब, डैम में उत्पादन

विश्व बैंक और एएफडी की टीम ने किया झारखंड का दौरा

मत्स्य पालन में अग्रणी बन रहा जिला

टीम ने किसानों से किया संवाद, बीज व फीड उत्पादन इकाई पर दिया सकारात्मक आश्वासन

पीएमएमएसवाई की चतुर्थ वर्षगांठ पर मदुरै में आयोजित फिशरीज समर मीट में शामिल हुए विभागीय सचिव, निदेशक व नोडल अधिकारी

...ड के मत्स्य कृषकों की आर्थिक समृद्धि बढ़ाने की सराहनीय पहल

झलकियाँ

पी.एम.एम.एस.वाई. की गतिविधियाँ